सूर्योदय 06:14 AM सूर्यास्त 05:26 PM
अधिकतम 33 Degree न्यूनतम 23 Degree
सोना 81, 075 Rs.
चांदी 91, 500 Rs.

www.swatantrabaat.com

हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र बात

लखनऊ एवं कानपुर से प्रकाशित

डाक पंजीयन संख्या LW/NP-142/2022-2024

R.N.I. No. UPHIN/2010/36179 लखनऊ संस्करण

जन जन की आवाज स्वतंत्र बात

खबरों एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें:-
मो0 7007147353
Swatantrabaat@gmail.com

वर्ष. 15 अंक. 324 लखनऊ, मंगलवार, 5 नवम्बर 2024 Swatantrabaat@gmail.com पृष्ठ. 8 मूल्य 2:00 रुपये

पृष्ठ 4 देश की एकता पर लपकते और शिखा से ...
पृष्ठ 5 महिला का शव पशुबाड़े में मिलने पर .....
पृष्ठ 8 रालोद ने किया चुनाव की तिथि बढ़ाने .....

दुनिया के साथ आगे बढ़ना चाहता है भारत : जयशंकर

जयशंकर ने ब्रिसबेन में किया नए भारतीय वाणिज्य दूतावास का उद्घाटन

ब्रिसबेन। ऑस्ट्रेलिया के पांच दिवसीय दौरे पर पहुंचे विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने रविवार को कहा कि भारत विकास के पथ पर अग्रसर है और दुनिया के साथ आगे बढ़ना चाहता है। जयशंकर ने इस बात पर जोर दिया कि दुनिया के देशों में भारत के साथ काम करने की इच्छा और भावना है। जयशंकर ने यहां भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक संबंधों का जिक्र भी किया। उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। विदेश मंत्री ने ब्रिसबेन में क्वींसलैंड की राज्यपाल जीनेट यंग के साथ मुलाकात के बाद कहा क्वींसलैंड राज्य के साथ आर्थिक, व्यापार और निवेश सहयोग को मजबूत करने के अवसरों और तरीकों पर चर्चा की।

विदेश मंत्री ने ब्रिसबेन के रोमा स्ट्रीट पार्कलैंड्स में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित की और साथ ही ब्रिसबेन में स्थापित भारत के नए महावाणिज्य दूतावास का उद्घाटन भी किया, जो कि ऑस्ट्रेलिया में भारत का चौथा महावाणिज्य दूतावास है। उन्होंने उद्घाटन की कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर साझा करते हुए लिखा ब्रिसबेन में भारत के नए महावाणिज्य दूतावास का औपचारिक रूप से उद्घाटन करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। यह क्वींसलैंड राज्य के साथ भारत

के संबंधों को मजबूत करने, व्यापार एवं शैक्षिक संबंधों को बढ़ावा देने और प्रवासी समुदाय की सेवा करने में योगदान देगा। विदेश मंत्रालय के अनुसार अपने इस दौरे के दौरान जयशंकर कैनबरा में ऑस्ट्रेलियाई विदेश मंत्री पेनी वोंग के साथ 15वें विदेश मंत्रियों की रूपरेखा वार्ता (एफएमएफडी) की सह-अध्यक्षता भी करेंगे। इसके साथ ही वह ऑस्ट्रेलियाई संसद भवन में आयोजित होने वाले दूसरे रायसीना डाउन अंडर के उद्घाटन सत्र में मुख्य संबोधन देंगे। उनका ऑस्ट्रेलियाई नेतृत्व, सांसदों, व्यापारिक समुदाय, मीडिया और प्रबुद्ध वर्ग के साथ भी बातचीत करने का कार्यक्रम है। जयशंकर 8 नवंबर को ऑस्ट्रेलिया से सिंगापुर की यात्रा के लिए निकल जाएंगे, जहां वह आसियान-भारत थिंक टैंक नेटवर्क के 8वें गोलमेज सम्मेलन को संबोधित करेंगे।

(रिपोर्ट. शाश्वत तिवारी)

संक्षिप्त समाचार

आप में शामिल हुए भाजपा के वरिष्ठ नेता बीबी त्यागी

(एजेंसी) नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव नजदीक है और इस बीच दिल्ली भाजपा को झटका लगा है। भाजपा के वरिष्ठ नेता बीबी त्यागी ने सोमवार को भाजपा का साथ छोड़ आम आदमी पार्टी का दामन थाम लिया है। पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया व विधायक दुर्गेश पाठक ने पार्टी कार्यालय में बीबी त्यागी को पार्टी में शामिल कराया। आम आदमी पार्टी ज्वाइन करने के बाद बीबी त्यागी ने आईएएनएस से बातचीत की। उन्होंने बताया, ष्मैंने भाजपा छोड़कर आम आदमी पार्टी ज्वाइन की है। यह सिर्फचुनाव को देखते हुए नहीं है। मुझे पार्टी जो काम देगी, वह मैं करूंगा। क्योंकि मैं जमीनी स्तर पर काम करने वाला आदमी हूं। मुझे जनता के बीच में जाना अच्छा लगता है।

केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान चतरा में 9 नवंबर को चुनाव प्रचार करेंगे

(एजेंसी) रांची। झारखंड में चतरा के सांसद कालीचरण सिंह के चतरा स्थित आवास पर एनडीए चतरा की कोर ग्रुप की एक महत्वपूर्ण बैठक आज आयोजित हुई। इस बैठक की अध्यक्षता लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के प्रदेश अध्यक्ष बीरेन्द्र प्रधान ने की। बैठक में एनडीए प्रत्याशी जनार्दन पासवान को विजयी बनाने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर सांसद अरुण भारती, सांसद राजेश वर्मा, और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के प्रदेश उपाध्यक्ष आदित्य विजय प्रधान सहित पार्टी के कई प्रमुख नेता उपस्थित रहे। सभी नेताओं ने जनार्दन पासवान के पक्ष में ठोस रणनीति बनाई और जोरदार प्रचार अभियान चलाने का निर्णय लिया। बैठक में यह भी तय हुआ कि आगामी दिनों में पार्टी के कई प्रमुख कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

करंट लगने से 4 लोगों की मौत, सीएम चंद्रबाबू नायडू ने किया मुआवजे का ऐलान

(एजेंसी) हैदराबाद। आंध्र प्रदेश के तदिर्प में सोमवार को एक गंभीर हादसा हुआ। यहां एक समाज सुधारक की प्रतिमा के पास फ्लेक्सी बैनर बांधते समय चार लोगों को करंट लग गया। इस घटना में सभी चारों लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। इसके अलावा, कई अन्य लोग भी घायल हुए हैं, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह हादसा सोमवार की सुबह पश्चिम गोदावरी जिले के तदिपर्रू गांव में हुआ। बताया जा रहा है कि ये चार लोग समाज सुधारक सरदार सर्वराय पापन्ना गौड़ की प्रतिमा के पास बैनर लगा रहे थे। अचानक करंट उतरने से कई लोग इसकी चपेट में आ गए। हादसे के तुरंत बाद सभी घायलों को नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में उन्हें प्राथमिक उपचार दिया जा रहा है।

यात्रियों से भरी बस खाई मे गिरी, 36 लोगो की दर्दनाक मौत

अल्मोड़ा में हुए भीषण बस दुर्घटना पर सीएम धामी ने जताया दुख, किया मुआवजे का ऐलान

- 26 यात्री घायल, गम्भीर रूप से घायल 6 यात्रियों को एयरलिफ्ट कर ऋषिकेश के एम्स में कराया गया भर्ती
- दुर्घटना की सूचना मिलते ही सीएम ने दिखाई तत्परता, दिल्ली दौरा रद्द कर पहुंचे रामनगर, अस्पताल में घायलों से मिले

(एजेंसी) देहरादून। उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के सल्ट तहसील में सोमवार को हुई एक भीषण बस दुर्घटना में 36 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई और 26 अन्य लोग घायल हो गए। यह घटना मार्चुला के पास कूपी में हुई, जिससे पूरे प्रदेश में शोक की लहर दौड़ गई। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह व उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सहित देश प्रदेश की हस्तियों ने इस दुखद घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया। उन्होंने मृतकों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की और शोकाकुल परिवारों को इस कठिन समय में सहनशक्ति देने की ईश्वर से कामना की। मुख्यमंत्री ने तुरंत ही मुआवजे की घोषणा करते हुए कहा कि मृतक के परिजनों को 4 लाख रुपये और घायलों को 1 लाख रुपये का मुआवजा दिया जाएगा। दुर्घटना की सूचना मिलते ही प्रशासन, पुलिस, एसडीआरएफ और स्वास्थ्य विभाग की टीमें तुरंत घटनास्थल पर पहुंच गईं। उन्होंने बचाव और राहत कार्य में तेजी से जुटने का प्रयास किया। मुख्यमंत्री धामी ने इस घटना की जानकारी मिलने के बाद अधिकारियों को तत्काल राहत एवं बचाव कार्य करने के निर्देश दिए और स्वयं रामनगर पहुंचकर घटनास्थल का दौरा किया। वहां उन्होंने घायलों की स्थिति के बारे में जानकारी ली और मृतकों के परिजनों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त की। सीएम ने रामनगर चिकित्सालय में भर्ती घायलों की कुशलक्षेम जानने के बाद सीएमओ और अन्य अधिकारियों को बेहतर उपचार सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा, ष्हर घायल व्यक्ति को सर्वोत्तम चिकित्सा उपलब्ध कराई जानी चाहिए। यदि उन्हें उच्च चिकित्सा केंद्र भेजने की आवश्यकता हो तो एयर एंबुलेंस का उपयोग किया जाए। दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल 6 व्यक्तियों को एयर एंबुलेंस के माध्यम से एम्स ऋषिकेश भेजा गया, जबकि एक अन्य घायल को हल्द्वानी स्थित एसटीएच में भेजा गया। इसके अलावा 5 अन्य घायलों को उनकी परिवार की मांग पर

उत्तराखंड सड़क हादसे पर योगी ने जताया दुख, कहा, सड़क हादसे में हुई जनहानि अत्यंत दुःखद

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तराखंड के अल्मोड़ा में हुए सड़क हादसे में 28 लोगों की मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि उत्तराखंड के अल्मोड़ा में एक दुर्भाग्यपूर्ण सड़क हादसे में हुई जनहानि अत्यंत दुःखद है। मेरी संवेदनाएं मृतकों के शोक संतप्त परिजनों के साथ हैं। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति और घायलों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने की कृपा करें। आप को बता दें कि उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के सल्ट में एक भीषण सड़क दुर्घटना में 28 लोगों की मौत हो गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार आज सुबह गढ़वाल मोटर आनर्स की एक बस पौड़ी गढ़वाल के धूमाकोट से रामनगर आ रही थी।

कैबिनेट बैठक में 27 प्रस्तावों को मिली मंजूरी

अब 5 के बजाए 3 साल में हो सकेगा शिक्षकों का तबादला

(संवाददाता)

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में आज (सोमवार) लोकभवन में कैबिनेट की बैठक हुई। सीएम योगी ने यह बैठक लंबे समय के बाद बुलाई थी। इस बैठक में मध्य नहर योजना के डार्क जोन को कवर करने का प्रस्ताव, ललितपुर में होरेड बांध के प्रस्ताव, केन बेतवा लिंक परियोजना समेत 27 प्रस्तावों को मंजूरी मिली है। कैबिनेट बैठक में सहायता प्राप्त डिग्री कॉलेज के शिक्षकों के स्थानांतरण को लेकर निर्णय लिया गया। शिक्षक अब पांच वर्ष की न्यूनतम सेवा की जगह सिर्फ तीन साल बाद ही स्थानांतरण करवा सकेंगे। मध्य गंगा नहर परियोजना के द्वितीय चरण पुनरीक्षण प्रस्ताव को मंजूरी संभल अमरोहा मुरादाबाद

के 1850 ग्राम लाभान्वित होंगे, ललितपुर में भौरट बांध परियोजना के द्वितीय पुनरीक्षित प्रस्ताव को मंजूरी, केन बेतवा लिंक परियोजना हेतु प्रस्ताव को स्वीकृति, बुंदेलखंड के सूखाग्रस्त क्षेत्र को लाभ प्राप्त होगा, प्रदेश में पशु चिकित्सकों की कमी को पूरी करने के लिए पशुपालन पाठ्यक्रम हेतु डिप्लोमा, सर्टिफिक्रेट कोर्स हेतु नीति तैयार करने के प्रस्ताव को मंजूरी। उत्तर प्रदेश शीरा नीति 2024-25 के प्रस्ताव को मंजूरी, 1 नवंबर 2024 से 31 अक्टूबर 2025 के शीरा वर्ष हेतु शीरा रिजर्वेशन को मंजूरी, 19: शीरा रिजर्वेशन स्वीकृति, उत्तरप्रदेश उच्चतर शिक्षा विभाग हेतु नियमावली उत्तर प्रदेश सहायता प्राप्त महाविद्यालय अध्यापक स्थानांतरण नियमावली 2024 को मंजूरी, महाविद्यालय में न्यूनतम तैनाती के 5 वर्ष को घटाकर 3 वर्ष किया गया। उत्तर प्रदेश निजी विश्वविद्यालय अधिनियम 2019 में संशोधन को मंजूरी, अन्य प्रदेशों के शिक्षण संस्थाओं को प्रदेश में स्थापित होने का अवसर लखनऊ में अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा केंद्रीय विश्वविद्यालय के लखनऊ परिसर स्थापना हेतु तहसील सरोजिनी नगर में चकरौली परगना बिजनौर में 2.3239 हेक्टेयर भूमि को चिन्हित कर उपलब्ध करवाने के प्रस्ताव को मंजूरी, एफडीआई नीति में संशोधन प्रस्ताव को मंजूरी उत्तर प्रदेश इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण नीति 2020 के अंतर्गत 300 करोड़ के निवेश के प्रोत्साहन प्रस्ताव को मंजूरी। सेवानिवृत्त राज्य कर्मचारियों हेतु उत्तरप्रदेश रिटायरमेंट बेनिफिट रूल्स 1961 में संशोधन प्रस्ताव को मंजूरी, कोई सरकारी कर्मचारी रिटायरमेंट के बाद यदि अपने किसी नॉमिनी, वारिस को नही छोड़ता तो उसकी ग्रेच्युटी का पैसा सरकार को समाहित होता था, किंतु अब नए नीति अंतर्गत इसको बदलाव किये जाने प्रस्ताव को मंजूरी, अब यदि कोई व्यक्ति सक्षम न्यायालय से इस प्रकार की परिस्थितियों में उत्तराधिकार प्रमाण पत्र प्रस्तुत करता है तो उसे यह पैसा दे दिया जाएगा। अंतराष्ट्रीय योग एवं आरोग्य केंद्र स्थापना हेतु प्रस्ताव को मंजूरी, बागपत तहसील के ग्राम हरियाखेवा में 1.069 हेक्टेयर भूमि पर्यटन विभाग को निशुल्क हस्तांतरण को मंजूरी, प्रदेश के हेरिटेज इमारतों को संरक्षित करने के लिए पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप द्वारा डेवलप करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

टालेंगे तो और भी बुरा हारेंगे

चुनाव की तारीख आगे बढ़ाए जाने पर अखिलेश यादव ने ली चुटकी

(संवाददाता) लखनऊ। उत्तर प्रदेश समेत पंजाब और केरल में विधानसभा उपचुनाव की तारीख में चुनाव आयोग ने बदलाव किया है। 13 नवंबर की जगह अब 20 नवंबर को चुनाव कराया जाएगा। इसको लेकर अखिलेश यादव ने भाजपा पर तंज सकते हुए कहा है कि टालेंगे तो और भी बुरा हारेंगे। सपा मुखिया ने ट्वीट करते हुए लिखा है कि पहले मिल्कीपुर का उपचुनाव टाला, अब बाकी सीटों के उपचुनाव की तारीख, भाजपा इतनी कमजोर कभी न थी। दरअसल बात ये है कि उप्र में 'महा-बेरोजगारी' की वजह से जो लोग पूरे देश में काम-रोजगार के लिए जाते हैं, वो दिवाली और छठ की छुट्टी लेकर उप्र आए हुए हैं, और उपचुनाव में भाजपा को हराने के लिए वोट डालनेवाले थे। जैसे ही भाजपा को इसकी भनक लगी, उसने उपचुनावों को आगे खिसका दिया, जिससे लोगों की छुट्टी खच्त्म हो जाए और वो बिना वोट डाले ही वापस चले जाएं। बता दें कि इन सभी विधानसभा सीटों पर 13 नवंबर को उपचुनाव होने वाला था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक चुनाव आयोग ने कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा स्नान की वजह से तारीख में बदलाव का यह फैसला लिया है। यूपी में फूलपुर, गाजियाबाद, मझवां, खैर, मीरापुर, सीसामऊ, कटेहरी, करहल और कुंदरकी विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होना है। इसमें कानपुर की सीसामऊ सीट को छोड़कर अन्य सभी सीटें विधायकों के सांसद बन जाने की वजह से खाली हुई हैं।

चुनाव आयोग ने उपचुनाव की तारीख में किया बदलाव

यूपी में 13 नवम्बर की जगह 20 नवम्बर को होगा मतदान

(संवाददाता)

लखनऊ। भारत निर्वाचन आयोग ने उ0प्र0 विधानसभा उपनिर्वाचन-2024 की 09 सीटों पर होने वाले उपनिर्वाचन की मतदान तिथि बढ़ा दी है। संशोधित तिथि के अनुसार 13 नवम्बर, 2024 (बुधवार) के स्थान पर 20 नवम्बर, 2024 (बुधवार) को अब मतदान सम्पन्न होगा। मतगणना एवं निर्वाचन प्रक्रिया पूर्ण करने की तिथि यथावत् रहेगी अर्थात् मतगणना 23 नवम्बर,

2024 एवं निर्वाचन प्रक्रिया पूर्ण करने की तिथि 25 नवम्बर, 2024 रहेगी। अपर मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री चन्द्रशेखर ने बताया कि विभिन्न राजनैतिक दलों (जिसमें भारतीय जनता पार्टी, इण्डियन नेशनल कांग्रेस, बहुजन समाज पार्टी एवं राष्ट्रीय लोक दल सम्मिलित हैं) तथा कतिपय सामाजिक संगठनों से 13 नवम्बर, 2024 को बड़े पैमाने पर सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक व्यस्तताओं के कारण बड़ी संख्या में लोगों की असुविधा एवं मतदाताओं की भागीदारी कम होने संबंधी प्राप्त प्रत्यावेदनों में किये गये अनुरोध के क्रम में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा उप निर्वाचन हेतु मतदान तिथि में संशोधन किया गया है। भारत निर्वाचन आयोग के जारी कार्यक्रम के अनुसार 16-मीरापुर (जनपद-मुजफ्फरनगर), 29-कुन्दरकी (जनपद-मुरादाबाद), 56-गाजियाबाद (जनपद-गाजियाबाद), 71-खैर (अ0जा0) (जनपद अलीगढ़), 110-करहल (जनपद-मैनपुरी), 213-सीसामऊ (जनपद-कानपुर नगर), 256-फूलपुर (जनपद-प्रयागराज), 277-कटेहरी (जनपद-अम्बेडकर नगर) एवं 397-मझवां (जनपद-मिर्जापुर) विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों में अब 20 नवम्बर, 2024 को उप निर्वाचन कराया जायेगा।

जम्मू-कश्मीर विधानसभा में हंगामा

पीडीपी ने अनुच्छेद 370 को लेकर रखा प्रस्ताव

(एजेंसी)

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में सोमवार को पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) के विधायक वहीद-उर-रहमान पारा की ओर से संविधान के अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के खिलाफ प्रस्ताव पारित करने की मांग किये जाने के बाद जमकर हंगामा हुआ। सदन की कार्यवाही के पहले दिन विधानसभा अध्यक्ष के चुनाव के बाद सदन में बोलते हुए पारा ने जम्मू-कश्मीर से संबंधित अनुच्छेद 370 को बहाल करने की मांग करते हुए प्रस्ताव पारित करने का अनुरोध किया। उन्होंने पीडीपी का प्रस्ताव अध्यक्ष को सौंपते हुए कहा, मैं विधानसभा से अनुच्छेद

370 की बहाली के लिए प्रस्ताव पारित करने का अनुरोध करता हूं। इसके बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक सदन में खड़े हो गए और अध्यक्ष से वहीद के शब्दों को सदन की कार्यवाही से हटाने का आग्रह किया। हालांकि अध्यक्ष अब्दुल रहीम राथर ने भाजपा नेताओं को सलाह दी कि वे इसे उन पर छोड़ दें। उन्होंने कहा, आप अध्यक्ष को शर्तें नहीं बता सकते। इसके बाद भाजपा विधायक हंगामा करने लगे। विधानसभा अध्यक्ष ने हालांकि सदस्यों को शांत कराने की कोशिश की, लेकिन विधायक हंगामा करते रहे। इस मुद्दे पर बोलते हुए मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा, उन्हें पता था कि कुछ सदस्य प्रस्ताव पेश करेंगे, लेकिन उन्हें उम्मीद नहीं थी कि सत्र के पहले दिन ऐसा होगा। हंगामा देख विधानसभा अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही 10 मिनट के लिए स्थगित कर दी।

रजकीय इंटर कालेज में अल्युमिनाई मीट पूर्व छात्रों का लगा जमघट, परदेसी हो चुके दर्जनों छात्र हुए जूम से कनेक्ट

किसी ने किया गुप्त दान, तो तमाम पूर्व छात्रों ने लिया योगदान का संकल्प

संवाददाता

सुल्तानपुर। राजकीय इंटर कॉलेज के परिसर में पुरातन छात्र समारोह का आयोजन शनिवार को दिन में 11 बजे से किया गया। समारोह का शुभारंभ प्राचार्य डॉ मनोज कुमार तिवारी एव डॉक्टर सी के सिंह, सदर विधायक राज प्रसाद उपाध्याय, पुलिस अधीक्षक सोमन वर्मा , भाजपा नेता डॉ डी एस मिश्र के द्वारा दीप प्रजनन कर किया गया। विद्यालय के बच्चों द्वारा सरस्वती वंदना एवं विद्यालय गीत प्रस्तुत किया गया। अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रधानाचार्य डॉ मनोज कुमार तिवारी ने कहा कि सुल्तानपुर राजकीय इंटर कॉलेज के छात्र देश ही नहीं विदेश में भी इस विद्यालय का नाम रोशन किए हुए हैं।आज इस कार्यक्रम में सैकड़ो छात्रों की उपस्थिति से बहुत प्रसन्नता हो रही है। आज के इस समारोह में अमेरिका,कुवैत, दक्षिण भारत, पंजाब, दिल्ली में रह रहे छात्र आए हैं,जिनके हम हमेशा आभारी रहेंगे। जीवन को सही रास्ता देने की प्रेरणा बने पूर्व छात्र जो हैं, उनकी उपलब्धियां गौरव गाथा लिख रही है। पूरे विश्व में हमारे विद्यालय की साख है। हमारे बीच में बैठे सदर विधायक ने इतना जल्दी कार्य कराया, जिसकी जितनी तारीफ की जाए वह कम है।विद्यालय परिसर में जो जनरेटर का सेट लगा हुआ है,वह आपके सहयोग से लगा है।आज हमारे विद्यालय में 1900 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। मुख्य अतिथि व विद्यालय के छात्र सुल्तानपुर सदर विधायक राज प्रसाद

उपाध्याय ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि यह जो विशाल कार्यक्रम हो रहा है, यह मिलन का संयोग आज ही था। प्राचार्य का सहयोग एक आंदोलन है, मैं तो गांव से आया था। 1973 में तब और आज में बहुत अंतर है। तब मैं 5 घंटे में अखंड नगर से सुल्तानपुर आता था। आज हमारे घर के बगल से एक्सप्रेसवे और डबल लेन की सड़क हैं, यह विकास जो हुआ है उसमें हमारी सरकार का विशेष योगदान है। पुरातन छात्र संवाद विद्यालय विकास में पुरातन छात्रों की भूमिका पर चर्चा हुई। कई छात्रों ने अपने-अपने विचार रखे।विजय उपाध्याय ने कहा कि एक ट्रस्ट बनाकर उसी के माध्यम से कलेक्शन हो और जो मदद लोग करना चाहते हैं इस ट्रस्ट में करें। उससे विद्यालय का विकास हो, कई छात्रों ने तो यहां तक कहा कि फंड की कमी नहीं आने पाएगी। इसके उपरांत समूह फोटो हुई,सभी छात्रों ने एक दूसरे के साथ मिलकर फोटो ग्राफी करवाई। इसके पश्चात आए हुए सभी छात्रों को साल ओढ़कर एवं इसमें चिन्ह देते हुए प्राचार्य के संयोजन में सबका स्वागत किया गया। गजेटियर के अनुसार 1862 में इस विद्यालय की स्थापना हुई। गोमती के दक्षिणी किनारे पर स्थित जीआईसी 163 साल का सफर तय कर चुका है। तब से गोमती का कितना पानी बह गया, लेकिन आज भी वही तेहसविता और समर्पण है,वही अंदाज, वही तेवर,कितनी पीढ़ियां गुजर गई। सबका गवाह और फिर सिर्फगवाह क्यों उसने तो अनपढ़ पीढ़ियों को तराशा गढ़ा, शिक्षित,सीसंस्कृत किया। मुख्य अतिथि एवम संयोजक प्रधानाचार्य के कार्यक्रमों द्वारा सदर विधायक द्वारा दिए गए जनरेटर सेट का शुभारंभ भी किया गया। कार्यक्रम में आए हुए वरिष्ठ शिक्षक सिफ्ते हसन राम शब्द पांडे जामवंत सिंह, बसंत पाठक सहित दर्जनों शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। प्रमुख रूप से डॉक्टर राजीव श्रीवास्तव, डॉ के सी त्रिपाठी, डॉ वी के सिंह,विजय उपाध्याय, निरंजन चौरसिया, ए डी जे आनंद पांडेय, सबसे सीनियर छात्र रजन सेठ, जितेंद्र श्रीवास्तव, डा0अवधेश शुक्ला पत्रकार,के0के0 तिवारी,डॉ आर के मिश्र, अशोक तिवारी, कुमार विनीत आई ए एस, डॉक्टर सलिल श्रीवास्तवडॉक्टर आदित्य यादव, संजय गुप्ता, राज खन्ना, कमल श्रीवास्तव, डॉक्टर सुधाकर सिंह, डॉक्टर आदित्य दुबे, तेज बल सिंह, सरदार महेंद्र पाल सिंह0एडवोकेट,डॉ संदेश,डॉ ए पी अरोड़ा, डॉ मनोज सिंह , संदीप सिंह ,मनोज तिवारी, संतोष पाण्डेय, विवेक सिंह, अशोक पाण्डेय सहित सैकड़ो लोगों की उपस्थिति रही। यह अनूठा अवसर था। सुल्तानपुर के सबसे पुराने कॉलेज जी आई सी के पुरातन छात्र आज फिर से उस कैम्पस में थे , जहां की शिक्षा और संस्कारों ने उन्हें जीवन की राह दी। कुछ बनने, कुछ करने, आगे बढ़ने और परिवार के साथ समाज के लिए भी कुछ करने की सीख दी। आयोजन इसलिए और खास रहा कि कम से कम तीन पीढ़ियां इसमें जुटीं।

श्रृंगार भोजनालय कांड का किया खुलासा, कानपुर का शातिर अपराधी गिरफ्तार

सुल्तानपुर। नगर कोतवाल नारद मुनि सिंह द्वारा श्रृंगार भोजनालय पयागीपुर थाना कोतवाली नगर सुलतानपुर से उक्त अपराधी को गिरफ्तार कर लिया।वादी की सूचना पर थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 0380/2024 धारा 381 भा0द0वि0 से सम्बन्धित अभियुक्त दीपक राठौर उर्फ अजय पुत्र साहब लाल राठौर निवासी म0नं0 52 खाड़ेपुर नौबस्ता चौकी अर्रा थाना हनुमंत बिहार जनपद कानपुर नगर उम्र करीब 20 वर्ष मकान जीजा अवधेश राठौर पुत्र कन्हैया लाल राठौर हाल पता ससुराल फूलचन्द्र (ससुर) पुत्र स्व0 लल्लन प्रसाद ग्राम पलिया हसनपुर थाना धम्मौर जनपद सुलतानपुर को दिनाँक 02.11.2024 को समय करीब 12.30 बजे गिरफ्तार किया गया है । अभियुक्त के पास से चोरी किया हुआ सामान में से पुरूष चौन की तौल 12.590 ग्राम व महिला चौन की तौल 12.080 ग्राम (पीली धातु) बरामद हुआ जिसके आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा 411 भा0द0वि0 की बढ़ोत्तरी की गयी । अभियुक्त को मा0न्यायालय के समक्ष पेश कर जिला कारागार में निरूद्ध कराया गया ।

नगर के सीताकुंड स्थित चित्रगुप्त मंदिर पर हुए विभिन्न कार्यक्रम

संवाददाता

सुलतानपुर। रविवार को यमद्वितीयाध्कलम पूजन के शुभ अवसर पर सीताकुंड घाट स्थित आदि गंगा माँ गोमती नदी के पावन तट पर स्थित श्री चित्रगुप्त धाम मंदिर में कायस्थ समाज द्वारा कलम दवात पूजन के साथ श्री चित्रगुप्त भगवान की जयंती धूमधाम से मनाई गई।प्रत्येक वर्ष दीपावली के बाद यम द्वितीया के दिन श्री चित्रगुप्त भगवान जी की पूजा की जाती है। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी मंदिर के संस्थापक बाबा श्री गोपालदास जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई।कार्यक्रम में श्री चित्रगुप्त भगवान की कथा,पूजा अर्चना के साथ चित्रांश बंधुओं द्वारा सामूहिक रूप से हवन किया गया।जिसमें कायस्थ बंधु सपत्नीक व अपने परिवार के साथ शामिल हुए।श्री चित्रगुप्त भगवान की पूजा के मुख्य यजमान के रूप में श्री जतिन सिन्हा और उनकी पत्नी अंकिता सिन्हा ने कथा,पूजा के साथ हवन किया। कायस्थ बंधुओं द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम सर्व धर्म समभाव की एक मिशाल पेश करता है। हवन पूजन और चित्रगुप्त भगवान की महाआरती के बाद कायस्थ समाज के बच्चों द्वारा राजवीर श्रीवास्तव के संचालन में देवांशी श्रीवास्तव द्वारा गणेश वंदना,जिज्ञासा श्रीवास्तव,भूमि श्रीवास्तव,इशिका श्रीवास्तव,अवनी श्रीवास्तव,पावनी श्रीवास्तव द्वारा गणेश अथर्वशीर्ष की प्रस्तुति की गई और इसके साथ अन्य बच्चों ने भी रंगा रंग कार्यक्रम की प्रस्तुति की। कलम पूजन व श्री चित्रगुप्त की जयंती के कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष श्री प्रवीण कुमार अग्रवाल ,गोमती मित्र मंडल अध्यक्ष अधिवक्ता श्री रुद्र प्रताप सिंह ष्मदनष् , त्रिमूर्ति मंदिर के चंद्र प्रकाश अग्रवाल मनोज अग्रवाल राजेश भालोटिया अंकुरण फाउंडेशन के अभिषेक सिंह , आदित्य अग्रहरि ,वरिष्ठ समाजसेवी करतार केशव यादव ,वरिष्ठ समाजसेवी सरदार बलदेव सिंह ,सभासद रमेश सिंह टिन्नू ,सभासद अरुण तिवारी, भगवानपुर ग्राम प्रधान अनंतराम चौरस आदि मौजूद रहे।

आवास पूर्ण न कराने पर तीन लाभार्थियों पर दर्ज कराया केस

संवाददाता

अंबेडकरनगर। जनपद के विकासखंड बसखारी में योजना के तहत रकम लेने के बाद भी आवास का निर्माण न कराना तीन लाभार्थियों को भारी पड़ गया। खंड विकास अधिकारी के निर्देश पर ग्राम पंचायत सचिव ने तीनों आरोपियों के खिलाफ सरकारी धन का दुरुपयोग करने के आरोप में बसखारी थाने में केस दर्ज करा दिया है।मालूम हो कि जिले में बीते छह माह से आवास लाभार्थियों का लगातार सत्यापन किया जा रहा है। जांच में विकासखंड बसखारी में लगभग दो दर्जन से अधिक लाभार्थियों का आवास अपूर्ण पाया गया। इस पर ग्राम पंचायत सचिवों ने ऐसे लाभार्थियों को आवास जल्द पूर्ण करने के लिए नोटिस देकर चेतावनी दी। नोटिस मिलने पर कुछ लाभार्थियों ने आवास का कार्य शुरू कर दिया, लेकिन अभी भी कई लाभार्थी ऐसे हैं जिन्होंने नोटिस के बाद भी निर्माण नहीं शुरू कराया। जबकि लाभार्थियों को दूसरी किस्त भी जारी हो चुकी है।इस बीच सचिव मिथिलेश यादव ने अनीता निवासी खेमपट्टी बजदहिया पाईपुर, भीम सिंह व राजेश सिंह निवासी गन्नीपुर मोतिगरपुर के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कराया है। इनमें से एक मुख्यमंत्री आवास योजना ग्रामीण जबकि दो लाभार्थी प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना से जुड़े हैं। उधर खबर है कि पंचायत सचिव ने पांच लाभार्थियों के खिलाफ प्रार्थना पत्र दिया लेकिन खंड विकास कार्यालय ने महज तीन लाभार्थियों के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कराया। प्रभारी निरीक्षक संत कुमार सिंह ने बताया कि केस दर्ज कर जांच पड़ताल की जा रही है। बीडीओ दिनेश राम ने बताया कि सत्यापन के बाद मुकदमा पंजीकृत कराया गया है। नोटिस देने के बाद भी आवास पूर्ण न होने की दशा में अन्य लाभार्थियों के खिलाफ भी मुकदमा पंजीकृत करवाया जाएगा।

यातायात माह नवम्बर -2024 का उद्घाटन समारोह, सैकड़ों प्रचार वाहन को एसपी ने दिखाई हरि झंडी

संवाददाता

सुल्तानपुर। शहर के बस स्टेशन स्थित ट्रैफिक बूथ के निकट यातायात माह का हुआ शुभारंभ हुआ। यातायात माह नवम्बर के उद्घाटन समारोह के अंत में जागरूकता रैली को एसपी सोमेन बर्मा ने हरि झंडी दिखाई। सैकड़ों वाहन ट्रैफिक बूथ बसअड्डा पर पहुंचे थे। पुलिस अधीक्षक सोमेन वर्मा ने आम जनमानस से की अपील । उन्होंने कहा कि टू व्हीलर चलाने वाले हेलमेट का प्रयोग जरूर करें ।कार चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग जरूर करें ।स्पीड नियंत्रित रखें।वहीं बढ़ते सड़क हादसे पर एसपी सोमेन वर्मा ने चिंता जताई और कहा कि सड़क हादसे की मृत्यु दर 50: से कम लाना है ।और अगर हमको जरूरत पड़ी तो डॉक्टर और वकील और सामाजिक संगठन को साथ लेकर चलेंगे। इस मौके पर जागरूकता पखवारा माह में अधिक संख्या में

लोग मौजूद रहे । एआरएम विनोद कुमार शुक्ला ने कहा कि यदि चलती रोडवेज में किसी ड्राइवर को नींद आ रही तो दुर्घटना को रोकने के लिए चार बसों में स्लीप एलर्ट लगाया गया है। उन्होंने कहा कि चलती बसों में ड्राइवर द्वारा मोबाइल पर बात करने पर वीडियो, क्लिप मिलती है तो ड्राइवर पर दंडात्मक कार्रवाई होती है। ऐसी सूचना देने वाले को विभाग द्वारा पुरस्कृत किया जाता है। मोबाइल पर बात करने वाले बस ड्राइवर यदि दो बार यातायात नियमों को तोड़ते हैं तो तीसरी गलती पर बर्खास्तगी की कार्रवाई होती है।संचालन कर रहे वरिष्ठ पत्रकार अनिल द्विवेदी ने कई दुर्घटनाओं का जिक्र कर ट्रैफिक नियमों का पालन करने की अपील किया। साथ ही कई संघठनों से जुड़कर उन्होंने यातायात जागरूकता अभियान छेड़ने की बात कही।वरिष्ठ पत्रकार मनोराम पांडेय ने एक किस्से का जिक्र कर कहा कि पूर्व टीएसआई अनूप सिंह के साथ एक नाबालिग बच्चे को बाइक चलाते हुए कहा कि वह एक दिवान का बच्चा था, फोन करके बच्चे के पिता जी को बुलाकर समझाया गया।इसी तरह प्रत्येक पिता को जागरूक करने की जरूरत है।इस मौके पर यातायात क्षेत्राधिकारी रमेश ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि जनपद में यातायात नियमों का पालन करें।क्योंकि सर्वाधिक दुर्घटनाओं के कारण ही आज मौतें हो रही हैं।पीड़ित परिवार को इससे उबरना बेहद मुश्किल होता है।ट्रैफिक सब इंस्पेक्टर राम निरंजन ने अपील किया कि कोई भी अभिभावक अपने बच्चे को तब तक बाइक चलाने की अनुमति न दें जब तक वह बालिग न हो जाये। उन्होंने कहा कि सड़क हादसों में कमी लाने के लिए जनजागरण की जरूरत है। एक छोटी सी गलती हादसों में तब्दील हो जाती है इसलिए सावधानी बेहद जरूरी है। 'कानफोड़ू साइलेंसर वाले भी यातायात पुलिस की निगाहों में- एक सवाल के जवाब में एसपी सुल्तानपुर ने कहा कि यातायात माह नवंबर मनाया जा रहा है।

अपने साप्ताहिक कार्यक्रम के तहत गोमती मित्रों की साफ सफाई, कूड़ा, कचरा फेंककर नदियों के अस्तित्व को नष्ट न करें, गोमती मित्रों ने आम जनमानस से की अपील

संवाददाता

सुल्तानपुर। गोमती मित्रों के लिए राविवार का साप्ताहिक श्रमदान इस बार बहुत ज्यादा थकाऊ साबित हुआ। कारण दिवाली में पूजन के बाद लोगों नें पिछले वर्ष की प्रतिमा व अवशेष पूजन सामग्री को मां गोमती के तट पर छोड़ दिया था।स्थिति इतनी भयावह थी कि नदी का पूरा तट तो भरा ही हुआ था, नदी के अंदर से गोमती मित्रों ने कम से कम दो कुंतल कचरा निकाला। यह स्थिति ना नदियों की सेहत के लिए ठीक है ना ही नदियों में स्नान करने वाले श्रद्धालुओं के लिए ही उचित है।लेकिन अफसोस गोमती मित्र मंडल की लगातार अपील के बाद भी लोग जागरुक नहीं हो पा रहे हैं।प्रदेश अध्यक्ष मदन सिंह ने कहा कि अगर स्थिति यही रही तो गोमती नदी के

अस्तित्व को बचाना मुश्किल हो जाएगा। उपस्थित गोमती मित्र भी स्थिति को देखकर बहुत पीड़ा में थे और भारी मन से श्रमदान करने के बाद सभी ने शाम को होने वाली आरती की तैयारी की।सभी बड़े ही बोझिल मन से धाम से बाहर निकल गये।श्रमदान में मुख्य रूप से प्रदेश अध्यक्ष रुद्र प्रताप सिंह मदन, मीडिया प्रभारी रमेश माहेश्वरी, मुन्ना सोनी, संत कुमार प्रधान, राकेश सिंह दद्दू, महेश प्रताप,अजय प्रताप सिंह, सोनू सिंह, मुन्ना पाठक, राजेंद्र शर्मा, डॉ कुंवर दिनकर प्रताप सिंह, आलोक तिवारी, अनुज प्रताप सिंह, सुजीत कसौधन, युवा मण्डल अध्यक्ष अजय वर्मा, रामकुमार मौर्य, आयुष, अभय, लड्डू, दीपू, सिंघम, राजन आदि उपस्थित रहे।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने शनिवार को विधानसभा क्षेत्र कटेहरी के विभिन्न मतदान केंद्रों का किया भौतिक निरीक्षण

संवाददाता

अंबेडकरनगर। विधानसभा उप निर्वाचनदृ2024 के अंतर्गत 277 कटेहरी विधानसभा उपचुनाव को निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराए जाने हेतु जिला निर्वाचन अधिकारी अविनाश सिंह ने शनिवार को विधानसभा क्षेत्र कटेहरी के विभिन्न मतदान केंद्रों का भौतिक निरीक्षण किया। इस दौरान पुलिस अधीक्षक डॉ कौस्तुभ, मुख्य विकास अधिकारीध्प्रभारी अधिकारी मतदान कार्मिक आनंद कुमार शुक्ला, एसडीएम टांडा शशि शेखर, बीडीओ टांडा भी मौजूद रहे। इस दौरान उन्होंने मतदान केंद्रों का बारीकी से निरीक्षण कर चुनाव से संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। जिला निर्वाचन अधिकारी ने ग्राम अलनपुर, महेशपुर, अमीनपुर, माहवारी, ऐनवा खास आदि ग्रामों में बनाए गए मतदेय स्थलों पर स्थित सभी मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित बीएलओ व अन्य संबंधित अधिकारियों को सभी मतदान केंद्रों पर शौचालय, बिजली-पानी व साफ्दृसफाई आदि सहित निर्वाचन संबंधित समस्त आधारभूत सुविधाओं की व्यवस्था दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने कहा कि चुनाव प्रक्रिया के दौरान किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए। यदि किसी को कोई समस्या आती है तो वह समय रहते अपने नोडल अधिकारी या रिटर्निंग अधिकारी को अवगत कराए। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक डॉ कौस्तुभ ने मतदान केंद्रों का जायजा लेकर पुलिस अधिकारियों

को मुस्तैदी से ड्यूटी करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला निर्वाचन अधिकारी ने निर्वाचन की समस्त प्रक्रियाओं को सकुशल संपन्न कराए जाने के दृष्टिगत में चुनाव ड्यूटी में लगाए गए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को एक-दूसरे के साथ सहयोग की भावना से मा. निर्वाचन आयोग के निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए बेहतर तरीके से कार्य करने और निर्वाचन की समस्त प्रक्रियाओं को निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से संपन्न करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान समस्त मतदान केंद्रों पर मतदाता सूची को भी पढ़ा गया तथा मतदाताओं को मतदान हेतु प्रेरित भी किया गया।

धर्मराज के चुनावी रथ का सारथी बने अवधेश दृवेदी

संवाददाता

अंबेडकर नगर। कटेहरी विधानसभा उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी धर्मराज निषाद के चुनावी रथ का सारथी बनने को तैयार अवधेश द्विवेदी का जगह जगह जोरदार स्वागत किया गया। कटेहरी विधानसभा चुनाव में भाजपा द्वारा पूर्व प्रत्याशी अवधेश द्विवेदी की जगह धर्मराज निषाद को प्रत्याशी घोषित कर दिया गया है जिसके बाद कुछ दिनों तक अवसाद में गए पूर्व प्रत्याशी अवधेश द्विवेदी घर में रहे फिर ज्यादा तबियत बिगड़ी और लखनऊ के अस्पताल में भर्ती करवाया गया इस बीच लोगों ने अफवाह फैला दिया कि अवधेश द्विवेदी भाजपा के वर्तमान घोषित प्रत्याशी धर्मराज निषाद के खिलाफ हैं जिसका सीधा फायदा सपा को मिल रहा था और अफवाहों को खूब हवा दी जा रही थी कि आज स्वस्थ होकर लखनऊ से लौटे अवधेश द्विवेदी का जनपद की सीमा से ही लोगों ने गर्मजोशी से स्वागत किया और जगह जगह भारी संख्या में समर्थक खड़े होकर अवधेश द्विवेदी को फूल-मालाओं से लाद दिया इस दौरान अवधेश द्विवेदी ने धर्मराज निषाद के चुनावी रथ को आगे बढ़ाने और जीत दिलाने की अपील करते हुए दिखाई दिए। कटेहरी विधानसभा क्षेत्र में ब्राह्मण मतदाताओं की निर्णायक भूमिका रहती है और पिछले चुनाव में भोजन भरी थाली चुनाव चिन्ह लेकर भी मामूली वोट से हार गए थे लेकिन इस बार माहौल तैयार था जिसके बाद उन्हें टिकट ही नहीं मिला ।

जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी की अध्यक्षता में कटेहरी विधानसभा उप निर्वाचन 2024 को लेकर एफएसटी (उड़न दस्ता टीम) और एसएसटी (स्थैतिक निगरानी टीम) के साथ बैठक

संवाददाता

अंबेडकर नगर। जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी अविनाश सिंह की अध्यक्षता में पुलिस अधीक्षक डॉ कौस्तुभ की उपस्थिति में कटेहरी विधानसभा उप निर्वाचन 2024 को लेकर कलेक्ट्रेट सभागार में एफएसटी(उड़न दस्ता टीम) और एसएसटी(स्थैतिक निगरानी टीम) के साथ बैठक आयोजन किया गया। बैठक के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी ने एफएसटी और एसएसटी टीमो को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिला निर्वाचन अधिकारी ने संबंधित टीमों के अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्वाचन के दौरान किसी भी व्यक्ति द्वारा मतदाताओं को प्रलोभित कर मतदान प्रभावित करने आदि घटनाओं पर पैनी दृष्टि रखी जायेगी।उन्होंने कहा कि चेकिंग के दौरान की वीडियो रिकार्डिंग कराई

जाए। निगरानी टीम अपने क्षेत्र में लाये जाने वाली नकदी, अवैध शराब, किसी भी प्रकार की संदेहास्पद वस्तु या शस्त्रों आदि की आवागमन की कड़ी निगरानी करे। टीम द्वारा कार्यवाही के दौरान सम्बन्धित व्यक्तियों से पूरी नम्रता और शिष्टाचार का ध्यान दिया जायेगा। मतदाताओं को कोई डराए, धमकाए नहीं, इसका विशेष ध्यान रखा जाए। प्रत्याशियों के खर्च पर नजर रखें। इसके लिए एफएसटी और एसएसटी को सजग और सचेत होकर अपने-अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करें। टीम वर्क के साथ कार्य करते हुए सफलतापूर्वक निर्वाचन को सम्पन्न कराना है।उन्होंने निर्देशित किया कि वाहन जांच के दौरान शिष्टाचार प्रदर्शित किया जाय। आम जन को असुविधा न हो इसका भी ख्याल रखें। हर गतिविधि की जानकारी रखेंगे। डॉक्यूमेंटशन पर विशेष रूप से ध्यान दें। बैठक के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि जैसे-जैसे मतदान की तारीख नजदीक आ रही हैं टीमें पूर्ण रूप से सक्रिय रहे। बैठक के दौरान अपर पुलिस अधीक्षक विशाल पांडे, वरिष्ठ कोषाधिकारी बृजलाल,उप जिलाधिकारी मोहन लाल गुप्ता,सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. महेश चंद द्विवेदी, एफएस टी, एस एस टी एवं पुलिस टीम उपस्थित रहे।

भाजपा जिला कार्यालय अटल भवन में अवधेश द्विवेदी द्वारा प्रेस प्रतिनिधियों के साथ प्रेस वार्ता

संवाददाता

अंबेडकर नगर। भाजपा विधान सभा पूर्व प्रत्याशी अवधेश द्विवेदी की अस्वस्थता के कारण विपक्षी दलों द्वारा फैलाए जा रहे दुष्प्रचार की वजह से स्वस्थ हो कर मीडिया से वार्ता के लिए भाजपा जिला कार्यालय अटल भवन में आने पर कार्यकर्ताओं ने अवधेश द्विवेदी का जोर दार स्वागत किया। भाजपा जिला कार्यालय अटल भवन में आयोजित प्रेस वार्ता में विधान परिषद सदस्य भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष डाक्टर धर्मेंद्र सिंह,भाजपा जिलाध्यक्ष त्रयंबक तिवारी,पूर्व विधान सभा प्रत्याशी अवधेश द्विवेदी ने भाजपा जिला मीडिया प्रभारी बाल्मीकि उपाध्याय,भाजपा जिला उपाध्यक्ष डाक्टर रजनीश सिंह,विमलेंद्र प्रताप सिंह मोनू,विनय पाण्डेय के साथ प्रेस प्रतिनिधियों को सम्बोधित किया। प्रेस वार्ता को सम्बोधित करते हुए विधान सभा पूर्व प्रत्याशी अवधेश

द्विवेदी ने कहा कि मेरे प्रेस वार्ता करने का तात्पर्य विपक्षी दलों द्वारा मेरे प्रति चलाए जा रहे दुष्प्रचार पर विराम लगाना है। कहा कि एका यक मेरी स्वास्थ्य खराब हो गई जिस पर विपक्षी दलों की गंदी और मानसिक दिवालियापन ने मेरे प्रति नकारात्मक संदेश देना शुरू कर दिया था। कहा कि मेरी राष्ट्रवादी विचार की पार्टी भाजपा के साथ हमेशा से समर्पण रहा है।मेरी पहचान भाजपा से ही है। कहा कि भाजपा की आंधी के सामने विपक्ष के प्रत्याशी हताशा में हैं। उन्होंने जन जन से भाजपा प्रत्याशी को बड़ी जीत दिलाने का आवाहन किया। कहा कि भाजपा प्रत्याशी धर्म राज निषाद की जीत निश्चित है।

(हिन्दी दैनिक) स्वतंत्र बात

परिक्रमा मार्ग पर परिक्रमार्थियों के लिए सभी सुविधाएं रहे मौजूद - वेद गुप्ता

जिलाधिकारी व सुपरिंटेंडेंट इंजीनियर पीडब्ल्यूडी के साथ नगर विधायक ने किया परिक्रमा पथों का निरीक्षण

संवाददाता

अयोध्या। चौदहकोसी व पंचकोसी परिक्रमा मार्ग पर श्रद्धालुओं के लिए सारी सुविधाएं यथावत मौजूद रहे ताकि परिक्रमार्थियों को परिक्रमा पथ पर परिक्रमा करते समय किसी भी प्रकार की परेशानी या असुविधा ना उठानी पड़े। उक्त बातें 14 कोसी व पंचकोसी परिक्रमा मार्ग के निरीक्षण के समय नगर विधायक वेद प्रकाश गुप्ता ने जिलाधिकारी व अधीक्षण अभियंता पीडब्ल्यूडी व अन्य अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि लाखों की संख्या में पूरे भारतवर्ष से श्री अयोध्या जी की ऐतिहासिक 14 कोसी परिक्रमा व उसके उपरांत पंचकोसी परिक्रमा करने श्रद्धालु आते हैं। 14 कोसी और पंचकोसी परिक्रमा मार्ग के चौड़ीकरण का भी कार्य चल रहा है उसी के साथ हमको परिक्रमा भी करानी है। हमें यह भी ध्यान रखना है कि अयोध्या की महिमा और इसका स्वर्णिम काल विश्वविदित है, इसलिए हमें परिक्रमा करने आए श्रद्धालुओं के लिए हर प्रकार से स्वागत सत्कार में तैयार रहना है उनको चाहे प्राथमिक चिकित्सा हो चाहे पथ पर सुगम परिक्रमा करना हो, चाहे भोजना - जलपान अथवा स्नान, पूजा पाठ करना हो इन सभी बातों के लिए हमको धरातल पर उतरकर योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना होगा ताकि प्राण प्रतिष्ठा के बाद हो रही परिक्रमा सभी के लिए यादगार सिद्ध हो। उन्होंने नाका हनुमानगढ़ी से चौदहकोसी परिक्रमा मार्ग होते हुए पंचकोसी परिक्रमा मार्ग का भी भ्रमण कर निरीक्षण किया। उन्होंने कार्यदाई संस्था व जल निगम को सभी कार्यों के साथ पथ पर गिट्टी बालू डाल कर रोलर चला परिक्रमा पथ को सुगम सरल बनाने के साथ 7 नवंबर तक पूर्ण करने के लिए सख्त हिदायत दी। प्राण प्रतिष्ठा के उपरांत हो रही इस बार की परिक्रमा में ऐतिहासिक भीड़ होने की संभावना की वजह से उन्होंने पुलिस अधिकारियों को सुरक्षा व ट्रैफिक संबंधित पूर्ण व्यवस्थाएं बना लेने के लिए भी निर्देश दिया। अधिकारियों को जगह-जगह जन सुविधाओं को सृजित करने का निर्देश दिया,उन्होंने सभी तैयारियां परिक्रमा के कुछ दिन पूर्व ही पूर्ण कर लेने के लिए निर्देशित किया। इस अवसर पर नगर विधायक वेद प्रकाश गुप्ता के साथ जिलाधिकारी चंद्र विजय सिंह, एसडीएम सदर विकास दूबे, पीडब्ल्यूडी के सुपरिंटेंडेंट इंजीनियर ओम प्रकाश वर्मा,पीडब्ल्यूडी सीडी3 के एक्सियन सत्यपाल,सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

महिला हेल्पडेस्क के अथक प्रयासों से पति-पत्नी के 10 विवादित जोड़े आपसी कलह भुलाकर साथ रहने को हुए राजी

संवाददाता

उन्नाव। दीपक भूकर पुलिस अधीक्षक उन्नाव के कुशल निर्देशन में सभी थानों में स्थित महिला हेल्प डेस्क में पति-पत्नी के विवादित जोड़ों को बुलाया गया, परिवार परामर्शदाताओं एवं महिला हेल्पडेस्क की टीम द्वारा उनकी काउंसलिंग करते हुए उनके बीच उपजे विवाद को खत्म कराया गया तथा परिवार को टूटने से बचाया। तदोपरान्त महिला थाना से 7, थाना बेहटा मुजावर, थाना बिहार व थाना बांगरमऊ से 1-1 जोड़े को बिना विवाद साथ रहने के वादे के साथ विदा किया गया। उपरोक्त पुनीत कार्य में डा0 आशीष श्रीवास्तव प्रभारी परिवार परामर्श समिति एवं सलाहकारों में अबसार अली व डा0 सगीर अहमद तथा पुलिस टीम में थानाध्यक्ष महिला थाना अर्चना जी,उ0नि0 भागीरथी, महिला कांस्टेबल पूजा शर्मा, पूजा, पूनम राजपूत, सेविका का विशेष योगदान रहा।

मीरजापुर साहित्य चेतना समाज ने आयोजित की सामान्य ज्ञान व निबंध प्रतियोगिता

संवाददाता

मीरजापुर। साहित्य चेतना समाज की मीरजापुर इकाई के तत्वावधान में सामान्य ज्ञान एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन नगर के भरुहना स्थित विन्ध्यवासिनी महाविद्यालय में रविवार को किया गया। इन दोनों प्रतियोगिताओं में नगर सहित सुदूर ग्रामीण अंचल के 100 से अधिक विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।संस्था के संस्थापक अमरनाथ तिवारी अमर ने संस्था के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्ष 1985 में गाजीपुर में स्थापित यह संस्था वर्षपर्यंत सक्रिय रहकर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों एवं युवाओं के भीतर छिपी प्रतिभा को मुखरित व उजागर कर उन्हें मंच प्रदान करती है।संगठन सचिव प्रभाकर त्रिपाठी ने जानकारी दी कि इन प्रतियोगिताओं में चयनित प्रतिभागियों को आगामी दिसम्बर माह में एक समारोह आयोजित कर स्मृति-चिह्न व प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा। वरिष्ठ साहित्यकार व पत्रकार भोलानाथ कुशवाहा ने ऐसी प्रतियोगिताओं के आयोजन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इनसे विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास होता है।विन्ध्यवासिनी महाविद्यालय के प्रबंधक डॉ.नीरज त्रिपाठी ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने से विद्यार्थियों को भविष्य में होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में मदद मिलती है।उन्होंने संस्था द्वारा इस दिशा में किये जा रहे प्रयास की प्रशंसा की। प्रतियोगिता प्रभारी कु.सृष्टिराज ने बताया कि चार वर्गों में आयोजित इन प्रतियोगिताओं के कनिष्ठ वर्ग में कक्षा चार से छह,मध्यम वर्ग में कक्षा सात व आठ,ज्येष्ठ वर्ग में कक्षा नौ व दस एवं वरिष्ठ वर्ग में कक्षा ग्यारह व बारह के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। आयोजन में प्रमुख रूप से कु.पूजा यादव, कु. सृष्टि राज, सचिन श्रीवास्तव, आनन्द केशरी,आनन्द अमित, जय कुमार, मिलन कुमार, कुलभूषण पाठक, मयंक पाठक आदि उपस्थित थे।

विसर्जन के दौरान ट्रॉली में करंट उतरने से बालक की मौत, 11 झुलसे

संवाददाता

सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ थाना क्षेत्र धनगढ़िया गांव में शनिवार की रात मां लक्ष्मी प्रतिमा विसर्जन के दौरान ट्रैक्टर-ट्रॉली में हाईवोल्टेज करंट उतरने से एक बालक की मौत हो गई जबकि 11 बच्चे झुलसे गए। घायल बच्चों को शोहरतगढ़ सीएचसी ले जाया गया जहां उनका इलाज चल रहा है। क्षेत्र के धनगढ़िया गांव में शनिवार की रात गाजे बाजे के साथ मां लक्ष्मी की प्रतिमा ट्रैक्टर-ट्रॉली पर लाद कर विसर्जित करने के लिए जा रहे थे। प्रतिमा को ट्रैक्टर-ट्रॉली पर बाधा गया था। इसे बांधने के लिए एक लोहे का पाइप लगा था। लोग डीजे की धुन पर थिरक रहे थे। इसमें शामिल कई बच्चे ट्रैक्टर-ट्रॉली बैठे हुए थे। अचानक लोहे की पाइप 11 हाजर हाई वोल्टेज तार में टच हो गया। इससे ट्रैक्टर-ट्रॉली में करंट उतर गया। इसमें विष्णु (12) पुत्र बजरंगी की मौके पर मौत हो गई। जबकि रोशन (14) पुत्र उमेश चौहान, विवेक(8) पुत्र कमला प्रसाद, किशन (10) पुत्र दुर्बली, लक्ष्मी(14) पुत्री तौलेश्वर, शिवा(9) पुत्र राजकुमार, बढ़ोतरी(12) पुत्री सतीश चंद्र, अभिषेक (12) पुत्र त्रिभुवन, रवि(12) पुत्र प्रदीप, महिमा(11) और नीरज गुप्त (18) सहित 11 बच्चे हल्का फुल्का झुलस गए। सभी को शोहरतगढ़ सीएचसी लाया गया। जहां सभी का उपचार चल रहा है। वहीं घटना की सूचना मिलते ही एसडीएम चन्द्रभान सिंह व सीओ सुजीत राय गांव में पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। सीओ सुजीत राय ने बताया कि प्रतिमा विसर्जन के दौरान ट्रैक्टर-ट्रॉली में करंट उतरने से एक बच्चे की मौत हो गई। कई बच्चे झुलसे होने की सूचना है। मौके पर बिजली सप्लाई बंद करवा दी गई है। समय रहते ही बच्चे टैक्टर-ट्रॉली से कूद गए। इसमें एक ही बच्चे की मौत हुई। करंट से टैक्टर-ट्रॉली में आग लग गई थी। ग्रामीणों ने सप्लाई बंद करवा कर कड़ी मशक्कत से आग बुझाई।

जरवल कस्बा में धूमधाम से मनाया गया भाई दूज का पर्व, बहनों ने की भाई के लंबी उम्र की कामना

संवाददाता

जलवल/बहराइच। जनपद में शहर समेत आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भाई दूज का पर्व पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर बहनों ने अपने भाइयों की लंबी उम्र और उनकी रक्षा की कामना की। ग्रामीण अंचलों में अन्नकूट स्थलों पर सुबह से ही महिलाओं की भीड़ देखी गई, जहां बहनों ने गाय के गोबर से अलग-अलग आकृतियां बनाकर गोधन कूटा और अपने भाइयों के नाम पर भगवान से उनकी रक्षा का आशीर्वाद मांगा। भाई दूज के दिन भाइयों के घर पहुंचने पर बहनों ने उनका तिलक कर आरती उतारी और उनकी दीर्घायु की प्रार्थना की। इस अनोखी परंपरा में बहनों ने पहले अपने भाइयों को प्रतीकात्मक रूप से मृत्यु का शाप दिया और फिर अपनी जीभ पर कांटा चुभाकर इस शाप का प्रायश्चित किया। इसके बाद गोबर के प्रतीकात्मक गोधन को कूटते हुए अपने भाइयों की सुरक्षा की कामना की। इसके उपरांत भाइयों ने अपनी सामर्थ्य अनुसार बहनों को उपहार भेंट किए। जरवल कस्बा में भी इस मौके पर महिलाओं ने भैया दूज की पूजा विशेष उत्साह के साथ की। पूजा के दौरान दूध और गोबर से कलात्मक आकृतियां बनाई गईं और पुरानी परंपरा के अनुसार कथा का आयोजन भी हुआ। इस दौरान ग्राम की बुजुर्ग महिलाओं ने भी कथा वाचन में भाग लिया और अन्य महिलाओं ने श्रद्धापूर्वक कथा सुनी।

खेत में टूटकर गिरे तार की चपेट में आने से किसान की मौत

संवाददाता

बस्ती। खेत में टूटकर गिरे 11 हजार वोल्ट तार की चपेट में आने से एक किसान की मृत्यु हो गई है। मृत किसान के पुत्र ने कप्तानगंज थाने में मुकदमा दर्ज करने के लिए तहरीर दी है। कप्तानगंज थाना क्षेत्र के चौखड़ा गांव में किसान परशुराम चौधरी अपने बेटे अशोक के साथ सुबह 10 बजे खेत में जोताई-बोआई कार्य में जुटे थे। इस दौरान दो लाइनमैन खेत में पहुंचे। उनसे टूटकर गिरे तार को दिखाने के लिए कहा। संविदा लाइनमैन विशाल उर्फबंटी तथा योगेंद्र के साथ किसान परशुराम चौधरी टूटकर गिरे तार को दिखाने खेत के पूरब तरफगए, तभी वह तार की चपेट में आकर झुलस गए। घटना देख दोनों लाइनमैन चिल्लाने लगे। शोर सुन अशोक भी खेत के उस ओर दौड़ पड़े। आनन फानन में भाई दिलीप भी खेत में पहुंच गया। वहां से सीएचसी कप्तानगंज ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। इस संबंध में अवर अभियंता विद्युत राजितराम ने बताया कि तार रात में टूटा या दिन में टूट कर गिरा, इस संबंध में सही जानकारी मिल नहीं पा रही है। यदि तार टूटा तो लाइन भी बंद हो जानी चाहिए थी। 11 हजार वोल्ट तार टूटने से मशीन भी नहीं चल पाएगी। बिना शटडाउन लिए तार ठीक करने लाइनमैन गए, कैसे यह भी पता किया जा रहा है। उपखंड अधिकारी विद्युत बागीश गुप्ता ने बताया कि तार टूटकर कब गिरा, अभी स्पष्ट नहीं है। तार गिरने के साथ ही अवैध मोटर चलाने की बात भी सामने आ रही है। पता कराया जा रहा है कि तार कब से टूटकर गिरा था, जिसे ठीक नहीं किया जा सका और ऐसी घटना हो गई है।

धूमधाम सें मनाया गया भैया दूज

संवाददाता, बस्ती। बहन-भाई के अटूट प्रेम को समर्पित भैया दूज का त्योहार पूरे जिले में रविवार को धूमधाम से मनाया गया। बहनों ने भाई को तिलक कर भगवान से उनकी लंबी उम्र, सुख-शांति और समृद्धि की कामना की। कहीं बहनें अपने भाइयों के घर भाई दूज मनाने के लिए पहुंचीं, तो कहीं भाई अपनी बहनों के घर पहुंचे। हरैया के भदासी निवासी बहन कोमल ने अपने भाई विशाल कान्त पाण्डेय, विकास कान्त पाण्डेय और विवेक कान्त पाण्डेय को रोली, चावल से तिलक किया, आरती उतारी और मिठाई खिलाई। साथ ही भाई की सुख, समृद्धि और लंबी उम्र की कामना की। हरैया नगर पंचायत के मंगल पाण्डेय वार्ड निवासी बहन दिशा, मौली, मिष्टी ने अपने भाई अथर्व और शिवाय को तिलक आरती करके उनके सुख समृद्धि और लंबी उम्र की कामना किया।

कार्यालय : अधिशासी अभियनता जोन 4, गोमतीनगर, जलकल विभाग, नगर निगम, लखनऊ

पत्रांक 404/ईई-4/एल0जे0एस0 दिनांक -04/11/2024

अल्प कालीन निविदा सूचना

जलकल विभाग में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित कार्य हेतु अल्पकालिक निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र किसी भी कार्य दिवस में दिनाँक 13/11/2024 को अपरान्ह 3.00 बजे तक अधिशासी अभियन्ता जोन-4 के कार्यालय के कैश काउन्टर से प्राप्त किये जा सकते हैं। सील्ड निविदायें दिनांक 13/11/2024 को अधिशासी अभियन्ता, जोन-4 के कार्यालय में अपरान्ह 3.30 बजे तक सील्ड टेण्डर बाक्स से प्राप्त की जायेगी। प्राप्त सभी निविदाएं दिनांक 13/11/2024 को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष 4.00 बजे मुख्यालय के कार्यालय में खोली जायेंगी। एक या समस्त निविदाओं को निरस्त करने का अधिकार बिना कारण बताये महाप्रबन्धक, जलकल विभाग में निहित होगा। पूर्ण विवरण कार्यालय से किसी भी कार्य दिवस में देखा जा सकता है। कार्यालय में अवकाश होने की दशा में निविदायें उसी क्रम में समयानुसार अगले कार्य दिवस में खोली जायेंगी।

क्र. स.	कार्य का नाम	धरोहर राशि	निविदा मूल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1.	Supply of P-Gravel & other work for Vibhuti Khand, Vipul Khand-6, Dargah and Sailani Mata Mandir Nalkoop, Gomti Nagar Face-1, Lko	3800.00	200.00	7 दिवस

अधिशासी अभियन्ता, जोन-4
जलकल विभाग, नगर निगम, लखनऊ

धारदार हथियार से दुकानदार पर जानलेवा हमला

संवाददाता

बस्ती। पोखरा बाजार अपराधियों के लिये सुरक्षित ठिकाना हो गया हैं। यहां आए दिन अपराधियों द्वारा घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा हैं। शुक्रवार की देर रात धारदार हथियार से हमले में दुकानदार की हालत गम्भीर हो गई।परिजनों ने युवक को अस्पताल में भर्ती कराया हैं। युवक की हालत नाजुक बनी हुई हैं। घटना से पूरे इलाके में सनसनी का माहौल बना हुआ हैं। पूरा मामला नगर थाना क्षेत्र के पोखरा बाजार में पेट्रोल पंप चौराहे पर देशी शराब का ठेका चलता है। यहां पर दो दर्जन से अधिक गाँवो के लोग दिन रात शराब पीने के लिये डेली आते है। शुक्रवार की रात करीब 7.30 बजे शराब ठेके पर पियक्कड़ों की भीड़ लगी थी। वहां पर पोखरा गाँव के राकेश कुमार अपनी पान की दुकान पर बैठा था।इसी बीच महुरैया गाँव के रहने वाले श्यामू आधा दर्जन से अधिक लोग शराब पीने के लिये आये सब लोग जमकर शराब पिये इसी बीच दुकानदार राकेश कुमार और महुरैया गाँव के रहने वाले श्यामू से किसी बात को लेकर विवाद हो गया। कुछ ही देर में श्यामू अपने गाँव के लोगो के साथ मिलकर राकेश कुमार पर हमला बोल दिया और धारदार हथियार से राकेश कुमार (35वर्ष) के गले में गहरा घाव करके शरीर में कई जगहों पर हमला कर दिया कुछ ही देर में उसकी हालत बिगड़ने लगी। तो आनन - फानन में प्रधान प्रतिनिधि भास्कर सिंह, ओम नंदन,भोलू, मनोज सिंह घायल राकेश कुमार को लेकर निजी साधन से जिला अस्पताल ले गये। जहां डॉक्टरों के मुताबिक घायल के शरीर से काफी खून गिर गया हैं।थाना प्रभारी ने बताया घायल दुकानदार का इलाज जिला अस्पताल में चल रहा हैं। इधर सूचना पर पहुँची नगर थाने की पुलिस आरोपी को पकड़ने के प्रयास में जुटी हुई हैं।एसओ नगर देवेंद्र सिंह ने बताया कि मामला संज्ञान में है। घटना में शामिल रहे लोगो को गिरफ्तार करने के लिये टीम लगी हैं।

मंदिर के बरामदे में फांसी के फंदे से लटकता मिला युवक का शव, जांच में जुटी पुलिस

संवाददाता, उन्नाव। असोहा थाना क्षेत्र के बरजोल खेड़ा कांथा में रहने वाला एक युवक का गांव के बाहर मंदिर के बरामदे में फांसी के फंदे से शव लटकता मिला है पास में खेल रहे बच्चों ने शव देखा तो घटना की जानकारी ग्रामीणों को दी। सूचना पर पहुंचे परिजनों में शिनाख्त की और रो रो का भी हाल होते रहे। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है पुलिस ने मामले की जांच पडताल की है। बता दे कि बरजोल खेड़ा कांथा के रहने वाले किशन लाल का 40 वर्षीय बेटा सुमेर का रविवार की सुबह गांव के बाहर बजरंगबली के मंदिर के बरामदे में फांसी के फंदे से शव लटकता मिला। मंदिर के बगल में ही खेल रहे बच्चों ने शव देखा तो सीखने चिल्लाने लगे। चीख पुकार की आवाज सुनकर ग्रामीणों के भीड़ इकट्ठा हो गई। इस दौरान सुमेर का शव देखकर घटना की जानकारी परिजनों को दी। सूचना पर पिता किशनलाल मौके पर पहुंचे और उन्होंने जानकारी पुलिस को दी। असोहा थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल की ओर मृतक के शव को फंदे से उतार कर पंचायतनामा की कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेजा। मोर्चरी हाउस पहुंचे पिता ने बताया कि 8 साल पहले उसका विवाह पिंकी के साथ हुआ था। उसके अब तक 7 बच्चे मर चुके हैं एक सात महीने का बेटा है बड़ी मन्नतों बाद वह जीवित है। सुमेर खेती किसानी कर परिवार का भरण पोषण करता था लेकिन शराब का आदि था। बेटे की मौत के बाद पिता के साथ परिजन बेहाल होते रहे।

पीलीभीत आबकारी विभाग पर लगा मिलीभगत का आरोप

संवाददाता, पीलीभीत। दीपावली के त्योहार पर जिलेभर में शराब की दुकानों पर ओवररेटिंग का मामला तूल पकड़ चुका है। गजरौला थाना क्षेत्र में इस ओवररेटिंग को लेकर दो पक्षों के बीच हुई झड़प में कई लोग घायल हो गए हैं। शनिवार रात करीब 8रू30 बजे, एक अंग्रेजी शराब की दुकान पर आकाश राय और दिनेश मंडल बीयर लेने पहुंचे, जहां उन्हें बीयर के लिए 30 रुपए अधिक चार्ज करने की बात कही गई। जब ग्राहकों ने इस ओवररेटिंग का विरोध किया, तो दुकान पर मौजूद सेल्समैन ने गाली-गलौज शुरू कर दी। विरोध मारपीट शुरू कर दी। इस घटना में पीड़ितों को बचाने आए अन्य लोगों पर भी लाठी-डंडों से हमला किया गया, जिसके परिणामस्वरूप देवव्रत, आकाश राय, और गणेश सहित कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों ने खून से लथपथ होकर थाने जाकर शिकायत दर्ज कराई। लेकिन प्रशासन ने कभी कोई कार्रवाई नहीं की। गजरौला थाना अध्यक्ष जगदीप मलिक ने इस मामले की पुष्टि करते हुए कहा कि उन्हें घटना की जानकारी मिली है और घायलों को मेडिकल परीक्षण के लिए भेजा गया है। सेल्समैन ने गाली-गलौज शुरू कर दी। विरोध बढ़ने पर सेल्समैन ने अपने साथियों को बुला लिया और मारपीट शुरू कर दी। इस घटना में पीड़ितों को बचाने आए अन्य लोगों पर भी लाठी-डंडों से हमला किया गया, जिसके परिणामस्वरूप देवव्रत, आकाश राय, और गणेश सहित कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों ने खून से लथपथ होकर थाने जाकर शिकायत दर्ज कराई।

दबंगों ने युवक के सिर पर किया हमला, इलाज के दौरान घायल युवक की हुई मौत

संवाददाता, पीलीभीत। पीलीभीत के थाना बरखेड़ा क्षेत्र में बच्चों बच्चों के मामूली विवाद के चलते गाली गलौज का विरोध करना पड़ा महंगा, दबंगों ने युवक के सिर पर किया हमला, इलाज के दौरान घायल युवक की हुई मौत। पीलीभीत जनपद के थाना बरखेड़ा क्षेत्र के ग्राम प्रताप दांडी गांव में बच्चों बच्चों के विवाद के चलते दो पक्षों में विवाद हो गया जिसके चलते एक पक्ष में दूसरे पक्ष के युवक के सिर पर डंडे से प्रहार कर दिया। घायल युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई है बही बरखेड़ा पुलिस ने चार आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। आपको बता दें 02.11.2024 को समय करीब 7.30 बजे ग्राम पीलीभीत के थाना बरखेड़ा क्षेत्र के ग्राम प्रताप दांडी में श्री कृष्णा पुत्र मुरारी लाल के भाई सीताराम पुत्र मुरारी लाल के साथ गंगा प्रसाद, ओमपाल, सुरेंद्र और रामनिवास के द्वारा गाली गलौज कर जाति सूचक शब्दों का प्रयोग किया था जिसका सीताराम के द्वारा विरोध किया गया तो आरोपित गंगा प्रसाद, ओमपाल, सुरेंद्र, रामनिवास निवासी गण प्रताप दांडी के द्वारा सीताराम के सिर में लाठी से बार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया गया था। घायल सीताराम का इलाज अस्पताल में किया जा रहा था। बरखेड़ा पुलिस ने सीएचसी बरखेड़ा भर्ती कराया गया था जिसको डॉक्टरों द्वारा बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर किया था, जिसका इलाज बरेली लाइफलाइन अस्पताल में चल रहा था।

चोरी करने घुसे चोरों को घर मालिक ने मारी गोलीरू दोनों गंभीर रूप से घायल, फोन करके पुलिस को बुलाया, अस्पताल में भर्ती

संवाददाता, पीलीभीत। यह घटना शनिवार और रविवार की मध्य रात्रि लगभग 1रू30 बजे शहर कोतवाली क्षेत्र के बाग गुलशेर खान मोहल्ले में हुई। आरोपी एक बंद पड़े मकान में चोरी करने के इरादे से घुसे थे, जबकि मकान मालिक महेश पटेल उसी भवन के पास रहते हैं। जैसे ही चोरों की गतिविधियों की आहट हुई, महेश पटेल अपनी लाइसेंसी रिवॉल्वर लेकर मौके पर पहुंचे। इस दौरान, दोनों आरोपी महेश पटेल पर हमला कर दिया। अपने बचाव में महेश पटेल ने फायरिंग की, जिसमें एक आरोपी यादराम को कमर में गोली लगी, जबकि दूसरे आरोपी महेंद्र के पैर में गोली लगी। दोनों अभियुक्त मौके पर ही घायल होकर गिर पड़े। दोनों घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया मकान मालिक ने तुरंत पूरे मामले की सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और दोनों घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। बताया जाता है कि ये दोनों आरोपी सुनघड़ी थाना क्षेत्र के हिस्ट्रीशीटर हैं और उनका आपराधिक इतिहास लंबा चौड़ा है। सीओ सिटी दीपक चतुर्वेदी ने कहा कि मकान में चोरी करने घुसने वाले आरोपियों को आत्मरक्षा के लिए मकान मालिक ने गोली मारी। घायल आरोपियों को अस्पताल भेज दिया गया है।

लक्ष्मीध्गणेश प्रतिमा विसर्जन को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु सर्किट हाउस बस्ती में मीटिंग

संवाददाता, बस्ती। अपर पुलिस महानिदेशक गोरखपुर, जोन गोरखपुर डॉ0 के0एस0 प्रताप कुमार द्वारा पुलिस महानिरीक्षक बस्ती परिक्षेत्र बस्ती आर0के0 भारद्वाज व पुलिस अधीक्षक गोपाल कृष्ण चौधरी के साथ लक्ष्मीध्गणेश प्रतिमा विसर्जन को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु विसर्जन स्थल अमहट घाट का निरीक्षण कर सुरक्षा से संबंधित की गयी तैयारियों का जायजा लिया गया तथा संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया । सर्किट हाउस बस्ती में आई0जी0 व पुलिस अधीक्षक की मौजूदगी में जनपद के समस्त क्षेत्राधिकारी के साथ आगामी त्यौहारों को सकुशल एवं शांतिपूर्ण सम्पन्न कराने के संबंध में गोष्ठी की गयी तथा सभी को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये।

कायस्थ समाज ने किया कलम पूजन

संवाददाता, शाहजहाँपुर। यम द्वितीया एवं भैया दूज के अवसर पर बड़ी विसरात हुसैनपुरा स्थित भगवान चित्रगुप्त एवं लक्ष्मी नारायण मंदिर पर हवन एवं कलम पूजन का कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें कायस्थ समाज की ओर से मंदिर के संस्थापक एवं संचालक सरोज श्रीवास्तव, राजेंद्र सक्सेना, महेश सक्सेना, संजीव सक्सेना सहित अनेक संभ्रांत श्रद्धालूओं ने सहभागिता कर भगवान चित्रगुप्त जी के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की।

सम्पादकीय

जिम्मेदारी का करें अहसास

पहले से ही उम्मीद थी कि दीपावली के बाद प्रदूषण के स्तर में वृद्धि होगी, वैसा हुआ भी। पहले से ही दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में प्रदूषण का संकट बढ़ा हुआ था। सुप्रीम कोर्ट की तल्ख टिप्पणियां बार-बार हमारा ध्यान खींचती रहीं। पिछले दिनों खबर आई कि दिल्ली दुनिया की सर्वाधिक प्रदूषित राजधानी है। वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार देश के सर्वाधिक प्रदूषित 32 शहरों में ग्यारह हरियाणा के हैं। यही वजह है कि पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र व राज्य सरकारों को फटकार लगाई कि प्रदूषण रोकने के लिये जमीनी स्तर पर प्रयास न के बराबर हैं। दरअसल, इस मौसम में हर साल ठंड शुरू होते ही हवा की दशा-दिशा में बदलाव के साथ ही आसमान में धुएं की परत जमने लगती है। यही वजह है कि पराली संकट व अन्य कारणों से बढ़ते प्रदूषण से चिंतित सुप्रीम कोर्ट को कहना पड़ा कि प्रदूषण मुक्त वातावरण में रहना नागरिकों का मौलिक अधिकार है। लेकिन एक हकीकत यह भी है कि सिर्फसरकारी प्रयासों से ही प्रदूषण की समस्या का समाधान संभव नहीं है। यह स्थिति तभी बदलेगी जब लोगों की तरफसे भी ईमानदार पहल होगी। अब चाहे बात राष्ट्रीय सरोकारों की हो, पानी संकट की हो या फिर प्रदूषण की हो। जब नागरिकों को अहसास होगा कि बिना पटाखे छुड़ाए भी खुशी मनायी जा सकती है तो हम समाज के लोगों, जीव-जंतुओं व पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सार्थक प्रगति कर सकेंगे। बात तब बनेगी जब हम बच्चों के पाठ्यक्रम में यह बात शामिल करेंगे कि उनके भविष्य के लिये पर्यावरण, पानी व हवा की रक्षा कितनी जरूरी है। बच्चों को अहसास कराएं कि जिस तरह से बड़े लोग पानी का दुरुपयोग कर रहे हैं, उससे उनके भविष्य के लिये पानी का संकट गहरा हो जाएगा। इसके लिये टीवी, प्रिंट मीडिया व सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाये जा सकते हैं। इस अभियान में सूचना माध्यमों की भी जवाबदेही तय करने की जरूरत है। दरअसल, ग्रीन ट्रिब्यूनल या अन्य प्रदूषण नियंत्रक संस्थाएं अकसर राज्यों के सचिवों व अधिकारियों को दंडित करने की बात करती हैं, लेकिन इससे समस्या का समाधान संभव नहीं है। दरअसल, जब तक नागरिकों व किसानों को जागरूक -जवाबदेह नहीं बनाया जाएगा, तब तक स्थिति में बदलाव संभव नहीं है। हम भूल जाते हैं कि इस संकट को बढ़ाने में राजनीति की बड़ी भूमिका है। किसानों के मुद्दों को जोरशोर से उठाकर श्रेय लेने वाले राजनेताओं की जवाबदेही तय होनी चाहिए। दरअसल, बंपर पैदावार का श्रेय लेने वाले राजनेता तब कहां चले जाते हैं जब पराली जलाने का संकट पैदा होता है? सही मायनों में जहां पराली जलाने की घटनाएं ज्यादा होती हैं, वहां क्षेत्र के विधायकों की भी जवाबदेही तय की जानी चाहिए। उनके खिलाफकार्रवाई की जानी चाहिए कि वे क्षेत्र के किसानों को जागरूक क्यों नहीं कर पाते। क्यों वे पराली के निस्तारण के वैकल्पिक संसाधन उपलब्ध कराने में किसानों का सहयोग नहीं करते? विडंबना यही है कि वे वोट की राजनीति के प्रलोभन में पराली जलाने के खिलाफआवाज उठाने में चुप्पी साध लेते हैं। उनके खिलाफभी तो लापरवाही के मामले दर्ज होने चाहिए। वहीं यह भी हकीकत है कि प्रदूषण संकट के मूल में सिर्फपराली समस्या ही नहीं है। हमारी उपभोक्ता संस्कृति, वाहनों का अंबार, सार्वजनिक यातायात सुविधा का पर्याप्त न होना, अनियोजित निर्माण कार्य, जीवाश्म ईंधन का प्रयोग तथा कूड़े का वैज्ञानिक तरीके से निस्तारण न होना भी प्रदूषण संकट के मूल में है।

वास्तु की 8 दिशाओं में किए जा सकने वाले निर्माण और शुभ गतिविधियां जानिए

ज्योतिषाचार्य पं.अविनाश मिश्र शास्त्री (चित्रकूटधाम)

वास्तु शास्त्र में सभी दिशाओं के लिए वहां विद्यमान उर्जाओं के अनुरूप उचित और लाभदायक गतिविधियां बताई गई हैं। चार प्रमुख दिशाओं की जानकारी हम सभी को हैं। लेकिन वास्तु में एक शुभ भवन के निर्माण के लिए चार प्रमुख दिशाओं के अलावा चार अन्य दिशाओं में की जाने वाली गतिविधियां भी निर्धारित की गई है, इन सभी दिशाओं के अलग-अलग प्रभाव होते हैं इन प्रभावों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कमरों के निर्माण से लेकर वस्तुओं को रखने की जगह के सम्बन्ध में वास्तु में कई नियम बनाये गए है। इन नियमों के अनुरूप बना घर व्यक्ति को आर्थिक समृद्धि के साथ ही एक शांतिपूर्ण जीवन भी प्रदान करता है तो आइये जानते हैं प्रत्येक दिशा में की जाने वाली वास्तु सम्मत गतिविधियां एवं निर्माण-

1-उत्तर दिशा- वस्तुओं के संग्रहण, खाद्य पदार्थों के भण्डारण और औषधियों को रखने के लिए उत्तर दिशा सर्वोत्तम है। उत्तर दिशा के स्वामी कुबेर जी है अतः इस दिशा में निर्मित मुख्य द्वार आर्थिक समृद्धि प्रदान करता है। इस दिशा को दक्षिण व पश्चिम दिशाओं की तुलना में अधिक खुला रखें।

2-उत्तर-पूर्व दिशा यानि (ईशान)-ईशान दिशा का सम्बन्ध सात्विक उर्जाओं से होता है। यह दिशा ध्यान, अध्यात्म और धार्मिक कार्यों के लिए बेहद उपयुक्त मानी जाती है। यहाँ पर अतिथियों के लिए स्वागत कक्ष भी बना सकते है। उत्तरी ईशान में बना अंडरग्राउंड वाटर टैंक उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करता है। चूँकि यह सात्विक उर्जाओं से सम्बंधित दिशा है अतः विशेष रूप से इस दिशा को सदैव स्वच्छ रखें।

3-पूर्व दिशा- सूर्य पूर्व दिशा का स्वामी है, यह वास्तु में सबसे प्रमुख दिशाओं में से एक मानी जाती है। पूर्व दिशा गार्डन लगाने के लिए बहुत अच्छी है। यहाँ पर सुंदर पौधें लगा सकते है। सामान्यतया इस दिशा को भी उत्तर के समान ही खुला रखना बेहतर परिणाम देता है। अगर आप यहाँ किसी प्रकार का निर्माण कराना चाहते है तो आप अतिथि कक्ष भी बना सकते है। पूर्व में निर्मित अतिथि कक्ष आपके सामाजिक संपर्कों को बढ़ाने में बहुत सहायक सिद्ध होगा।!

4-दक्षिण-पूर्व यानि (आग्नेय) - अग्नि तत्व से सम्बंधित इस दिशा में किचन का निर्माण आपकी आय में वृद्धि करता है और बेहतर कैश फ्लो प्रदान करता है। आग्नेय में आप बडे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण व गैजेट्स भी रख सकते है।!

5-दक्षिण दिशा- दक्षिण दिशा में बेडरूम का निर्माण किया जा सकता है। यहाँ पर निर्मित बेडरूम आपको एक आरामदायक अनुभव देगा, आपकी नींद की गुणवता भी बढ़ेगी और सुकून भी मिलेगा। ध्यान रहे कि सोते वक्त आपका सिर दक्षिण दिशा की ओर ही रहे।

6-दक्षिण-पश्चिम यानि (नैत्य)- इस दिशा का सम्बन्ध तमस उर्जा से होता है। अतः यह भी एक आरामदायक शयन कक्ष के निर्माण के लिए अच्छी दिशा है, हालाँकि इस स्थान पर बने शयन कक्ष का उपयोग घर के मुखिया के द्वारा किया जाना चाहिए। यह जीवन में स्थायित्व प्रदान करेगा।

7- पश्चिम दिशा- इस दिशा में आप डाइनिंग रूम बना सकते है। यहाँ पर किया गया भोजन स्वास्थ्य के लिए लिहाज से लाभकारी रहता है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर बच्चों के द्वारा की गई मेहनत का बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए स्टडी रूम भी बनाया जा सकता है।

8-उत्तर-पश्चिम यानि (वायव्य)- चूँकि इस दिशा का सम्बन्ध भी दक्षिण-पूर्व दिशा के समान रजस उर्जा से है, अतः किचन बनाने के लिए यह भी एक उत्तम दिशा है। इस स्थान को वाहन पार्किंग के लिए भी उपयोग में लाया जा सकता है।

ज्योतिष शास्त्र, वास्तुशास्त्र, वैदिक अनुष्ठान व समस्त धार्मिक कार्यों के लिए संपर्क करें

श्री रामकृष्ण ज्योतिष केन्द्र श्रीरामकृष्णज्योतिष अनुष्ठान केन्द्र संपर्क सूत्र - 7389695052, 8085152180

देश की एकता पर लपकते और शिखा से पादुका तक पैने होते नाखून

बादल सरोज

जाति जनगणना के सवाल पर मनु-जायों का कुनबा बिल्लयाया हुआ है। न उगलते बन रहा है, न निगलते!! हजार मुंह से हजार तरीके की बातें करके 'चित्त भी मेरी पट्ट भी मेरी' की सारी कोशिशों के बाद भी श्अंटा मेरे बाप काश् कहने का दावा करने का आत्मविश्वास नहीं जुट पा रहा है। घूम फिरकर एक ही तोड़ -- सदियों के साझे संघर्षों और साथ से बनी मुल्क की पुरानी कौमी एकता को तोड़ने और बिखेरने का तोड़ -- समझ में आ रहा है य और ऊपर से नीचे तक, पहाड़ से समंदर तक पूरा गिरोह इसी काम में लग गया है। इस बार इसके पूरी तरह निरावरण और निर्लज्ज चरण की शुरुआत केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने संवेदनशील प्रदेश बिहार के और भी अधिक संवेदनशील इलाके सीमांचल से की है। अपनी इस कथित हिन्दू स्वाभिमान यात्रा में इस केन्द्रीय मंत्री ने उन्हीं जिलों को निशाने पर लिया, जहां मुस्लिम आबादी अधिक है। वे भागलपुर से निकले और कटिहार, पूर्णिया, किशनगंज होते हुए अररिया तक आग लगाते, जहर बरसाते घूमते रहे। इस कथित स्वाभिमान यात्रा के दौरान दिए भाषणों में उन्होंने कहा कि कोई मुसलमान यदि तुम्हें एक थप्पड़ मारे, तो तुम सब मिलकर उसे सौ थप्पड़ मारो। वे यहीं तक नहीं रुके। उन्होंने युद्धघोष-सा करते हुए आव्हान किया कि सभी हिन्दुओं को अपने घरों में तलवार, भाला और त्रिशूल रखना शुरू कर देना चाहिये। इस तरह के उग्र प्रलापों के बाद उन्होंने भीड़ से कटेंगे, तो बटेंगे के नारे का तिर्वाचा भरवाया, उसे तीन बार लगवाया। गिरिराज सिंह उस संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य भारत के मंत्री हैं, जिसका संविधान धर्मनिरपेक्षता के प्रति प्रतिबद्ध है और यह भारत और उसके सामाजिक ढाँचे के अस्तित्व की बुनियादी शर्त है।

इस विष भरी यात्रा के शुरू होने के ठीक पहले इसी 21 अक्टूबर को देश का सर्वोच्च न्यायालय दो टूक शब्दों में साफकर चुका है कि धर्मनिरपेक्षता भारत के संविधान की बुनियाद का हिस्सा है, उसका आधार है। इतना ही नहीं, इसी कुनबे के कुछ लोगों की संविधान में से धर्मनिरपेक्षता शब्द को हटाने की याचिका को खारिज करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने भविष्य में भी इस तरह की मंशाओं को निर्मूल करते हुए कहा कि धर्मनिरपेक्षता भारत के संविधान का अविभाज्य अंग है, एक ऐसा हिस्सा है, जिसे बदला नहीं जा सकता। इससे पहले भी कई बार सुप्रीम कोर्ट यही बात कह चुका है, मगर इस बार का उसका फैसला न्यायपालिका की जिस दशा में आया है, उसके चलते और भी ज्यादा मानीखेज हो जाता है। इसके बाद भी, जिस सरकार पर संविधान को लागू करने और खुद उसी के हिसाब से चलने की जिम्मेदारी है, उसी का एक मंत्री, मंत्री पद पर रहते हुए, कमांडोज की सिक्यूरिटी में लालबत्ती की कार में बैठकर देश में धर्म के बहाने उन्माद भड़काने के सरासर आपराधिक काम में लगा हुआ था। जिस पुलिस को उसे फौरन गिरफ्तार कर लेना चाहिए था, वही पुलिस उसकी सभाओं का इंतजाम देख रही थी। कृषि के बाद देश में सबसे ज्यादा रोजगार देने वाले टेक्सटाइल उद्योग के कताई, बुनाई से रंगाई तक के हर इदारे को तबाह कर चुकने के बाद कपड़ा मंत्री देश के भाईचारे और एकता के ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने के कुटिल इरादे को पूरा करने निकल पड़े हैं। गिरिराज सिंह का अपराध सिर्फराजनीतिक या सामाजिक रूप से ही अक्षम्य और अरक्षणीय नहीं है, वह देश के कानूनों के हिसाब से भी आपराधिक और दण्डनीय है। भारतीय दंड संहिता की धारा 153 ए के तहत यदि कोई भी व्यक्ति धर्म व जाति को आधार बनाकर समाज में अशांति फैलाने के जुर्म में न्यायालय द्वारा दोषी पाया जाता है, तो उस व्यक्ति को 3 वर्ष तक की सजा व जुर्माने से दंडित किया जाता है। इसी तरह की एक अन्य धारा 295 ए है, जिसके अंतर्गत ऐसे सभी कृत्य अपराध माने जाते हैं जहाँ कोई आरोपी व्यक्ति, भारत के नागरिकों के किसी हिस्से की धार्मिक भावनाओं को आहत करने के जानबूझकर और विद्वेषपूर्ण आशय से उस वर्ग के धर्म या धार्मिक विश्वासों का अपमान करे या ऐसा करने का प्रयत्न करे। ऐसा करने पर यह तीन वर्ष की सजा या जुर्माने या दोनों से दण्डित किया जाएगा। इस धारा में ऐसा करने के रूपों और अभिव्यक्ति के तरीकों को भी दर्ज किया गया है, जिसमें लिखित शब्दों, संकेतों, दृश्यारूपणों तक को प्रमाण माना गया है यहाँ तो मोदी की कैबिनेट के मंत्री बाकायदा नाम ले लेकर एक समुदाय विशेष दू मुसलमानों दू के खिलाफहिंसा का खुला आव्हान कर रहे हैं। मगर वे न अकेले हैं, न अपवाद हैं। भले बिहार की भाजपा ने इसे दू अपने ही केन्द्रीय मंत्री -- की इस उन्मादी यात्रा से पल्ला झाड़कर इसे उनकी निजी यात्रा बताकर बिहार की साझा सरकार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार को लोगों को दिखाने के लिए उल्लू की लकड़ी पकड़ा दी हो, मगर यह न निजी है, ना ही किसी एक के दिमाग में पैदा हुए खलल का परिणाम है। यह 2024 के लोकसभा चुनाव में अल्पमत में रह जाने और लाख कोशिशों के बावजूद जनता के आर्थिक और सामाजिक शोषण के वास्तविक मुद्दों के उभर कर विमर्श में आ जाने से मची घबराहट और बेचैनी का नतीजा है। उन्माद की आग में, साम्प्रदायिकता की कड़ाही में, विद्वेष के गरल में विभाजनकारी एजेंडे को फिर से तलकर परोसने की हड़बड़ी है।

जिस सीमांचल के जिलों से गिरिराज सिंह गुजरे, उसकी चार में से तीन लोकसभा सीटों पर भाजपा और एन डी ए को हार मिली है। पड़ोस के राज्य झारखण्ड में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं दू कुनबे को पता है कि अररिया, कटिहार, भागलपुर या किशनगंज में तनाव बढ़ेगा और दुर्भाग्य से कहीं थोड़ा बहुत भी अघट घट गया तो चिंगारियां महाराष्ट्र तक जायेंगी। इस नजदीकी मकसद के अलावा लक्ष्य दूरगामी भी है, मनु प्रतिष्ठित समुदायों को फुसलाकर उन्हें अपनी ही गर्दन पर चलने वाली तलवार पर धार लगाने के काम में भिड़ाने का। उत्तरप्रदेश में अयोध्या, प्रयाग, सीतापुर, रामपुर, चित्रकूट सहित जितनी भी धार्मिक कही जाने वाली जगहें हैं, उनकी लोकसभा सीटें हारने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जिस 'बंटेंगे तो कटेंगे' को श्मशान सिद्ध मन्त्र और वैताल प्रदत्त जादू की छड़ी मानकर घुमा रहे हैं, उसे प्रधानमंत्री से लेकर बस्ती-मोहल्ले के भाईजियों तक 'खुल जा सिमसिम' के पासवर्ड की तरह दोहराये जा रहे है य यह बात अलग है कि फिलहाल कोई दरवाजा उन्हें खुलता नहीं दिख रहा। इसीलिए इस पर और अधिक जोर देने के लिए अब इनके मात-पिता संगठन आरएसएस ने भी सुर में सुर मिलाना शुरू कर दिया है। संघ के सरकार्यवाह होसबोले भी बोले हैं और दावा किया है कि उनका संघ तो हमेशा से ही यही काम करता रहा है। इस बंटेंगे में उनका आशय सारे भारतियों की एकता बनाने का, उन्हें बंटने से रोकने का न था, न है। 'उनका इरादा उस कथित हिन्दू समुदाय को एकजुट करने का है, जिसके करीब 90 फीसदी मनु-प्रताड़ित और वंचित, कुचले और सताए हिस्से के ऊपर ही अंततः उनके हिंदुत्व की विजय ध्वजा को गाड़ना है। फिलहाल इन्हें कहीं मुसलमानों, तो कहीं ईसाईयों और बाकी सब जगह तर्कशील, प्रश्नाकुल नागरिकों और कम्युनिस्टों का डर दिखाकर उन्मादी भीड़ में बदलना है। ये अलग बात है कि बाद में हिन्दुत्व के नाम पर गुजरे अतीत की अँधेरी गुफाओं से लाकर जिस शासन प्रणाली को स्थापित किया जाना है, उसके सूत्रधार मनु की गाज इन्हीं पर गिरने वाली है। बहरहाल उन्हें लगता है कि शायद इस घनगरज का जैसा वे चाहते हैं, वैसा असर न हो, इसलिए अपने हुडदंगी जत्थे - स्टॉर्म ट्रूपर्स दूभी मैदान में उतार दिए है। 'सुलगाने और धधकाने की शुरुआत पहाड़ से की जा रही है। चमोली जिले में ये जत्थे घूम रहे हैं य थराली, गैरसैण, खनसर घाटी, माईथान, नंदानगर हर जगह उन्माद भड़का कर उसे उत्पात में बदला जा रहा है, हुजुमों को इकठ्ठा कर उन्हें मस्जिदों पर हमले करने के लिए उकसाया जा रहा है। बाहरी लोगों को उत्तराखण्ड से बाहर खदेड़ने की मांग उठाकर अल्पसख्यकों की कॉलोनियां, बस्तियों और मस्जिदें ढहाने की मांगे की जा रही हैं। खुद मुख्यमंत्री धामी इसे हवा दे रहे हैं। लपटें उत्तरकाशी तक पहुँचने लगी हैं। मुद्दा जिस बलात्कार की घटना को बनाया जा रहा है, उसमें गिरफ्तारी 15 दिन पहले ही हो चुकी है य मगर दाहोद, बदलापुर, कठुआ सहित हाल के ज्यादातर बलात्कारों, यहाँ तक कि नाबालिगों की हत्याओं तक में अपनों के लिए होने के समय चुप रहने या पूरी निर्लज्जता के साथ अपराधियों की खुल्लमखुल्ला हिमायत करने वाला गिरोह चमोली के आरोपी का धर्म देखकर उसे साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण का जरिया बना रहा है। इस बार तो संयोग से अपराधी एक मुस्लिम युवा है भी, न भी होता, तो भी ये तो झूठ दर झूठ गढ़कर भी तनाव फैलाने और फसाद करवाने में सिद्धहस्त हैं।

बुजुर्गों की उपेक्षा करके हम स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं कर सकते

विजय गर्ग

बचपन और जवानी की तरह बुढ़ापा भी मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण है। बुढ़ापा, जवानी और बचपन में बुनियादी अंतर यह है कि बचपन और जवानी जीवन में एक बार आती है और चली जाती है, लेकिन जब बुढ़ापा आता है तो आखिरी सांस तक हमारे साथ रहता है। आम तौर पर, जिस व्यक्ति ने अपने जीवन का चरम 60 वर्ष देखा हो, उसे पुराने क्लब के सदस्य के रूप में पहचाना जाता है। उम्र के इस पड़ाव पर समाज को समझदारी की उम्मीद होती है। उसे ज्येष्ठ की उपाधि देता है, परन्तु उस समयदुख तो तब होता है जब दूर से देखने पर ऐसा लगता है कि कोई बूढ़ा आदमी आ रहा है, लेकिन जब मुंह खोलता है तो वह बूढ़ा आदमी निकलता है। बूढ़े आदमी और बूढ़े आदमी के बीच अंतर यह है कि बूढ़ा आदमी हमेशा समझदारी से बात करता है जबकि बूढ़ा सिर्फबात करता है। आधुनिक समय में हर रिश्ते में दरारें आ रही हैं। माता-पिता अक्सर बुढ़ापे में खुद को उपेक्षित महसूस करते हैं। दुःख की बात है कि बच्चे अपने माता-पिता को वृहद-आश्रम में छोड़ने से भी नहीं हिचकिचाते। ऐसी सामाजिक घटना न सिर्फनिंदनीय है बल्कि बेहद शर्मनाक है। तो इसे बंद कर दीजिएयह आवश्यक है क्योंकि बुजुर्गों की उपेक्षा करके हम स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं कर सकते। यह समस्या दिन-ब-दिन विकराल क्यों होती जा रही है? हालाँकि नई पीढ़ी ख्वाओ, पियो, राख करोश् के सिद्धांत में गलत है, भौतिकवाद मूल्यों पर भारी पड़ रहा है, लेकिन फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि बच्चे हमेशा गलत होते हैं। कई बार माता-पिता की भी गलती देखने को मिलती है। अधिकांश बुजुर्गों को उनके बचपन के दौरान उनके माता-पिता द्वारा अनुशासित किया जाता है और उन्होंने अपने जीवन में कड़ी मेहनत की है। तो अब उनके अपने बच्चे भी हैंडटांगा चाहते हैं, लेकिन ऊंचे पढ़े-लिखे बच्चे यकीनन बहुत बातें करते हैं। मशीनीकरण के युग में नई पीढ़ी को टोका-टोकी बर्दाश्त नहीं होती, जबकि पुरानी पीढ़ी उन पर अपना अनुभव और ज्ञान थोपना चाहती है। शादी के बाद जब माता-पिता अपनी बहू को सिर्फएक स्थाई नौकरानी समझने लगते हैं तो समस्या यहीं से शुरू होती है। जिस लड़की ने मंगनी के दौरान बातचीत के दौरान अपने पिता को तड़पते देखा है। उनसे सच्चे सम्मान की उम्मीद करना भी मूर्खता है। इस स्थिति मेंक्रिया की प्रतिक्रिया होती है। प्रतिक्रिया, क्रिया के इस चक्र में रिश्तों पर असर पड़ने लगता है। जब आपके बेटे की शादी हो तो आपको अपनी बहू को अपनी बेटी मानना ??चाहिए क्योंकि शादी के समय वह अपना घर और माता-पिता छोड़कर आपके घर आती है। अब आप उसके माता-पिता हैं। यह आप पर निर्भर है कि आप इसे कैसे लेते हैं। आप उसके साथ जैसा व्यवहार करेंगे वैसा ही व्यवहार करेंगे। यदि आप अच्छे संस्कारों के साथ व्यवहार करेंगे तो बदले में आपको सम्मान मिलेगा। ऐसी स्थिति जहां किसी को दबाव डालने के लिए मजबूर किया जाता हैउसके बाद यह उसी ताकत से टूट जाएगा या वापस उछल जाएगा। विज्ञान के इस सिद्धांत को हम नकार नहीं सकते। माता-पिता अक्सर शादी के बाद अपने बेटे के व्यवहार में बदलाव को लेकर शिकायत करते हैं। माता-पिता सोचते हैं कि उनका बेटा भोला है और नूह चतुर है। इस कारण वह पत्नी का गुलाम बन गया है। हालांकि, यह मामला हमेशा नहीं होता है। माता-पिता को एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपका बेटा भी किसी का पति है। आजकल अगर पढ़े-लिखे लड़के अपनी पत्नियों के काम में मदद करते हैं तो उन्हें श्जाकत का गुलामश् कहा जाता है इन्हीं कहा जा सकता क्योंकि पत्नी कई ऐसे काम करती है जो पति के हिस्से के होते हैं। आपसी सहयोग से ही गृहस्थ जीवन का रथ आगे बढ़ सकता है। कई बुजुर्गों को जब नई बहू मिलती है तो उन्हें पहले आई बड़ी बहू में कई कमियां नजर आने लगती हैं। वे भूल जाते हैं कि अब तक उनकी सेवा किसने की है। नई सदस्य कभी-कभी परिवार में बसने के लिए बड़ों को नहीं टोकती, लेकिन एक साल बाद जब वह अपना रंग दिखाना शुरू करती है तो ऐसा लगता है कि अब वह ज्यादा बातें करने लगी है। घर आये अतिथियों का व्यवहार यकाई बार जब बुजुर्ग आह भरते हुए कहता है, श्वस आओश् तो मेहमान उसके लहजे से समझ जाता है कि वह अपना दुख बांटने को तैयार है। मौका मिलते ही बूढ़ा मेहमानों के सामने अपनी भावनाएं ड्रम से गेहूं की तरह उड़ेल देता है। फिर यह खास मेहमान सभी रिश्तेदारों के बीच मध्यस्थता करके बूढ़े और उसके बच्चों का श्दुखश् बांटता है। अगले कुछ दिनों में स्थिति में सुधार हो जाता है और घर का माहौल सामान्य हो जाता है, लेकिन सभी रिश्तेदारों के बीच बच्चों की छवि को जो नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई नहीं की जा सकती। ईसलिए अपने रिश्तेदारों के सामने अपने बच्चों की बुराई न करें बल्कि अपने बच्चों की उपलब्धियों का जिक्र करके गर्व महसूस करें, क्योंकि आपके बच्चे आपके लिए जो कर सकते हैं, वह रिश्तेदार नहीं कर सकते। दूसरों को बार-बार बेटा-बेटा कहकर पुकारना और अपने बेटों को हमेशा रोआब कहकर पुकारना कोई बहुत अच्छी बात नहीं है। बुजुर्गों को छोटे बच्चों के साथ समय बिताना चाहिए, उन्हें बाहर घुमाने ले जाएं। सेहत को ध्यान में रखते हुए बच्चों को कभी-कभी खाना खिलाने ले जाएं। इस तरह आपका समय अच्छा बीतेगाऔर बच्चे आपसे अधिक प्यार करेंगे। मेरा एक सरपंच मित्र अपनी बहू के माता-पिता के घर आने पर उनका सम्मान नहीं करता, लेकिन जब वह दूसरों को अपनी बहू के बारे में बताता है, तो कहता है, श्मुझे दूसरों के घरों के बारे में नहीं पता, लेकिन भाग्यशाली लड़की हमारे घर आई है। परिणामस्वरूप उनकी बहू उनका दिल से सम्मान करती है। करुणा, सम्मान, प्रेम, नम्रता आदि ऐसे भाव हैं जो किसी का भी दिल आसानी से जीत सकते हैं। पढ़ने-लिखने के बाद रोजगार के लिए दर-दर धक्के खाने से निराश हो चुके बच्चों का मनोबल बढ़ानावयस्कों की सहानुभूति एक प्रभावी टॉनिक साबित हो सकती है। बुढ़ापे में घुटने, कूल्हे, सिर, टांगों और बांहों में दर्द आम समस्या है। जागने पर घुटने या कंधे में दर्द की शिकायत करके एक सुखद सुबह को बर्बाद न करें, बल्कि आभारी रहें कि आपके पास जीने के लिए एक और खूबसूरत दिन है। चूँकि प्रकृति का नियम है कि पकने पर फल को समय के साथ पेड़ से अलग होना ही पड़ता है। उसी प्रकार मानव शरीर को भी बचपन, जवानी और बुढ़ापे की अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है और अंत में मिट्टी में मिल जाना पड़ता है यह प्रकृति का नियम है। जब मृत्यु एक अटल सत्य है तो फिर उससे डर क्यों? हाँ! जहां तक ??शारीरिक समस्याओं की बात है तो इस उम्र में व्यक्ति को अपने खान-पान में संयम रखना चाहिए। अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार छोटे-छोटे कार्य करके स्वयं को स्वच्छ रखना चाहिए। हल्का भोजन करना चाहिए।

प्रगतिशील काव्यधारा के प्रख्यात कवि बाबा नागार्जुन

कुमार कृष्णन

नागार्जुन मेरे प्रिय कवि रहे हैं। उनको गुजरे 26 साल हो गए। उनकी कविताओं की प्रासंगिकता आज भी है। भले ही वे किसी कालखंड में लिखी गयी हो। कई बार उनसे मिलने का मौका मिला। पहली बार उनसे भागलपुर के भगवान पुस्तकालय में मिला। उनसे मेरा परिचय हिन्दी के सुप्रसिद्ध समालोचक डॉ. विष्णु किशोर झा श्बेचनश् ने कराया। उन दिनों भागलपुर का भगवान पुस्तकालय साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र था। शायद ही कोई ऐसा साहित्यकार हो जो भागलपुर के इस ऐतिहासिक पुस्तकालय में न आया हो। यह काल मेरे पत्रकारिता का आरंभिक काल था। उसके कई साल बाद उनसे दूसरी मुलाकात दरभंगा के चंद्रधारी मिथिला कॉलेज दरभंगा के सभागार में आयोजित कवि सम्मेलन में हुई। मेरे साथ नामचीन शायर अनिरुद्ध सिन्हा, कवि विभूति आनंद, मदन कश्यप,अनिल विभाकर,अरुण कमल,सूचना व जनसंपर्क के अधिकारी आनंद और कई लोग थे। नागार्जुन को लोग श्बाबाश् कह कर संबोधित करते थे। नागार्जुन को प्रगतिशील काव्यधारा का आधार कवि माना जाता है। सच्चा कवि व्यवस्था का पोषक नहीं, आलोचक होता है। वह सहमतियों का गान नहीं लिखता, असहमतियों की साखी रचता है। कबीर के सदियों बाद ऐसी विस्फोटक चेतना की कविता? केवल नागार्जुन ने लिखी हैं। अरे इन दोउन राह न पाई---लिख कर कबीर ने हिंदू और मुसलमानों दोनों कौमों की दिशाहीनता और पारस्परिक कलह को वाणी दी और उनकी धर्मांधता पर प्रहार किया तो नागार्जुन ने सदैव आम आदमी के पक्ष में, आम आदमी की हैसियत से सत्ता-व्यवस्था, राजनीति, अहंकार, पद, ऐश्वर्य और पूंजी की मुखालफ्त की। कबीर ने भी आँखिन देखी को साखी लिखी थी, नागार्जुन भी अपनी आँखों एवं ऐंद्रिय बोध पर भरोसा करते थे। वे किसी भी हालत में पूँजीपतियों के पैरोकार नहीं हो सकते थे। मैथिल पंडितों के परिवार में जन्मे नागार्जुन की शिक्षा-दीक्षा किसी विश्वविद्यालय में नहीं, संस्कृत पाठशाला में हुई। धीरे धीरे उनकी प्रतिभा का मार्जन हुआ और उनके भीतर का कवित्व आकार लेने लगा था। शुरू से ही यायावरी के मिजाज ने उन्हें उस दुनिया से साक्षात्कार कराया जिसे वे विश्वविद्यालयों की गतानुगतिक शिक्षा से नहीं प्राप्त कर सकते थे।

संस्कृत पढ़ी, बाँग्ला के अच्छे जानकार थे ही, सिंहल जाकर पालि पर भी महारत हासिल कर ली। कहा जाता है कि वे अपभ्रंश, सिंहली, तिब्बती, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी भाषा भी न केवल बखूबी पढ़ लेते थे बल्कि इन भाषाओं के साहित्य से सुपरिचित भी थे। अपनी फक्कमस्ती में भी उनके निकट दैन्य का निवास नहीं था। कहीं के लिए निकलना, कहीं अटक जाना, भटकते हुए फिर किसी दिशाहीन गंतव्य की ओर निकल पड़ना बाबा के स्वभाव में था। वे अपने मित्रों, शिष्यों के घर पहुँच कर अपनापे से रसोई में जा धमकते थे और फिर पाक-कला पर रससिद्ध प्रवचन करते। उनकी झिड़कियां सुनने को मिलतीं, नाराजगी भी। पर यह सब ज्यादा दिन न चलता। वे फिर उसी अपनत्व से पेश आते। बाबा में वाकई बाबा का स्वभाव बोलता था। वे जिस तरह अपनी उजड़ी गृहस्थी और छोटे बच्चों को छोड़ यायावरी में रम गए थे, उन्हें केवल अपना नहीं, देश- दुनिया का ख्याल था। उनकी परवाह थी। वे कविता में व्यक्त गतिरोध को दूर करना चाहते थे। वह कविता जिसका जन-जीवन से कोई वास्ता न हो, वह उन्हें स्वीकार न थी। कविता का उनके लेखे प्रयोजन यह न था कि वह जीवन में सुभाषित की तरह पेश आए बल्कि वह मानव जीवन के दोषों को उजागर करे, उनका प्रक्षालन भी करे। उनकी कविता यही करती है। जैसा कि नागार्जुन की जीवन-शैली से स्पष्ट है, वे किसी भी विचार या विचारधारा के बजाय आम आदमी के पक्ष को अहमियत देते थे। इसलिए वे जीवन में किसी भी विचारधारा के वशीभूत नहीं रहे। प्रारंभ में वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने किन्तु भारत पर चीनी आक्रमण के बाद सदस्यता छोड़ दी। आपात काल में इंदिरा गाँधी के मुखर विरोधी रहे। जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रान्ति के पक्ष में आवाज उठाई और फणीश्वर नाथ रेणु के साथ जेल गए पर जब संपूर्ण क्रांति के नायकों का बिखराव देखा तो खिन्नहो विप्लव देखा हमने कह कर उपहास भी किया। विनोबा भावे से प्रसन्न हुए तो उन पर एक श्लोक शतक ही लिख दिया और उनका भी हश्र देखा तो हर गंगे कह कर आलोचना भी की। गाँधी की महिमा का स्तवन किया तो उन्हें धनकुबेर का अतिथि भी ठहराया। नेहरू भी उनके व्यंग्य के निशाने पर रहे। इस तरह कोई भी विचार या विचारधारा उन्हें देर तक अपने प्रभामंडल से बांध नहीं सकती थी।

किसी तरह का नायकत्व उनके लिए केवल अवलोकन और आलोचना से परे न था। लेकिन वे केवल व्यंग्य के कवि नहीं हैं,कविता के भीतरी सौंदर्य की उन्हें गहरी पहचान थी। बौद्ध दर्शन ने उन्हें जीवन में व्याप्त महाकरुणा का बोध कराया था। नागार्जुन शास्त्रज्ञ थे पर कविता का शास्त्र कैसा होना चाहिए यह उन्होंने इस महादेश की जनता के बीच रह कर रम कर जाना था। उनकी कविता में भाषा और बोलियों के जिस मिक्स्चर की बात अरुण कमल ने कही है, वही उनकी ताकत है। वह वह भाषा है जनता जिसके सर्वाधिक निकट है। इसी भाषा और ऐसे ही अटपटे रूप विधान में कविता के शिखर रचे जा सकते हैं। शास्त्र का हमेशा अनुपालन ही नहीं होता, उसे रचना और तोड़ना भी पड़ता है। तारानंद वियोगी की किसी बात पर नागार्जुन का यह कहना कि श्कोई शास्त्र आपको जीवन को समझने में थोड़े ही मदद करेगा। शास्त्र के अनुसार अगर वस्तु और स्थिति को देखिएगा तो फिसल कर गिरियेगा। यह बताता है कि वे शास्त्र के अंधानुकरण के हामी न थे। आचार्य शुक्ल ने अपने लेख श्काव्यकलाश् में ऐसी ही तैसीश् में संस्कृत आचार्यों के काव्यलक्षणों का निर्वचन करते हुए बाबा की स्वेच्छाचारिता के उदाहरण देते हुए जो बात कही है वह अंततः विचारणीय है कि वे काव्यशास्त्रानुसारी कवि न होकर लोकशास्त्रानुसारी कवि हैं। नागार्जुन ने अपनी कविता के स्वरूप को शास्त्रसम्मत बनाने के बजाय जरूरत के तई उसे तोड़ा, रचा और विकसित किया है। उन्होंने मैथिली में कविता? लिखीं, उपन्यास लिखे तो हिंदी की ठेठ जनभाषा में कविता? और उपन्यास भी। बांग्ला में भी उन्होंने प्रभूत संख्या में कविता? लिखीं। किन्तु हिंदी समाज में जनकवि के रूप में समादृत नागार्जुन को पहचान मैथिली काव्य से मिली। श्पत्रहीन नग्न गाछश् पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। हिंदी कविता में केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन और नागार्जुन की त्रयी मशहूर रही है। तीनों कवियों का जनता से गहरा नाता था। इनमें भी त्रिलोचन की कविता में अवधी का मिजाज मिलता है तो केदारनाथ अग्रवाल के यहाँ बुंदेली की आभा। नागार्जुन में मैथिली और भोजपुरी लोक की बोली बानी का स्वत्व समाया हुआ है। तीनों कवि छंद के वैभव और व्यवहार से वाकिफ थे, इसलिए उन्होंने जनता में ग्राह्य छंदों का प्रयोग किया। नागार्जुन अंग्रेजों की गुलामी के दौर में जन्मे थे। आजादी के लिए किए गए संघर्ष को खुली आँखों देखा था। इसलिए आजादी के बाद आजादी की व्यर्थता का अहसास भी उतनी ही तेजी से हुआ। जो खद्दर आजादी की लड़ाई में पवित्र संसाधनों में शुमार किया जाता था। इस तरह खद्दर की उजली रंगत के पीछे लोगों की नीयत के कालुष्य को नागार्जुन ने भलीभाँति पहचान लिया था। आजादी में एक महानायक के रूप में उभरे गाँधी के सत्य और अहिंसा के संदेश को इतनी जल्दी हमने भुला दिया कि बापू के तीनों बंदरों के माध्यम से दी गयी सीख हमारे लिए व्यर्थ हो गयी। बापू के तीनों बंदर बाद में क्या गुल खिलाने लगे यह नागार्जुन की कविता श्तीनों बंदर बापू केश्पढ़ कर जाना जा सकता है। यद्यपि नागार्जुन की प्रतिबद्धता किसी भी प्रकार जड़ीभूत न थी। उनकी लुम्पेन विचारधारा को लेकर अक्सर आलोचना? होती रही हैं, पर इसकी परवाह उन्हें न थी। बल्कि किसके प्रति प्रतिबद्ध हैं और किसके प्रति सम्बद्ध या आबद्ध, इसे उन्होंने खुल कर प्रकट किया है।

महिला का शव पशुबाड़े में मिलने पर समूचे ग्रामवासी दहशत में पुलिस प्रसाशन मौके पर

संवाददाता

बांदा। ग्राम पंचायत पड़मई में एक महिला की अज्ञात कारणों के चलते हत्या कर मृतका का शव पशुबाड़े में पड़ा मिला प्रात:काल परिजनों ने जब महिला को मृतावस्था में देखा तो समूचे परिवार में कोहराम मच गया आपको बतादें की मृतका का नामआशा कुशवाहा पति शारदा कुशवाहा उम्र लगभग 33 वर्ष है इनके पति शारदा कुशवाहा बेरोजगारी के चलते अपने परिवार के भरण पोषण हेतु मुम्बई मजदूरी करने चला गया है मृतका आशा के 3 बच्चे हैं जिसमें दो बच्चियों में एक का नाम शालिनी8वर्ष और दूसरी का नाम शिवानी 5वर्ष है तथा एक पुत्र है जिसका नाम अभिषेक 2 वर्ष का है। आशा के ससुर श्रीपाल कुशवाहा जो ग्राम पड़मई में ही मृतका के घर के बगल में ही बने दूसरे घर में सपरिवार रहते हैं जबकि आशा अपने बच्चों के साथ अलग मकान में रह रही थी जिसका रात्रि में किन्हीं अज्ञात लोगों ने दरवाजा खुलवाते हुये घर के पास बने पशुबाड़े में ले जाकर बेरहमी से गला दबाकर हत्या कर दी।गांव में हुयी इस हृदयविदारक घटना में मृतका का घर के बाहर पशुबाड़े में मृतावस्था में मिलने के कारण समूचे ग्राम में कई तरह की चर्चाओं का दौर जारी है। हत्या का कारण जानने पर परिजनों ने बताया कि विगत रात्रि में लगभग 10 बजे तक तो हम सब लोग साथ में थे उसके बाद हम सभी लोग अपने अपने कमरे में सोने के लिए चले गए और जब सुबह बच्चों ने देखा कि आशा उन्हें घर पर नहीं दिखाई दी तो अपने बाबा श्रीपाल को खबर दी सभी ने उसकी खोजबीन की तभी घर के पास ही बने पशुबाड़े में आशा का शव पड़ा हुआ मिला जिसकी जानकारी हम लोगों ने तत्काल नरैनी कोतवाली को दी जिसमें मौके पर पहुंची कोतवाली नरैनी पुलिस ने शव को कब्जे में लेते हुये कोतवाली नरैनी लेकर आयी उक्त घटनाक्रम की जानकारी मिलते ही मौके पर अपर एस पी बांदा , क्षेत्रधिकारी नरैनी, कोतवाली प्रभारी नरैनी भारी फोर्स के साथ घटना स्थल में पहुंच कर आवश्यक जांच की इसके साथ साथ घटना की स्थलीय जांच के लिए फ़ेरेंसिक टीम भी मौके पर पहुंची और बारीकी के साथ अपनी जांच शुरू कर दी है।इस अचानक हुयी घटना से समूचा परिवार दहशतजदा है तथा परिजनों में कोहराम मचा हुआ है जबकि कोतवाली नरैनी पुलिस तत्परता के साथ छानबीन करने पर जुट गयी है और उक्त घटनाक्रम का जल्द ही खुलासा करने का पूरा पूरा आश्वासन दिया है!

बबेरू तहसील के शिव मवई गांव में नहर विभाग की लापरवाही से कई सैकड़ा विगो की फसल पानी भरने से हुई बर्बाद

संवाददाता

बांदा। पूरा मामला जनपद बांदा के तहसील बबेरू अंतर्गत ग्राम शिव से सामने आया है जहां नहर विभाग मवई माइनर से किसानों की फसलों को जल भराव करके धान की लगभग 500 बीघा की फसल पूरी तरह से हुई चौपट किसान भुखमरी के कगार पर पहुंच रहे हैं किसानों ने अपने स्तर से कई बार संबंधित विभागीय व उच्च अधिकारियों को पत्र देकर गुहार लगाया लेकिन किसी ने नहीं सुनी तब शिव ग्राम के किसानों ने समाजसेवी पीसी पटेल जनसेवक को अवगत कराया समाजसेवी पीसी पटेल तत्काल शिव ग्राम के खेतों में पहुंचकर मौके पर खेतों पर हिल करके हकीकत देखी वही मीडिया के साथियों को बताया कि नहर की जो सिल्ट सफाई की जाती है उस पर घोर लापरवाही व भ्रष्टाचार किया गया है जिसके कारण माइनर मवई में छोड़ा गया जल नहर के ऊपर से उफान हो गया और लगभग तीन फिट से ऊपर किसानों की पकी धान की

फसल को चौपट कर दिया यही तक नहीं पका धान पानी में पडने से पुन: उसमें जन्म हो गया और बेड़ उग गई इससे किसान पूरी तरह चौपट और बर्बाद हो चुका है समाजसेवी पीसी पटेल जनसेवक कुछ जमा धान को लेकरके आज संपूर्ण समाधान दिवस तहसील दिवस बबेरू पहुंचकर समस्त कर्मचारियों अधिकारियों से मिलकर किसानो की बर्बाद हुई धान की फसल की सर्वे करते हुए उचित मुआवजा दिलाए जाने के लिए आग्रह निवेदन किया तथा मीडिया को बताया कि यदि अब भी लापरवाही की जाती है अधिकारियों की ओर से तो बड़ी संख्या में किसानों को लेकर जिला अधिकारी मुख्यालय पहुंचेंगे और अपनी मांगों को रखेंगे फिर भी किसानों को मुआवजा नहीं मिलता तो मजबूरन ग्राम शिव और मावई के किसानों के साथ समाजसेवी पीसी पटेल वह हर कदम उठाएंगे जो किसान हित में होंगे हालांकि संपूर्ण समाधान में उपस्थित अधिकारियों ने तत्काल नहर विभाग व राजस्व कर्मचारियों को निर्देशित किया है की तत्काल मौके में पहुंचे वहां की स्थिति देखें स्थिति देखकर रिपोर्ट देने की बात कही है जिससे किसानों को उनके नुकसान के भरपाई की जाए इस मौके पर समाजसेवी ने कहा कि अधिकारियों की कहीं ना कहीं मिली भगत है जिसके कारण नहर सिर्फसफाई में बड़ा भ्रष्टाचार सामने आया है यदि शील्ड सफाई पूर्णता मानक अनुसार हो जाती तो आज किसानों की यह फसलों का नुकसान नहीं होता धान की फसल का नुकसान तो हो ही गया लेकिन अभी आगे आने वाली फसलों के लिए खेतों में जब दो-दो मीटर पानी भरा है तो उम्मीद नहीं लगाई जा सकती समाजसेवी ने जिला अधिकारी महोदय बांदा संबंधित अधिकारियों सहित माननीय जनप्रतिनिधियों व माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश से गुहार लगाई है की टाट क्रम में तत्काल समिति गठित कर जांच कराई जाए और उन किसानों को तत्काल मुआवजा उपलब्ध कराया जाए यदि मुआवजा जल्द नहीं मिलता तो समाज से भी पीसी पटेल व साइकोग्राफ ग्रामीण मजबूर हो करके अनशन आंदोलन केलिए बाध्य होंगे।

अक्टूबर हुआ समाप्त,नहीं हो सकी गड्ढा मुक्त रोड़े सरकारी दावा हुआ हवा हवाई

संवाददाता, सीतापुर। जिला मुख्यालय पर स्थित नगर पालिका परिषद हो या ग्रामीण क्षेत्रों में सभी रोडों को इकतिस अक्टूबर 2024 तक गड्ढा मुक्त रोड इकतिस अक्टूबर तक बनाया जाना था, परन्तु आज भी सीतापुर नगर पालिका क्षेत्र में अग्रवाल पब्लिक स्कूल से पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष व पूर्व विधायक के घर तक सीतापुर मधवापुर मार्ग से मोहल्ला ब्रह्मपुरी वीरू मिश्रा के घर तक खैराबाद ब्लाक में मधवापुर चौराहे से गद्दीपुर बहादुरपुर तक रोड़े काफी पहले की बनी हुई थी।इन रोडो पर डामर व पतली गिट्टी गायब हो चुकी है ऐसे में गड्ढा मुक्त रोड़ अपने आप हो चुकी है।जब रोड पर से एक परत की डामर गिट्टी ही गायब हो गई है तो ऐसे में आम नागरिकों को मोटे पत्थरों वाली गिट्टी पर से सभी वाहनों को निकलना हो रहा है।सरकारें चाहें जिसकी रहीं हों।शहर के किनारे के मोहल्लों को केवल मतदान के समय मतदाताओं को याद किया जाता है। सुविधाओं के नाम पर बीस - बीस वर्ष पहले बन चुकी रोड़ों पर दोबारा डामर नहीं डाला गया।

नरैनी सिटी हॉस्पिटल का हुआ भव्य शुभारंभ

संवाददाता

बांदा। नरैनी से गोरेपुरवा के बीच मुख्य मार्ग में नरैनी सिटी हॉस्पिटल का नरैनी विधायक ओम मणि वर्मा जी के द्वारा किया गया। इस हॉस्पिटल का मुख्य उद्देश्य गरीबों की कम से कम खर्चे में मदद करना है यह प्रयास नरैनी के युवा चिकित्सकों गरीबों के मसीहा डॉव नदीम सिद्दीकी एवं डॉव अजहर सिद्दीकी द्वारा नरैनी तहसील के क्षेत्रवासियों की जटिल समस्याओं का निवारण करने हेतु किया गया जिसमें नरैनी क्षेत्र की समस्त जनता का इलाज कम खर्चे में एवं आपसी सहयोग के साथ किया जाएगा। अब जटिल बीमारियों का इलाज नरैनी में ही संभव है इसके लिए जल्दी उन्हें जनपद आने की आवश्यकता कम पड़ेगी अधिकतर इलाज इस क्षेत्र में अनुभवी चिकित्सकों के द्वारा किया जाएगा। विधायिका ओम मणि वर्मा ने इस हॉस्पिटल की सराहना की और कहा क्षेत्र की प्रगति में एक कदम और आगे बढ़ाने का अवसर मिला है। धीरे-धीरे क्षेत्र की हर समस्याओं का निवारण किया जाएगा इसके लिए हम संकल्पित और प्रतिबद्ध हैं उक्त कार्यक्रम में समाजसेवी शेख शादी जमा, एडवोकेट नियाजी जी, डॉवअरविंद झा, डॉवप्रदीप कुमार सिंह, डॉव नीलम सिंह, सेर्वस ऑफलाइफसे सलमान खान ,सुनील सक्सेना, एवं क्षेत्रीय नागरिक उपस्थित है।

दबंगों ने घर में घुसकर की मारपीट

पुलिस ने नहीं दर्ज किया मुकदमा

संवाददाता

बांदा। कोतवाली नगर क्षेत्र के बलखंडी नाका मोहल्ला के रहने वाली अंजली पत्नी मनोज कुमार ने पुलिस अधीक्षक को शिकायती पत्र देकर बताया कि दबंगों ने घर में घुसकर लोहे की राड व लाठी डंडा से हमला किया है जिससे घर के जेठ व भतीजे की गंभीर चोटें हैं पुलिस ने मुकदमा दर्ज नहीं किया। पीड़ित महिला ने आरोप लगाते हुए बताएं कि 1 नवंबर की रात 9. 00 बजे अपने घर में थी तभी जगमोहन पुत्र राम गोपाल अवधेश दुर्गेश आनंद मोहित सहित निर्मला सद्दाम पीड़िता के घर में घुसकर लाठी एवं लोहे की रॉड से हमला कर दिया जिससे पीड़िता के जेठ शिवचरण सास व भतीजे के पैर में सिर में गंभीर चोटें हैं पीड़िता की घर में खड़ी गाड़ी को भी तोड़ दिया सभी लोग एक राय होकर गाली गलौज करते हुए जाति सूचक शब्दों का प्रयोग किया पीड़िता व जेठानी

की साड़ी बुरी नीयत से पड़कर दबोचने का प्रयास किया कहां की तुम लोग हमारा कुछ नहीं कर सकते पीड़िता ने जिसकी शिकायत लेकर थाने गई तो पुलिस ने थाने से भगा दिया जेठ व भतीजे को अस्पताल लेकर गई तथा उनकी डाक्टरी परीक्षण भी कराया पीड़िता थाने दुबारा गई लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की 4 नवंबर सुबह 8.30 बजे दोबारा दबंगों द्वारा घर में पत्थर मारने लगे और घर की औरतों को बुरी बुरी गालियां देने लगे पीड़िता ने मना किया तो घर के अंदर घुसकर बाल पकड़ते हुए कहा कि रिपोर्ट करने थाने जाती हो लेकिन हमारे खिलाफ पुलिस कोई कार्रवाई नहीं करेगी क्योंकि हमने पुलिस को मिला लिया है हमारी पकड़ ऊपर तक है इसलिए हमारे खिलाफकोई कार्रवाई नहीं होगी पीड़िता सोमवार को पुलिस अधीक्षक को शिकायती पत्र देकर मुकदमा दर्ज कराकर कार्रवाई की मांग की है।

यातायात माह नवंबर 2024 का हुआ भव्य शुभारंभ

संवाददाता

बांदा। आयुक्त चित्रकूट धाम मंडल बांदा बालकृष्ण त्रिपाठी एवं पुलिस उप महानिरीक्षक अजय कुमार सिंह ,जिलाधिकारी नगेंद्र प्रताप एवं पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल ने संयुक्त रूप से यातायात माह नवंबर 2024 का शुभारंभ बाबूलाल चौराहे पर यातायात जागरूकता रैली को फीता काटकर तथा हरी झंडी दिखाकर कियास इस अवसर पर उन्होंने बिना हेलमेट लगाए वाहन संचालित करने वाले लोगों को हेलमेट का वितरण भी कियास यातायात जागरूकता कार्यक्रम मे संबोधित करते हुए आयुक्त चित्रकूटधाम मंडल बांदा श्री बालकृष्ण त्रिपाठी ने कहा कि यह कार्यक्रम पूरे मंडल के प्रत्येक थाने में चलाया जा रहा है, जिससे सड़क दुर्घटनाओं में लोगों की जान माल की रक्षा हो सके और यातायात के नियमों के प्रति लोगों में जागरूकता उत्पन्न होस, उन्होंने कहा कि यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम हैस, सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने हेतु सभी का सहयोग आवश्यक है ।, उन्होंने कहा कि जान है तो जहान है इसलिए सभी लोग यातायात नियमों का पालन करते हुए वाहनों का संचालन करेंस, सड़क दुर्घटना में प्रतिदिन दर्दनाक घटनाएं होती हैं जिससे जनहानि हो रही हैस, उन्होंने कहा कि सुरक्षित यात्रा करें तथा वाहनों का संचालन करते समय गति नियंत्रित रखें और वाहन संचालन करते समय यातायात नियमों का पालन करते हुए वाहन चलाएंस यातायात संकेतको को अवश्य ध्यान देते हुए वाहनों का संचालन करें तथा सीट बेल्ट एवं दोपहिया वाहन का संचालित करते हुए हेलमेट अवश्य लगे अपने जीवन को सुरक्षित रखें पुलिस उपमहानिरीक्षक अजय कुमार सिंह ने कहा कि मानव जीवन अमूल्य है, इसको सुरक्षित रखना आवश्यक है, सुरक्षित परिवहन का आवागमन हो तथा सड़क दुर्घटना में कमी लाने के लिए लोगों में जागरूकता के लाने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया रहा स सड़क दुर्घटनाओं में काफी अधिक लोगों की मृत्यु हो रही हैस उन्होंने छात्र-छात्राओं में जागरूकता लाने के साथ ही अन्य लोगों को भी जागरूक करने का आवाहन कियास, तेजगति वाहन संचालन ना करें तथा वाहन संचालित करते समय हेलमेट एवं सीट बेल्ट का उपयोग आवश्यक करें तथा यातायात नियमों का विशेष ध्यान रखें इसके साथ ही अन्य लोगों को जागरूक करने में सहयोग प्रदान करें जिलाधिकारी नगेंद्र प्रताप ने कहा कि छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए ,बिना लाइसेंस के कोई भी छात्र वाहन नहीं चलाएंस, उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटना में अन्य बीमारी आदि से अधिक लोगों की मृत्यु हो रही है यह एक चिंता का विषय है, जिस पर लोगों में जागरूकता लाकर सड़क दुर्घटनाओं में कभी लाना आवश्यक है, इस हेतु यातायात नियमों के प्रति सभी को जागरूक होना चाहिए तथा यातायात नियमों का पालन करते हुए वाहन संचालित करने चाहिए कोई भी व्यक्ति नशे में वाहन संचालित ना करें जिससे सड़क दुर्घटनाएं विशेष रूप से होती हैंस बिना लाइसेंस के एवं कम उम्र के बच्चे वाहनों को संचालित ना करें पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल ने बताया कि प्रतिवर्ष

की भांति यातायात माह 1 नवंबर से 30 नवंबर ,2024 तक संचालित किया जा रहा है, जिसमें छात्र एवं लोगों को यातायात नियमों की जानकारी दिए जाने के साथ उन्हें सुरक्षित आवागमन के लिए बताया जाएगा तथा बिना हेलमेट एवं सीट बेल्ट लगाए लोगों की चेकिंग भी कर उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगीस, उन्होंने कहा कि वाहनों की गति को नियंत्रित रखते हुए वाहन संचालित करेस, दो पहिया वाहन का संचालन करते समय हेलमेट अवश्य लगे तथा चार पहिया वाहन संचालन में सीट बेल्ट आवश्यक उपयोग में लाएं इस अवसर आयुक्त सहित सभी अधिकारियों ने संयुक्त रूप से बिना हेलमेट लगाए वाहन संचालन करने वालों में अजय कुमार, देवेश , अंगद ,मान सिंह , फैसल अन्य व्यक्तियों को हेलमेट का वितरण भी कियास कार्यक्रम पर पुलिस अधीक्षक शिवराज, क्षेत्राधिकारी सदर अजय कुमार सिंह, आरआई पुलिस लाइन,पंकज कुमार सिंह कोतवाली निरीक्षक, टीआई राजेश चंद्र मिश्रा, राकेश मिश्रा चौकी प्रभारी अलीगंज तथा पीटीओ रामसुमेर यादव परिवहन विभाग, सुनील सक्सेना (समाज सेवी) सदस्य जिला स्तरीय समन्वय समिति दुर्घटना जांच समिति, ट्रक एसोसिएशन से जगराम सिंह, मास्टर ट्रेनर पीयूष मिश्रा आदि अधिकारीगण उपस्थित रहे।

घर खाली करवाने को लेकर चाचा ने भतीजी, भाई पर किया प्राण घातक हमला

संवाददाता, फर्रुखाबाद/कमालगंज। घर खाली करवाने को लेकर चाचा ने भतीजी और भाई पर हमला कर दिया। टकोरा लगने से भतीजी व बीच बचाव करने आए बाबा व बुआ भी गंभीर रूप से घायल हो गई। घायल ई-रिक्शा से थाने पहुंचे, जहां से सभी घायलों को उपचार हेतु कमालगंज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेज दिया गया। कमालगंज थाना क्षेत्र के नगरिया गहरवान निवासी शालिनी ने थाने में तहरीर देते हुए बताया कि उनके चाचा जबरन मकान पर कब्जा करना चाहते है। जिसको लेकर मारपीट करते रहते है स शाम को चाचा शक्ति सिंह व सौदान सिंह ने टकोरा, भाला लेकर उनके साथ मारपीट कर दी। जिसमें बुआ और बाबा भी गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस पूरे मामले में जांच पड़ताल कर रही है ।

मोंहगवा के प्रधान शैलेन्द्र यादव सहित 5 प्रधान अनुश्रवण समिति की बैठक में होंगे शामिल

संवाददाता, रायबरेली । बचत भवन में होने वाली जिला विकास समन्वय एवं अनुश्रवण समिति दिशा की बैठक सांसद राहुल गांधी की अध्यक्षता में आज आयोजित होगी । बैठक में सभी विभागों के जिलास्तरीय अधिकारियों के अतिरिक्त विधायकों, ब्लाक प्रमुखों के साथ ही विशेष रूप से नामित सदस्य शामिल होंगे । उल्लेखनीय है कि अध्यक्ष राहुल गांधी के द्वारा नामित राही ब्लाक की मोंहगवा ग्राम पंचायत के प्रधान शैलेंद्र यादव, महराजगंज के पखनपुर की संगीता पासी, दीनशाह गौरा की धमधमा के अब्दुल मोसिन अंसारी, खीरों के निहस्था की नेहा सिंह, बछरावां के भैरमपुर के उमेश बहादुर 3 अन्य नामित लोग भी विशेष रूप से बैठक में शामिल होंगे । जिला ग्राम्य विकास अभिकरण के परियोजना निदेशक राजेश मिश्रा ने सभी के शामिल होने को लेकर पत्र जारी कर यह जानकारी दी ।

अनियंत्रित कार ने मोटरसाइकिल में मारी टक्कर, मोटरसाइकिल सवार होमगार्ड व उसका साथी हुआ घायल, एक की हुई मौत

संवाददाता, शमसाबाद। अनियंत्रित कार ने मोटरसाइकिल में टक्कर मार दी। जिससे मोटरसाइकिल सवार होमगार्ड एवं उसका साथी घायल हो गया। इसके बाद कार पेड़ से टकरा गई। उसमें सवार युवक भी घायल हो गया। इस दौरान चालक कार छोड़कर फरार हो गया। ग्रामीणों ने घायलों को एंबुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नवाबगंज भे जा। चिकित्सक ने एक को मृत घोषित कर दिया। फैजबाग पुलिस चौकी क्षेत्र के अंतर्गत गांव कुइया खेड़ा निवासी होमगार्ड दिनेश चंद फर्रुखाबाद के मोहल्ला सलावत खान निवासी 55 वर्षीय रिश्तेदार राजकुमार के साथ मोटरसाइकिल से फर्रुखाबाद जा रहे थे। कायमगंज फर्रुखाबाद मार्ग पर गांव दलेल गंज के पास सामने से आ रही कार ने मोटरसाइकिल के जोरदार टक्कर मार दी। जिससे दोनों लोग घायल हो गए। चालक के भागने का प्रयास किया तो कार अनियंत्रित होकर जय गंगवार के ईट भट्ठे के पास एक पेड़ से टकरा गई। जिससे उसमें सवार एक युवक भी घायल हो गया। चालक भाग गया। ग्रामीणों ने घायलों को एंबुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नवाबगंज भेजा। वहां चिकित्सक ने घायल राजकुमार को मृत घोषित कर दिया। और होमगार्ड दिनेश को लोहिया अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। पुलिस ने रात में ही राजकुमार के शव को पोस्टमार्टम हाउस भिजवा दिया। थाना अध्यक्ष तरुण सिंह भदोरिया ने बताया कि अभी किसी तरफसे प्रार्थना पत्र नहीं आया है। दोनों वाहनों को कब्जे में ले लिया गया है। कार्रवाई की जाएगी।

कस्बा शमसाबाद में आयोजित जलसा दीनी तालीमी कांफ्रेंस एवम दस्तारबंदी का हुआ आयोजन

संवाददाता, शमसाबाद। शमशाबाद में आयोजित जलसा दीनी तालीमी कॉन्फ्रेंस एवं दस्तारबंदी का आयोजन किया गया। जिसमे वक्ताओं ने लोगों को अमन एवं मोहब्बत का पैगाम दिया। जलसे के मुख्य अतिथि सैयद मसूद असद मदनी ने कहा कि हमें अपना मिजाज अदावती नहीं दावती रखना चाहिए। पड़ोसन के साथ अच्छा सलूक करें। और अपनी तरफसे मोहब्बत की पहल करें। उन्होंने कहा कि जो मुर्दाबाद का नारा नहीं सुन सकता उसको जिंदाबाद का नारा सुनने का भी हक नहीं है। इस मौके पर मुफ्ती जफर अहमद कासमी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

जुएं के फड़ पर एक युवक हाथ में तमंचा लेकर गाली गलौज करता हुआ, वीडियो सोशल मीडिया पर हुआ वायरल

संवाददाता, शमसाबाद। दो गांव में 3 दिन से जुआ के फड़ लग रहे हैं। एक फड़ पर एक युवक हाथ में तमंचे लेकर गाली गलौज कर जान से मारने की धमकी दे रहा है। इस युवक का वीडियो शनिवार को इंटरनेट मीडिया पर प्रचलित हो रहा है। इस वीडियो की यह समाचार पत्र पुष्टि नहीं करता है। एक जुआरी को पड़कर थाने से छोड़ने की चर्चा हो रही है। शमशाबाद थाना क्षेत्र के गांव जैतपुर में सड़क के किनारे जुआ हो रहा है। जिसमें एक युवक हाथ में तमंचा लेकर जीत रहे जुआरिओ से रुपए वसूलने के लिए फायर करने की धमकी दे रहा है। इस युवक का इंटरनेट मीडिया पर वीडियो वायरल हो रहा है । इस वीडियो की यह समाचार पत्र पुष्टि नहीं करता है। मौके पर मौजूद ग्रामीणों का कहना है कि तीन दिनों से खुलेआम जुआ हो रहा है। पुलिस इन जुआरियो कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। इन लोगों के राजनीतिक लोगों से संबंध हैं। क्षेत्रीय पुलिस भी इन जुआरियो की मदद करती है। उधर कस्बा क्षेत्र के मोहल्ला मीरा दरवाजा में जुआ खेलने के आरोप में एक युवक को पकड़ कर पुलिस ले गई। बाद में उसे थाने से छोड़ दिया गया। थाना अध्यक्ष तरुण सिंह भदोरिया ने बताया कि जुआ खेलने के दौरान तमंचा लिए युवक की पुलिस तलाश कर रही है। जुआरी को थाने से छोड़े जाने की जानकारी नहीं है। इस मामले में जानकारी की जा रही है। संबंधित पुलिसकर्मी के खिलाफकार्रवाई कराई जाएगी।

पत्रकारो ने जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर प्रदर्शन कर जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन भेजा

संवाददाता, बांदा। राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद के बैनर तले पत्रकारों ने कलक्ट्रेट में किया जोरदार प्रदर्शन, जिलाधिकारी के माध्यम से सौंपा मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन, फतेहपुर में पत्रकार दिलीप सैनी की दबंगो द्वारा की गई निर्मम हत्या व हमीरपुर में पत्रकार को बंधक बनाकर नग्न कर की गई पिटाई पर जताया विरोध, दोनो घटनाओं पर ठोस कार्रवाई कर अपराधियों के ऊपर शिकंजा कसने की उठाई मांग, मृतक पत्रकार के परिवार को मुआवजा सहित सरकारी नौकरी देने की उठाई मांग, हमीरपुर में पत्रकार के साथ हुए दुर्व्यवहार पर प्रसाशन तत्काल करे कठोर कार्रवाई, मामला पत्रकारों के घटित घटनाओं के प्रदर्शन से जुड़ा है। इस मौके पर मदन गुप्ता जिलाध्यक्ष राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद बांदा, प्रदेश उपाध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी, नीरज निगम युवा बिंग जिलाध्यक्ष,रुपा गोयल महिला जिलाध्यक्ष , भगत सिंह वरिष्ठ पत्रकार,बालेंद्र तिवारी पूरन राय, कुलदीप त्रिपाठी, राजेन्द्र मिश्रा, आमोद कुमार, अमर सिंह,गुड्डन खान, आसिफ अली, मोहित पाल, सत्यनारायण निषाद, मितेश, दुर्गेश, दिलीप जैन, शुभम् सिंह राजकुमार,सानू , राहुल सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

कु0महक की सफलता से प्रेरणा लेंगे सभी बच्चे - धीरेन्द्र प्रताप सिंह

संवाददाता

तिलोई-अमेठी। बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों की विद्यालय स्तर पर राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अन्तर्गत विज्ञान माडल प्रदर्शनी एवं क्विज प्रतियोगिता सम्पन्न करायी गयी।प्रत्येक विद्यालय से चयनित 3 बच्चों को ब्लाक स्तर पर प्रतिभाग कराया गया।कम्पोजिट विद्यालय भेलाई कला,तिलोई-अमेठी से कु0 महक ने ब्लाक स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त करके विद्यालय का नाम रोशन किया।जनपद स्तर पर भी कु0महक ने राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अन्तर्गत विज्ञान माडल प्रदर्शनी एवं क्विज प्रतियोगिता में सराहनीय प्रदर्शन किया।कम्पोजिट विद्यालय जनापुर,तिलोई-अमेठी के छात्र अर्जुन ने जनपद स्तरीय क्विज प्रतियोगिता में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया था।प्रभारी प्रधानाध्यापक बृजेश

कुमार सहित समस्त स्टाफ का सहयोग सराहनीय रहा। प्रधानाध्यापक धीरेन्द्र प्रताप सिंह प्रदेश उपाध्यक्ष एवं जिलाध्यक्ष ,उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ-अमेठी ने प्रतियोगिता में सराहनीय कार्य हेतु विज्ञान शिक्षिका रजिया बानो की सराहना एवं प्रशंसा किया।विद्यालय का नाम रोशन करने के लिये कु0महक को प्रधानाध्यापक ने माला पहनाकर,शील्ड एवं उपहार देकर सम्मानित किया।इस अवसर पर विद्यालय की शिक्षिकाएं अमिता जायसवाल,रजिया बानो,शशि कुमारी सिंह,प्राची श्रीवास्तव,सरिता सिंह,पल्लवी श्रीवास्तव,सुचित्रा सती एवं प्रभावती-अनुचर उपस्थित रहीं।

गहवार क्षत्रिय समाज के अपने स्वर्णिम इतिहास को जानें क्षत्रिय युवा

संवाददाता

कुशीनगर। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में भगवान बुद्ध की परिनिर्वाण स्थली पर आज से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व इलाहाबाद के पास स्थित कड़ा मानिकपुर के गहवार वंश के क्षत्रिय मुगल काल में मझौली रियासत में आए वहां से राजा मझौली ने उन्हे इस क्षेत्र में स्थापित होने को कहा। गहरवार वंश के मुखिया भूपाल राय अपने स्वजातिय बंधुओं के साथ यहां आए और यहां बस गए। अपनी योजनावद्ध रणनीति व सैन्य शक्ति के बल पर उन्होनें जगदीशगढ़ रियासत की नींव डाली और यही से गहरवार वंश की पृष्ठभूमि इस जमी पर तैयार होने लगी। धीरे-धीरे इस क्षेत्र में सखवनिया, शिवराजपुर, विशुनपुरा, लक्ष्मीपुर व सेमरा हर्दो में गहरवार वंश के क्षत्रिय स्थापित हुए और यह क्षेत्र रायकर ,रैकड़ के नाम से जाना जाने लगा। उक्त बाते अखिल भारतीय गहरवार महासभा द्वारा महात्मा गांधी इंटर कॉलेज सखवनिया के बाबू बंशराज सिंह गहरवार सभागार में आयोजित दीवाली मिलन समारोह में शिव प्रताप नारायण सिंह गहरवार ने कही। कार्यक्रम के दौरान सेवानिवृत शिक्षाविद् रुद्र प्रताप नारायण सिंह ने कहा कि गहरवार क्षत्रिय समाज के लोग खास कर युवा अपने स्वर्णिम इतिहास को जाने । जिससे वह क्षत्रिय समाज में अपनी मजबूत पहचान बना सके। क्षत्रिय समाज के प्रत्येक युवा को अपने पूर्वजों जैसे गोविद चंद, राजा मानिकचंद, दादू राय, राजा छत्रसाल बुंदेला, भुपाल राय, बलभद्र राय, किशोर राय, भीमचंद राय समेत अनेक महापुरुष है जो हमारे प्रणेता है उनके बारे में जानना होगा। कार्यक्रम को दिनेश सिंह गहरवार, अनिल सिंह गहरवार, देवेन्द्र प्रताप सिंहए मदन सिंह, अशोक सिंह, मंकेश्वर सिंह, जयप्रकाश सिंह आदि ने संबोधित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष शैलेन्द्र सिंह गहरवार ने सभी का आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि हम सभी गहरवार क्षत्रियों को मिलकर क्षत्रिय समाज की मजबूती पर जोर देना होगा। कार्यक्रम का संचालन एमके एस राठौर ने किया। कार्यक्रम में भाष्कर सिंह, प्रभाकर सिंह, सुगम सिंह, ठाकुर सत्यम सिंह, मुकेश सिंह, ध्रुव नारायण सिंह, शरद सिंह, प्रवीण सिंह, राजीव सिंह, राकेश सिंह, सत्यजीत सिंह, अंशुमान सिंह, शिवम सिंहए, ब्रजेश प्रताप नारायण सिंह, स्नेह सिंह, गुड्डू सिंह, अजय कुमार सिंह, जवाहर सिंह समेत गहरवार वंशीय क्षत्रिय मौजूद रहे।

विसर्जन स्थल मथुरा नहर का डीएम ने किया निरीक्षण

संवाददाता

बहराइच। सम्पूर्ण समाधान दिवस से लौटते समय जिलाधिकारी मोनिका रानी ने तहसील नानपारा के ब्लाक बलहा अन्तर्गत ग्राम पंचायत सिसवारा में स्थित मथुरा नहर का निरीक्षण कर श्री गणेशज्ञ एवं श्री लक्ष्मी मूर्ति विसर्जन का जायजा लेते हुए मौके पर मौजूद खण्ड विकास अधिकारी बलहा संदीप कुमार को निर्देश दिया कि नगर के अन्दर व बाहर साफ-सफाई कराते रहें तथा सुरक्षा के दृष्टिगत आवश्यकतानुसार बैरीकेटिंग भी लगा दी जाय तथा विसर्जन स्थल पर प्रकाश हेतु भी माकूल बन्दोबस्त किये जाएं। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी मुकेश चन्द्र, मुख्य राजस्व अधिकारी देवेन्द्र पाल सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी मौजूद रहे।

उधना जंक्शन की चुनौती सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई

संवाददाता

गोरखपुर। दिवाली और छठ पर्व की भीड़ (24 अक्टूबर से 04 नवम्बर, 2024 तक) के दौरान, उधना में निम्नलिखित कदम उठाए गए। ट्रेनें चलाई गईंरू दिवाली और छठ त्योहार की भीड़ के दौरान उधना में यात्रियों की मांग को पूरा करने के लिए रेलवे ने कुल 104 ट्रेनें चलाईं। इनमें से 44 ट्रेनें हॉलिडे स्पेशल थीं, जो उधना से शुरू हुईं और इनमें से लगभग 1/3 पूरी तरह से अनारक्षित ट्रेनें थीं, जो सामान्य श्रेणी में यात्रा करने वाले यात्रियों की मांगों को पूरा करती थीं। 1,60,000 से अधिक यात्री दिवाली और छठ मनाने के लिए अपने परिवार के सदस्यों के साथ अपने गंतव्य तक यात्रा करने में सक्षम थे। 03 नवम्बर, 2024 को लगभग 31,000 यात्रियों को उधना जंक्शन से उनके गंतव्य तक पहुँचाया गया। स्टेशन पर उपलब्ध की गई सुविधाएँरू सूरत से उधना तक दो शिफ्टों में 50 लाइसेंस सहायक तैनात किए गए हैं। विशेष ट्रेनों को प्रदर्शित करने वाले सूचना बैनरध्स्टैंड प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किए गए हैं। उधना में सभी प्रवेशध्निकास बिंदुओं पर 20-40 टिकट जाँच कर्मचारी चौबीसों घंटे तैनात किए गए हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए होल्डिंग क्षेत्र में विशेष टिकट खिड़की। आवश्यकतानुसार 15 शिफ्टों में 5 अतिरिक्त टिकट काउंटर संचालित किए जा रहे हैं और त्यौहारों के दौरान अतिरिक्त 03 रात्रि शिफ्ट संचालित की जाएँगी। 17 अतिरिक्त टिकट बुकिंग कर्मचारी तैनात किए गए हैं। दिवालीध्छठ पूजा के दौरान अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त 1 एटीवीएम प्रदान किया गया। भीड़ और भीड़भाड़ को कम करने के लिए उठाए गए कदमरू पश्चिम रेलवे ने 08 नवम्बर, 2024 तक प्लेटफॉर्म टिकटों की बिक्री पर अस्थायी प्रतिबंध लगा दिया है। इस कदम का उद्देश्य प्लेटफॉर्म पर भीड़ को नियंत्रित करना और स्टेशन परिसर के भीतर यात्रियों की सुचारू आवाजाही सुनिश्चित करना है। सामान ले जाने के लिए निरूशुल्क भत्ते का सख्त अनुपालनरू प्रत्येक यात्री को सामान ले जाने की निरूशुल्क अनुमति है, जिससे वे बिना किसी अतिरिक्त लागत के अपने डिब्बे में सामान की एक निर्दिष्ट मात्रा ले जा सकते हैं। निरूशुल्क भत्ता यात्रा की विभिन्न श्रेणियों के लिए अलग-अलग होता है। यदि सामान सीमांत निरूशुल्क भत्ते से अधिक है, तो तदनुसार जुर्माना लगाया जाएगा। यह ध्यान दिया जा सकता है कि स्कूटर, साइकिल आदि जैसे सामानों या 100 सेमी इ 100 सेमी इ 70 सेमी के अधिकतम आयाम वाले माल के लिए निरूशुल्क भत्ता स्वीकार्य नहीं है। पार्सल प्रबंधनरू यह देखा गया है कि ट्रेनों में लोडिंग के लिए प्लेटफार्मों पर रखे गए पार्सल की मात्रा यात्रियों की आवाजाही में असुविधा का कारण बनती है। यात्रियों की सुरक्षा और संरक्षा बढ़ाने के लिए, पश्चिम रेलवे ने निर्धारित ट्रेन प्रस्थान से पहले प्लेटफार्मों पर पार्सल खेप को लंबे समय तक रखने से बचने के निर्देश जारी किए हैं। इसे तत्काल प्रभाव से 08.11.2024 तक लागू किया गया है। कतार प्रबंधनरू यात्रियों की अतिरिक्त आमद को नियंत्रित करने के लिए, अतिरिक्त आरपीएफ और जीआरपी कर्मियों को तैनात किया गया है, ताकि यात्रियों को किसी भी दुर्घटना से बचने के लिए कतार में सुविधाजनक तरीके से प्लेटफॉर्म तक पहुंचने में मदद मिल सके। स्टेशन पर अतिरिक्त 41 टिकट चेकिंग स्टाफ 85 आरपीएफस्टाफ, 140 जीआरपी और 60 आरएसपीएफ स्टाफ तैनात किए गए हैं। होल्डिंग एरियारू जिला प्रशासन द्वारा लोगों को स्टेशन क्षेत्र में भेजने से पहले उन्हें रोकने के लिए दो नए होल्डिंग एरिया और एक प्रवेश मार्ग को बंद रखा गया है। स्टेशनों पर यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने के लिए होल्डिंग एरिया पर्याप्त आकार के हैं। उधना स्टेशन पर, होल्डिंग एरिया 2700 वर्ग फीट (स्टेशन बिल्डिंग के पास), 10125 वर्ग फीट (पार्किंग के पास) और 3150 वर्ग फीट (स्टेशन के पूर्व की ओर) हैं। यात्रियों के लिए आरामदायक प्रतीक्षा के लिए इन क्षेत्रों में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था और पंखे लगे हैं। शौचालय की सुविधा के साथ-साथ पेयजल की सुविधा भी प्रदान की गई है। होल्डिंग एरिया के अंदर सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली उपलब्ध है, जो प्रतीक्षारत यात्रियों को ट्रेन की गतिविधियों के बारे में अपडेट रखेगी। यह क्षेत्र प्लेटफॉर्म पर प्रतीक्षारत यात्रियों की संख्या को कम करेगा और यात्रियों के लिए सुरक्षित और सुगम यात्रा सुनिश्चित करते हुए ट्रेनों में यात्रियों के सुगम प्रवेश की अनुमति देगा। इसके अलावा, टिकट चेकिंग स्टाफ, आरपीएफ और जीआरपी स्टाफ सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से यात्रियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करनारू देश के उत्तरी राज्यों की ओर जाने वाली ट्रेनों, विशेष रूप से जनरल और स्लीपर कोचों में भीड़ को नियंत्रित करने और उन्हें आरामदायक यात्रा की सुविधा प्रदान करने के लिए अतिरिक्त आरपीएफ और जीआरपी कर्मियों, स्काउट और गाइड, एनसीसी और अन्य स्वैच्छिक समूहों को तैनात किया गया है। इसके अलावा, आरपीएफ और जीआरपी की सादे कपड़ों में सीपीडीएस (अपराध रोकथाम और जांच दल) टीमें किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर नजर रखने और चोरी को रोकने के लिए स्टेशनों पर सक्रिय रूप से गश्त कर रही हैं। भीड़ पर कड़ी नजर रखने के लिए, स्टेशनों पर चौबीसों घंटे सीसीटीवी निगरानी सक्रिय की गई है। स्टेशन परिसर की लगातार निगरानी के लिए समर्पित कर्मचारियों को नियुक्त किया गया है, और किसी भी विशिष्ट क्षेत्र में भीड़ का घनत्व बढ़ने पर फील्ड इकाइयों को सतर्क कर दिया जाएगा।

जनपद में धान खरीद कार्य का डीएम मोनिका रानी ने किया शुभारम्भ

संवाददाता

बहराइच। खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 अन्तर्गत मूल्य समर्थन योजना के तहत 01 नवम्बर 2024 से प्रारम्भ होने वाली धान खरीद का जिलाधिकारी मोनिका रानी ने शुभारम्भ किया। डीएम ने अपर जिलाधिकारी गौरव रंजन श्रीवास्तव के साथ कृषि उत्पादन मण्डी समिति परिसर सलारपुर पहुंचकर विधिवत् पूजा-अर्चना के उपरान्त फीता काटकर क्रय एजेन्सी खाद्य एवं रसद विभाग के धान क्रय केन्द्र का उदघाटन किया। धान क्रय केन्द्र पर ग्राम जोहरा, नसरापुर, पकड़ीकला व कमोलिया के मौजूद कृषक हेमन्त वर्मा, ध्रुव नारायण सिंह, राम दयाल शुक्ला व कुंवर बहादुर पांडे को अपर जिलाधिकारी ने पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि किसी भी केन्द्र पर किसानों को कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए। शासन की मंशानुरूप किसानों को सभी सुविधाएं उपलब्ध करायी जायें। आवश्यकतानुसार क्रय केन्द्रों पर संसाधनों की बढ़ोत्तरी भी की जाय ताकि किसानों की उपज को आसानी के साथ खरीदा जा सके। डीएम ने क्रय केन्द्र के प्रभारी विपणन निरीक्षक देवेन द्विवेदी व किसानों से धान की क्वालिटी के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए उपज की तौल करायी तथा किसानों से अपील की है कि अपनी उपज धान को सूखा कर क्रय केन्द्र पर लाये तथा बिक्री हेतु शासन द्वारा निर्धारित पोर्टल एफएसीएस डाट यूपी डाट जीओवी डाट इन पर अपना पंजीकरण अवश्य करा लें ताकि तहसीलों द्वारा समय से सत्यापन की कार्यवाही की जा सके। इस अवसर पर जिला खाद्य एवं विपणन अधिकारी रूपेश सिंह, सचिव मण्डी समिति बहराइच धनन्जय सिंह सहित अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

तहसील मोतीपुर में डीएम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ सम्पूर्ण समाधान दिवस

संवाददाता

बहराइच। आमजन की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के लिए जनपद की समस्त तहसीलों में सम्पूर्ण समाधान दिवस आयोजित हुआ। तहसील मिहींपुरवा (मोतीपुर) में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में जिलाधिकारी मोनिका रानी ने मुख्य विकास अधिकारी मुकेश चन्द्र, उप जिलाधिकारी संजय कुमार, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. संजय कुमार, तहसीलदार अम्बिका चौधरी व अन्य अधिकारियों के साथ जनसमस्याओं की सुनवाई करते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। डीएम द्वारा सभी सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिये गये कि जनसमस्याओं का निस्तारण समयबद्धता और गुणवत्ता के साथ करें। निस्तारण में अनावश्यक हीला-हवाली को अत्यन्त गम्भीरता के साथ लिया जाएगा। डीएम ने निर्देश दिया कि न्यायालय द्वारा निर्णित प्रकरणो में समय से पैमाइश सुनिश्चित की जाय। डीएम ने सचेत किया कि ऐसे प्रकरणों में यदि किसी प्रकार के विलम्ब की शिकायत मिलती है तो सम्बन्धित को निलम्बित करने की कार्यवाही की जाएगी। डीएम ने कहा कि अतिक्रमण से मुक्त कराये गये मार्गों, सार्वजनिक स्थानों इत्यादि पर दोबारा कब्जे की शिकायत मिलने पर सम्बन्धित के विरूद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराते हुए नियमानुसार कार्यवाही की जाय। उल्लेखनीय है कि तहसील मिहींपुरवा (मोतीपुर) में प्राप्त 44 में 05, नानपारा में प्राप्त 23 में 02,

पयागपुर में प्राप्त 27 में 03, कैसरगंज में 39 में 06, महसी में 28 में 02, सदर बहराइच में 12 में 02 का निस्तारण मौके पर किया गया। इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी राज कुमार, परियोजना अधिकारी डीआरडीए अरूण कुमार सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी रमा शंकर, जिला प्रोबेशन अधिकारी विनोद राय, दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी बी.पी. सत्यार्थी, जिला पूर्ति अधिकारी नरेन्द्र तिवारी, जिला गन्ना अधिकारी आनन्द शुक्ला, जिला कार्यक्रम अधिकारी राजकपूर, जिला कृषि अधिकारी सूबेदार यादव, सहायक निदेशक मत्स्य डॉ. जितेन्द्र कुमार, जिला पंचायत राज अधिकारी राघवेन्द्र द्विवेदी, पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी मंजरी भारद्वाज सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी, बीडीओ, बीईओ, सीडीपीओ व थानाध्यक्षगण मौजूद रहे।

सुचिता एवं पारदर्शिता के साथ करे प्रार्थना पत्रों का करें निष्पक्ष निस्तारण : विशाल भारद्वाज

संवाददाता

कुशीनगर। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में जिलाधिकारी विशाल भारद्वाज की अध्यक्षता व पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्रा की उपस्थिति में आज तहसील कसया के सभागार में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम जिलाधिकारी द्वारा लगभग सुबह 11.30 बजे जनपद स्तरीय अधिकारियों की उपस्थिति का निरीक्षण किया किया गया। जिसमे जिला उद्यान अधिकारी, जिला विद्यालय निरीक्षक , बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी, अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कसया तथा फजिलनगर, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी गैरहाजिर मिलें जिसपर जिलाधिकारी द्वारा नाराजगी प्रकट की गई एवं निरीक्षण के समय अनुपस्थित लोगों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए। हालांकि बाद में कुछ अधिकारीगण विलंब से उपस्थित हुए। जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक द्वारा सर्वप्रथम संपूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर सभागार में आए हुए जनताध् फरियादियों की समस्याओं व शिकायतों को बारी -बारी से गम्भीरता के साथ सुनने के उपरान्त विभागीय अधिकारियों के माध्यम से मौके पर ही उनका निस्तारण किया गया तथा अवशेष प्रार्थना पत्रों के सम्बन्ध में संबंधित अधिकारियों को त्वरित, समयबद्ध , गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए सुपुर्द कर दिये।

उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि समाधान दिवस पर आए हुए शिकायतों को सदैव प्राथमिकता पर रखते हुए हर पीड़ित की समस्या का निष्पक्ष निस्तारण करना सुनिश्चित करें। जिन शिकायतों का निस्तारण आज नहीं हो सका है उनका समय के अंतर्गत शासन की मंशानुसार निर्धारित अवधि के भीतर सुचिता एवं पारदर्शिता के साथ गुणवत्ता पूर्ण एवं संतुष्टिपूर्ण शत प्रतिशत निस्तारण हो जाना चाहिए। पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्रा ने पुलिस विभाग से जुडे मामलों की सुनवायी की व पुलिस विभाग के अधिकारियों एवं थानाध्यक्षो को प्राप्त सभी सन्दर्भो का निस्तारण राजस्व विभाग की सहायता से टीम बनाकर प्राथमिकता एवं गुणवत्ता के साथ शत प्रतिशत सुनिश्चित कराये जाने का निर्देश दिये। राजस्व व पुलिस विभाग के अधि0ध्कर्मचारियों को शिकायतों को गम्भीरता से लेकर शत-प्रतिशत निष्पक्ष निस्तारण करने हेतु निर्देशित किया गया। आज आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 32 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, जिसमें से राजस्व विभाग के 14 में से 05 को तत्काल निस्तारित किया गया ,पुलिस विभाग से संबंधित 05, विकास विभाग से संबंधित 04 तथा अन्य विभाग के 09 प्राप्त हुए। इस प्रकार कुल 32 में से 05 प्रार्थना पत्र का निस्तारण तत्काल एवं अवशेष 27 प्रार्थना पत्रों को संबंधित विभाग को समयांतर्गत निस्तारण के निर्देश के साथ सौंपा गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में सीडीओ गुंजन द्विवेदी, उप जिलाधिकारी कसया परितोष मिश्रा ,एसडीएम न्यायिक कसया अनिल कुमार यादव, बीएसए राम जियावन मौर्य, डीडीओ कल्पना मिश्रा, डीसी मनरेगा राकेश, जिला पंचायत राज अधिकारी आलोक प्रियदर्शी, तहसीलदार धर्मवीर सिंह, सहित विभिन्न विभागों के जनपद स्तरीय अधिकारी, खंड विकास अधिकारीगण, ईओ कसया एवं थानाध्यक्ष गण,पूर्ति निरीक्षक, कानूनगो व लेखपाल उपस्थित रहे।

आगरा में नाव से तय हो रहा मध्यप्रदेश का सफर, नदी पार कराने के लिए लोगों की जान से खिलवाड़

संवाददाता, आगरा। आगरा के पिनाहट थाना क्षेत्र के क्योरी घाट से चंबल नदी पार कराने के नाम पर लोगों की जान से खिलवाड़ किया जा रहा है। नदी में अवैध रूप से नावों का संचालन बिना किसी डर के हो रहा है। हर एक नाव में संख्या से ज्यादा लोग बैठाकर उन्हें नदी पार कराई जा रही है। चंबल नदी में अवैध नावों का संचालन पूर्व में लोगों की जान ले चुका है। नावें नदी के गहरे पानी में डूब चुकी हैं। नाव में सवार लोगों की जान जा चुकी है। इसके बाद भी चंबल नदी में नावों के अवैध संचालन पर पूरी तरह अंकुश नहीं लग पा रहा है। त्योहार पर चंबल नदी में तीन अवैध नावों के संचालन का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में नावों में संख्या से ज्यादा लोग बैठे हुए नजर आ रहे हैं। इसके साथ ही नाव में बाइक सहित अन्य सामान भी रखा हुआ है। चंबल नदी में अवैध नांवों के संचालन से लोगों की जान पर बड़ा जोखिम है।

अज्ञात युवती के शव मामले में खुलासा करने में असफल रहे निरीक्षक कटरा संजय कुमार गुप्ता को एसपी ने किया लाइन हाजिर

संवाददाता

गोण्डा। कटरा पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल ने लापरवाही बरतने के मामले में कटरा बाजार थाना अध्यक्ष संजय कुमार गुप्ता को तत्काल प्रभाव से लाइन हाजिर कर दिया है करवाई उसे समय की गई जब 26 दिन बीतने के बाद भी एक अज्ञात युवती हत्याकांड में कोई ठोस परमाण नहीं मिल पाया था घटना के बाद चौकीदार के तहरीर पर थाना कटरा बाजार अध्यक्ष ने अज्ञात के खिलाफ एफ आई आर दर्ज की थी जब कटरा बाजार थाना क्षेत्र के एक सैलरी ग्राम पंचायत में कुशवाहा मजरा के पास 20 वर्षीय युवती का शव बोर में बरामद हुआ था जांच के बाद पता चला कि युवती की हत्या धारदार हथियार से गला काटकर की गई थी पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया लेकिन 26 दिन बीत जाने के बाद भी युवती की पहचान नहीं हो पायी पुलिस पर सवाल उठने लगे।पुलिस अधीक्षक ने कहा लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी गोंडा के एसपी विनीत जायसवाल ने मामले में लापरवाही को लेकर थाना कटरा बाजार थाना अध्यक्ष के खिलाफ कार्रवाई की है उन्होंने कहा है 6 अक्टूबर को मिली युवती।

न्यूयॉर्क में रहने वाले अधिकतर मुसलमानों के लिए गाजा सबसे बड़ा मुद्दा

(एजेंसी)

न्यूयॉर्क । न्यूयॉर्क शहर में रिवरसाइड ड्राइव पर स्थित इस्लामिक कल्चरल सेंटर में आसपास के इलाकों से सैकड़ों मुसलमान शुक्रवार की नमाज पढ़ने आते हैं। नमाज के बाद गाजा के लोगों के लिए खास तौर पर दुआ होती है। कॉरपोरेट क्षेत्र में काम करने वाले अली नियमित रूप से नमाज पढ़ते हैं, खास तौर पर शुक्रवार को। उनका कहना है कि पांच नवंबर को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में अंतरराष्ट्रीय मुद्दे मुसलमानों के स्थानीय मुद्दों पर हावी हो रहे हैं। उन्होंने कहा, ''बहुत सारे मुद्दे हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि गाजा में जो कुछ हम देख रहे हैं, उससे जरूरी कोई मुद्दा हो सकता है। मुस्लिम समुदाय का एक बड़ा हिस्सा उम्मीदवारों के बयानों और कार्यों से सहज महसूस नहीं कर रहा। उन्होंने कहा, ऐसा प्रतीत होता है कि डेमोक्रेटिक पार्टी को डर है कि कहीं इजराइल समर्थक पक्ष नाराज न हो जाए। मुझे लगता है कि करुणा और सहानुभूति का यह अभाव बहुत निराशाजनक है। इस राष्ट्रपति चुनाव में न्यूयॉर्क के मुसलमान एक जटिल राजनीतिक हालात का सामना कर रहे हैं। समुदाय घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों मुद्दों पर अपनी चिंताओं को लेकर पसोपेश में नजर आ रहा है। गाजा की स्थिति इस प्रभावशाली मतदाता समूह के सदस्यों के लिए सबसे बड़ी चिंता का विषय है। इनमें से कई ने पश्चिम एशिया की स्थिति को संभालने को लेकर सरकार के तरीके पर स्पष्ट रूप निराशा व्यक्त की। न्यूयॉर्क के लॉन्ग आइलैंड के निवासी वकास कहते हैं, हमारे लिए गाजा की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है। युद्ध समाप्त होना चाहिए, और हमें नहीं लगता कि मौजूदा सरकार इस मामले में कुछ खास कर रही है। गर्भपात के अधिकार और यहां तक कि एलजीबीटीक्यू जैसे अन्य मुद्दे भी चिंताजनक हैं, लेकिन गाजा अभी सबसे ज्यादा चिंताजनक है। 'इंस्टिट्यूट फॉर सोशल पॉलिसी एंड अंडरस्टैंडिंग' (आईएसपीयू) ने हाल ही में तीन राज्यों (जॉर्जिया, पेंसिल्वेनिया और मिशिगन) में सर्वेक्षण किया, जिसमें पता चला कि गाजा में जारी युद्ध बहुसंख्यक मुस्लिम मतदाताओं (61 प्रतिशत) के लिए चिंता का सबसे बड़ा विषय है। सर्वेक्षण में यह भी कहा गया है कि यह सभी लिंग, आयु, जाति और दलीय आधारों के मुसलमानों के लिए सबसे बड़ा मुद्दा है।

पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में हुए विस्फोट में पांच स्कूली बच्चों समेत आठ लोगों की मौत

(एजेंसी)

इस्लामाबाद/कराची । पाकिस्तान के अशांत बलूचिस्तान प्रांत में एक पुलिस वाहन को निशाना बनाकर किए गए बम विस्फोट में स्कूली बच्चों को ले जा रहे एक ऑटोरिक्शा में पांच बच्चों समेत कम से कम आठ लोगों की मौत हो गई और 27 अन्य घायल हो गए। विस्फोट सुबह आठ बजकर 35 मिनट पर प्रांत के मस्तुंग जिले के सिविल अस्पताल चौक स्थित एक कन्या माध्यमिक स्कूल के पास हुआ। मस्तुंग जिला पुलिस अधिकारी (डीपीओ) मियांदाद उमरानी ने पुष्टि की कि विस्फोट के बाद पांच स्कूली बच्चों समेत सात लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक घायल ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। उन्होंने कहा, घायलों की संख्या लगभग 27 है और कुछ घायलों को कुछ स्थानीय निवासी खुद ही अस्पतालों तक ले गए। लेकिन उमरानी ने कहा कि शुरुआत में मरने वालों की संख्या सात जबकि घायलों की संख्या करीब 17 थी। उन्होंने कहा कि कुछ घायलों की हालत गंभीर है। अब तक किसी भी समूह ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है, लेकिन जातीय बलूच आतंकवादी और तालिबान आतंकवादी अक्सर प्रांत में सुरक्षा बलों पर हमला करते हैं। उन्होंने कहा, टाइमर के जरिए किए गए आईईडी बम हमले का निशाना एक अस्पताल और एक हाई स्कूल के पास खड़ी पुलिस वैन थी। अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादियों ने एक खड़ी मोटरसाइकिल में छिपाकर रखे गए विस्फोटक पदार्थ को विस्फोट करने के लिए रिमोट कंट्रोल डिवाइस का इस्तेमाल किया। कलात डिवीजन के कमिश्नर नईम बाजई ने कहा, '' विस्फोट में आईईडी (इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) का उपयोग हुआ था और इसका निशाना स्कूल के पास खड़ा पुलिस का एक वाहन था।'' पुलिस का वाहन जब आईईडी के करीब पहुंचा तो उसमें विस्फोट हो गया और एक स्कूल वैन भी इसकी चपेट में आ गई। विस्फोट में एक पुलिस वाहन और कई ऑटो-रिक्शा क्षतिग्रस्त हो गए। उन्होंने कहा, ''विस्फोट इतना जोरदार था कि घटना के वक्त स्कूल जा रहे स्कूली बच्चे भी इसकी जद में आ गए।'' हमले के बाद सीसीटीवी फुटेज में पुलिसकर्मी और अन्य लोग जले हुए वाहन के चारों ओर खड़े दिखाई दिए। इस बीच, बलूचिस्तान के मुख्यमंत्री सरफराज बुगती ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर इस विस्फोट की निंदा की और इसे ''अमानवीय'' करार दिया। उन्होंने कहा कि आतंकवादियों ने अब ''गरीब मजदूरों के साथ-साथ मासूम बच्चों को भी निशाना बनाया है''। उनका इशारा स्पष्ट तौर पर हाल में प्रांत के पंजगुर जिले में एक बांध निर्माण स्थल पर अज्ञात बंदूकधारियों द्वारा किए गए हमले की ओर था, जिसमें पांच मजदूरों की मौत हो गई थी और दो अन्य घायल हो गए थे। मुख्यमंत्री ने कहा, हम मासूम बच्चों और लोगों की हत्या का बदला लेंगे। उनेंने कहा कि शहरी इलाकों में रहने वाले नागरिकों को भी आतंकवादियों पर नजर रखने की जरूरत है। बुगती ने कहा, आतंकवाद से केवल एकजुट होकर ही लड़ा जा सकता है। उन्होंने कहा कि आतंकवादियों ने बच्चों को लक्षित किया, क्योंकि उन्होंने इसे आसान लक्ष्य समझा। 'जियो न्यूज' की खबर के अनुसार, विस्फोट के बाद समूचे क्वेटा में आपात स्थिति घोषित कर दी गयी है। खबर में प्रांतीय स्वास्थ्य विभाग के प्रवक्ता के हवाले से कहा गया है कि सभी चिकित्सकों, फार्मासिस्ट, स्टाफनर्स और अन्य चिकित्सा कर्मचारियों को बुलाया गया है।

श्रीलंका संसदीय चुनाव से संबंधित शिकायतों के मामलों में 190 से अधिक लोग गिरफ्तार

(एजेंसी)

श्रीलंका में हुए 2024 के संसदीय चुनावों से संबंधित शिकायतों के सिलसिले में अब तक छह उम्मीदवारों सहित 191 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। संसदीय चुनाव के लिए मतदान 14 नवंबर को होगा। पुलिस ने बताया कि उसे संसदीय चुनाव से संबंधित 168 शिकायत मिली हैं। समाचार पोर्टल 'न्यूजफर्स्ट.एलके' ने पुलिस मीडिया प्रवक्ता डीआईजी (उप महानिरीक्षक) निहाल थलदुवा के हवाले से कहा, ''इसमें अपराध की 30 शिकायत और चुनाव कानूनों के उल्लंघन से संबंधित 138 शिकायत शामिल हैं।'' उन्होंने बताया कि जिन 191 लोगों को 2024 के संसदीय चुनावों से संबंधित शिकायतों के सिलसिले में अब तक गिरफ्तार किया गया है उनमें चुनाव लड़ रहे छह उम्मीदवार भी शामिल हैं। पुलिस ने इन शिकायतों के संबंध में 45 वाहन भी जब्त किए हैं। इस बीच, निर्वाचन आयोग ने कहा कि उसे संसदीय चुनावों से संबंधित 1,259 शिकायत मिली हैं। समाचार पोर्टल ने कहा कि इनमें से 13 शिकायत हिंसा के संबंध में हैं।

पाकिस्तान : खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में सुरक्षाबलों के काफिलों पर हमले में 16सैनिक घायल

(एजेंसी)

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में शनिवार कोअज्ञात बंदूकधारियों ने सुरक्षाबलों के दो अलग-अलग काफिलों पर घात लगाकर हमले किए जिसमें एक अधिकारी समेत 16 सैनिक घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि दक्षिणी वजीरिस्तान जिले के सरवेकाई क्षेत्र में बंदूकधारियों ने सुरक्षाबलों के काफ्लि पर हमला किया जिसमें 11 सुरक्षाकर्मी घायल हो गए। घायलों में कैप्टन रैंक का एक अधिकारी भी शामिल है। उन्होंने बताया कि लक्की मरवत जिले में दर्रा तुंग जांच चौकी के नजदीक एक और हमला उस समय हुआ जब काफ्लिा करक जिले से काबुल खेल में एक परमाणु ऊर्जा परियोजना स्थल की ओर जा रहा था। इस हमले में पांच सैनिक घायल हो गये।

मेरी मां ने मुझे और मेरी बहन को हमारी विरासत की सराहना और सम्मान करना सिखाया : कमला हैरिस

(एजेंसी)

अमेरिका के राष्ट्रपति पद के चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार एवं उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने शनिवार को प्रकाशित एक लेख में बचपन में की गईं भारत की अपनी यात्राओं और कैंसर का इलाज करने के अपनी मां के मिशन को याद किया। हैरिस ने दक्षिण एशियाई के ऑनलाइन प्रकाशन 'द जगरनॉट' में प्रकाशित एक लेख में कहा, ''जब मैं और मेरी बहन बड़े हो रहे थे, तब मेरी मां ने हमें हमारी विरासत की सराहना और सम्मान करना सिखाया। हम लगभग हर दूसरे साल दिवाली के मौके पर भारत जाया करते थे। हम अपने दादा-दादी और अन्य रिश्तेदारों के साथ समय बिताते थे।'' उन्होंने कहा, ''और उपराष्ट्रपति के तौर पर मेरे आवास (उपराष्ट्रपति के सरकारी आवास) पर दिवाली समारोह का आयोजन किया जाना मेरे लिए सम्मान की बात रही है। इसका मकसद न केवल अवकाश मनाना है बल्कि दक्षिण एशियाई अमेरिकी प्रवासियों के समृद्ध इतिहास, संस्कृति और विरासत का जश्न मनाना है।'' राष्ट्रपति पद के लिए पांच नवंबर को होने वाले चुनाव से तीन दिन पहले प्रकाशित अपने लेख में हैरिस ने कहा कि 19 साल की उम्र में उनकी मां श्यामला हैरिस भारत से अमेरिका आईं। उन्होंने लिखा, ''मेरी मां के जीवन के दो लक्ष्य थेरू पहला-अपनी दो बेटियों- मेरा एवं मेरी बहन माया का पालन पोषण करना तथा दूसरा स्तन कैंसर का इलाज करना।'' राष्ट्रपति चुनाव को लेकर उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि अमेरिका के लोग एक ऐसा राष्ट्रपति चाहते हैं जो सभी अमेरिकियों के लिए काम करे।

जेएसडब्ल्यू-पोस्को ओडिशा के क्योंझर में अत्याधुनिक इस्पात संयंत्र लगाएंगी : मुख्यमंत्री, माझी

(एजेंसी)

भुवनेश्वर । ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने कहा कि जेएसडब्ल्यू समूह और दक्षिण कोरियाई इस्पात कंपनी पोस्को का संयुक्त उद्यम उनके गृह जिले क्योंझर में एक अत्याधुनिक इस्पात संयंत्र स्थापित करेगा। जेएसडब्ल्यू-पोस्को संयुक्त उद्यम के संयंत्र के लिए स्थान के चुनाव को लेकर देश भर में चल रही अटकलों के बीच माझी ने यह जानकारी दी। दिवाली मनाने के लिए क्योंझर की दो दिवसीय यात्रा पर पहुंचे माझी ने संवाददाताओं से कहा, आगामी मेक-इन ओडिशा सम्मेलन को लेकर दिल्ली और मुंबई में आयोजित हमारे कार्यक्रम के दौरान मैंने क्योंझर जिले में एक इस्पात संयंत्र की स्थापना के लिए जेएसडब्ल्यू और पोस्को दोनों के साथ चर्चा की थी। मुख्यमंत्री ने कहा, इस बीच, दोनों कंपनियों ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। वे इस काम को संयुक्त रूप से पूरा करेंगे। उन्होंने क्योंझर जिले में भी ऐसा करने की बात कही है। इसकी प्रक्रिया जारी है और ओडिशा को एक और इस्पात संयंत्र मिलेगा। दोनों इस्पात निर्माता कंपनियों ने 29 अक्टूबर को मुंबई में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। इस साझेदारी के तहत भारत में 50 लाख टन प्रति वर्ष की प्रारंभिक क्षमता के साथ एक एकीकृत इस्पात संयंत्र लगाया जाएगा।

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों के नतीजों, फेडरल रिजर्व के ब्याज दर पर निर्णय से तय होगी बाजार की दिशा

(एजेंसी)

नयी दिल्ली । अमेरिका में पांच नवंबर को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव, फेडरल रिजर्व के ब्याज दर पर निर्णय, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफ्पीआई) की गतिविधियों और घरेलू कंपनियों के तिमाही नतीजे इस सप्ताह शेयर बाजारों की दिशा तय करेंगे। विश्लेषकों ने यह राय जताई है। विशेषज्ञों ने कहा कि यह सप्ताह काफी घटनाक्रमों वाला रहेगा। सप्ताह के दौरान कई वृहद आर्थिक आंकड़े आने हैं, जो बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण होंगे। इसके अलावा वैश्विक रुख से भी बाजार को दिशा मिलेगी। स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट लिमिटेड के शोध प्रमुख संतोष मीणा ने कहा, ''यह सप्ताह वैश्विक मोर्चे पर घटनापूर्ण होने वाला है। पांच नवंबर को होने वाला अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर सभी की निगाह है। इसके अलावा अमेरिकी एफ्ओएमसी (फेडरल ओपन मार्केट कमेटी) की बैठक महत्वपूर्ण होगी। भू-राजनीतिक दबाव और कच्चे तेल की कीमतें भी बाजार को प्रभावित करेंगी।'' मीणा ने कहा कि घरेलू मोर्चे पर दूसरी तिमाही के नतीजों का अंतिम चरण काफी महत्वपूर्ण रहने वाला है। साथ ही सभी की निगाह विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफ्आईआई) के रुख पर रहेगी। मास्टर कैपिटल र्विसेज लिमिटेड की निदेशक पल्का अरोड़ा चोपड़ा ने कहा, ''बाजार का परिदृश्य अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव और एचएसबीसी इंडिया विनिर्माण पीएमआई, सेवा पीएमआई, फेडरल रिजर्व के ब्याज दर पर निर्णय, अमेरिकी एसएंडपी ग्लोबल कम्पोजिट पीएमआई, ग्लोबल सेवा पीएमआई और बैंक ऑफइंग्लैंड (बीओई) के ब्याज दर पर निर्णय से दिशा लेगा।'' प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज बीएसई और एनएसई ने एक नवंबर को दिवाली के अवसर पर एक घंटे का विशेष 'मुहूर्त कारोबार' आयोजित किया, जो नए संवत 2081 की शुरुआत का प्रतीक है। रेलिगेयर ब्रोकिंग लिमिटेड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष (शोध) अजित मिश्रा ने कहा, ''इस सप्ताह निवेशकों की निगाह अमेरिकी बाजार के घटनाक्रमों पर रहेगी। खासकर पांच नवंबर को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव और फेडरल रिजर्व की नीतिगत बैठक पर।'' मिश्रा ने कहा, ''घरेलू मोर्चे पर डॉ. रेड्डीज, टाइटन, टाटा स्टील, महिंद्रा एंड महिंद्रा और टाटा मोटर्स सहित अन्य कंपनियों के तिमाही नतीजे आएंगे। साथ ही एचएसबीसी विनिर्माण पीएमआई और सेवा पीएमआई जैसे प्रमुख आंकड़े जारी होंगे, जो बाजार की दृष्टि से काफी महत्व रखते हैं। पिछले महीने विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफ्आईआई) की सतत बिकवाली की वजह से प्रमुख सूचकांक अपने सर्वकालिक उच्चस्तर से सात प्रतिशत से अधिक नीचे आ गए। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी के विजयकुमार ने कहा,'' वैश्विक बाजार कुछ दिन तक अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों पर प्रतिक्रिया देंगे, जिसके बाद अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि, मुद्रास्फीति और फेडरल रिजर्व के ब्याज दर पर निर्णय जैसे बुनियादी कारक बाजार की चाल को प्रभावित करेंगे।

मारुति को 'कुछ लाख शादियों' की वजह से नवंबर में भी बिक्री की रफ्तार कायम रहने की उम्मीद

(एजेंसी)

नयी दिल्ली । रिकॉर्ड बिक्री वाले अक्टूबर माह के पीछे छूटने के बाद अब देश की प्रमुख कार कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) नवंबर में ''कुछ लाख शादियों' के बूते अपनी वृद्धि की रफ्तार को कायम रखने की उम्मीद कर रही है। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह बात कही है। कंपनी ने पिछले महीने 2,02,402 वाहनों की खुदरा बिक्री दर्ज की, जो किसी भी साल में अक्टूबर में बिक्री का सबसे ऊंचा आंकड़ा है।

इसकी वजह त्योहारी मांग रही। इससे पहले अक्टूबर, 2020 में कंपनी ने 1,91,476 वाहन बेचे थे। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (विपणन और बिक्री) पार्थो बनर्जी ने पीटीआई-से कहा, '' हमें बताया गया है कि देशभर में नवंबर में 'कुछ लाख' शादियां होने वाली हैं। इसलिए पूरी उम्मीद है कि इससे हमें अपनी खुदरा बिक्री के मामले में भी अच्छी बढ़त मिलेगी।'' वह इस सवाल का जवाब दे रहे थे कि क्या कंपनी अगले कुछ माह के दौरान त्योहारी सीजन की बिक्री की रफ्तार को कायम रख पाएगी। उन्होंने कहा, ''हमें वास्तव में देखना होगा। लेकिन हमें लगता है कि इस बार नवंबर के महीने में काफी संख्या में शादियां हैं। शादियों के लिए दिनों की संख्या लगभग 11 या 12 दिन है जो अबतक का सबसे ऊंचा आंकड़ा है।'' त्योहारी सीजन के दौरान अच्छी बिक्री के बाद मारुति को चालू वित्त वर्ष में चार से पांच प्रतिशत की वृद्धि के अपने अनुमान के हासिल होने की उम्मीद है।

बनर्जी ने कहा, ''अप्रैल से अक्टूबर की अवधि में खुदरा बिक्री के मामले में हमारी वृद्धि लगभग चार प्रतिशत रही है। अक्टूबर में हमारी वृद्धि 22.4 प्रतिशत है। इस साल की शुरुआत में हमने चार से पांच प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया था। मेरा मानना है कि हमारी वृद्धि इसी के अनुरूप रहेगी।'' बनर्जी ने कहा कि अक्टूबर में अच्छी बिक्री की वजह से कंपनी अपने बिक्री नेटवर्क में भंडारण के स्तर को कम करने में सफल रही है। उन्होंने कहा कि हमने अपने नेटवर्क स्टॉक में 40,000 से अधिक इकाइयों की कमी की है। अब हमारा नेटवर्क स्टॉक लगभग एक महीने का है।

सार्वजनिक क्षेत्र के केनरा बैंक का दूसरी छमाही में 6,000 करोड़ रुपये के 'डूबे कर्ज' की वसूली का लक्ष्य

(एजेंसी)

नयी दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र के केनरा बैंक ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में करीब 6,000 करोड़ रुपये के 'डूबे कर्ज' की वसूली का लक्ष्य रखा है। केनरा बैंक के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) के सत्यनारायण राजू ने पीटीआई-से कहा, ''हमें तीसरी तिमाही में लगभग 3,000 करोड़ रुपये और चौथी तिमाही में भी इतनी ही राशि की वसूली की उम्मीद है।'' बैंक ने दूसरी तिमाही में 2,905 करोड़ रुपये की वसूली की है, जिसमें बट्टे खाते में डाले गए खातों से वसूली भी शामिल है। केनरा रोबेको एसेट मैनेजमेंट कंपनी के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि यह इस वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में आ सकता है। केनरा रोबेको एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) के आईपीओ के लिए वित्त मंत्रालय से मंजूरी जल्द मिलने की उम्मीद है। बैंक के पास इस म्यूचुअल फंड कंपनी में 51 प्रतिशत हिस्सेदारी है। इसकी आईपीओ के माध्यम से 13 प्रतिशत हिस्सेदारी बेचने की योजना है। पिछले दिसंबर में केनरा बैंक ने आरंभिक शेयर बिक्री द्वारा अपनी म्यूचुअल फंड अनुषंगी कंपनी को सूचीबद्ध करने की प्रक्रिया शुरू करने के लिए सैद्धांतिक मंजूरी दी थी। सूचीबद्ध होने पर यह शेयर बाजार में शामिल होने वाली पांचवीं म्यूचुअल फंड कंपनी हो जाएगी। इससे पहले एचडीएफसी एएमसी, निप्पॉन लाइफ इंडिया एएमसी, यूटीआई एसेट मैनेजमेंट कंपनी और आदित्य बिड़ला सन लाइफएएमसी शेयर बाजारों में सूचीबद्ध हैं। बुनियादी ढांचा बॉन्ड के बारे में राजू ने कहा कि बैंक ने जुलाई में पहले ही 10,000 करोड़ रुपये जुटाए हैं और वह इसे लगाने की प्रक्रिया में है। चालू वित्त वर्ष के दौरान बैंक द्वारा दीर्घकालिक अवसंरचना बॉन्ड के माध्यम से और अधिक धन जुटाने की संभावना नहीं है।

मै स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक सरोज त्रिवेदी द्वारा के. सी. प्रकाशन प्रा0 लि0 एस-20 यू.पी.एस.आई.डी.सी. औद्योगिक क्षेत्र सरोजनी नगर जिला लखनऊ से मुद्रित कराकर फ्लैट सं. 101 सफायर कोर्ट 3ए, जापलिंग रोड लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक सरोज त्रिवेदी R.N.I No. UPHIN/2010/36179 Mob: 9451912645 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों का चयन रिपोर्टरो/पीआईबी एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद लखनऊ के अधीन समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त लेखों व समाचारों की जिम्मेदारी लेखकों/रिपोर्टरों की होगी।

लखनऊ के नवनियुक्त सीएमओ से मिले चिकित्सा स्वास्थ महासंघ के पदाधिकारी

संवाददाता

लखनऊ । चिकित्सा स्वास्थ महासंघ उ प्र के पदाधिकारियो ने लखनऊ के नये सी एम ओ डॉ? एन बी सिंह से मुलाकात की और नये पद ग्रहण पर पुष्पगुछ देकर स्वागत किया। पदाधिकारियो में मुख्य रुप से लखनऊ जिला अध्यक्ष कपिल वर्मा,यू पी लैब टेक्नीशियन के महामंत्री कमल श्रीवास्तव,यू पी लैब टेक्नीशियन के लखनऊ जिला अध्यक्ष महेश कुमार,चिकित्सा स्वास्थ महासंघ के उपाध्यक्ष रजत यादव,प्रदेश प्रवक्ता सुनील कुमार,सदस्य सत्यप्रकाश,राजेश कुमार चौधरी,राजेश वरुण सहित कई सदस्य उपस्थित थे ।पदाधिकारियो ने डॉ सिंह से जिले स्तर पर कर्मचारियों की तमाम समस्यों पर चर्चा की जिस

पर डॉ0 सिंह ने हर सम्भव मदद का आसवासन दिया ।डॉ सिंह ने कर्मचारियों से मिल कर जिले व प्रदेश में फैले संक्रामक रोगों पर रोक लगाने तथा और इन रोगों को और न फैलने देने पर काम करने और सहयोग की इच्छा जाहिर की,जिस पर संघ के पदाधिकारियो ने एकमत होकर सहयोग का आसवासन दिया। डॉ0 सिंह और पदाधिकारियो के बीच कर्मचारियों के बेहतर कार्यक्षमता को और अधिक बढ़ाने पर चर्चा हुई तथा माह में एक बैठक कर्मचारी और अधिकारियों की करने पर सहमति दी। संघ के पदाधिकारियो ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को हर समय कर्मचारियों से सहयोग की भुमिका में रहने का आसवासन दिया। डॉ0 सिंह ने कहा की वो जल्द ही जिले के प्रत्येक ग्रामीण और शहरी चिकित्सालयों का भ्रमण कर उच्च कोटि की कार्य शैली की बढ़ाने पर कार्य करेगे और चिकित्सालयों पर होने वाली समस्यों को तत्काल खत्म करने पर काम करेगें ।जिससे प्रदेश व जिले की जनता को सरकार की मंशा के अनुरुप बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो सकें। उन्होंने कहा की मैं जिले के प्रत्येक जनता के अच्छी स्वास्थ्य सेवाओ के लिए कटिबंध हूँ । डॉ0 सिंह इससे पहले मुख्य चिकित्सा अधीक्षक ,बलरामपुर चिकित्सालय, लखनऊ में कार्यरत थे।

रालोद ने किया चुनाव की तिथि बढ़ाने का स्वागत

संवाददाता

लखनऊ । राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल दुबे ने उ0प्र0 में विधानसभा के उपचुनाव की तिथि 13 नवंबर से बढ़ाकर 20 नवम्बर करने के निर्णय का स्वागत करते हुए कहा है कि निर्वाचन आयोग ने राष्ट्रीय लोकदल की मांग को स्वीकार करते हुए जो निर्णय लिया है उससे विधानसभा उपचुनाव में सभी 9 सीटों पर निश्चित रूप से मतदान का प्रतिशत बढेगा। चुनाव आयोग ने यह निर्णय लेकर आम जनमानस की भावना का सम्मान किया है ज्ञातव्य है कि दिनांक 17 अक्टूबर को मुख्य निर्वाचन अधिकारी को दिये गये ज्ञापन में अनिल दुबे ने कहा था कि चुनाव आयोग द्वारा उ0प्र0 में मीरापुर विधानसभा उपचुनाव की तिथि 13 नवंबर 2024 घोषित की गयी है इस

संदर्भ में आपका ध्यान इस विधानसभा क्षेत्र के ऐतिहासिक तीर्थ स्थल शुक्रताल की ओर आकृष्ट करना चाहूंगा, जहा प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा स्नान का बहुत विशाल मेला लगता है। इस मेले में इस क्षेत्र के लाखों किसान गंगा स्नान हेतु पूर्णमासी से पांच-पांच, छह-छह दिन पूर्व अपने परिवार सहित गंगा तट पर डेरों में आकर बस जाते हैं।

वकीलों पर लाठी चार्ज के विरोध में कार्यों से विरत रहे वकील

संवाददाता, लखनऊ। टैक्स बार एसोसिएशन, लखनऊ संघ द्वारा सोमवार को प्रात: 10 बजे आकस्मिक बैठक की गयी। बैठक में गाजियाबाद न्यायालय परिसर में अधिवक्ताओं पर पुलिस द्वारा किये गये निर्मम लाठीचार्ज की घोर निन्दा करते हुये रोष प्रकट किया गया तथा बार काउन्सिल ऑफ उत्तर प्रदेश, प्रयागराज के आवाहन पर टैक्स बार एसोसिएशन लखनऊ संघ के सभी अधिवक्ता न्यायिक ध्अर्द्धन्यायिक कार्यों से विरत रहे। बैठक में मुख्य रूप से अध्यक्ष इन्द्रेश कुमार वर्मा, महामंत्री अखिलेश कुमार श्रीवास्तव, पूर्व सचिव, अमित कुमार मिश्रा वरिष्ठ उपाध्यक्ष-संजय कुमार श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष संजय कुमार सिंह, संयुक्त सचिव अवध बिहारी सिंह, अनुज अग्निहोत्री, संजय गुप्ता, वरिष्ठ अधिवक्ता दुर्गा प्रसाद दुबे, संजीव कुमार सिंह एवं कार्यकारिणी सदस्य मुकेश यादव आदि मौजूद थे।

15 डिपो में मेंटिनेंस का कार्य करेंगी निजी कंपनियां: दयाशंकर सिंह

संवाददाता, लखनऊ। परिवहन निगम की कार्यशालाओं की दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से 19 डिपो के वर्कशॉप को आउटसोर्सिंग के माध्यम से निविदा पर दिए जाने हेतु टेंडर किया गया था। 19 डिपो में से 15 डिपो की निविदा का अनुमोदन प्रदान कर दिया गया है। यह जानकारी परिवहन राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार श्री दयाशंकर सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि 15 डिपो में कुल 1255 बसों के लिए दरें तीन रुपए 57 पैसे प्रति किलोमीटर से लेकर 5 रुपए 48 पैसे तक प्राप्त हुई हैस इस निविदा के माध्यम से 15 डिपो वर्कशॉप में बस के मेंटीनेंस का कार्य निजी कंपनियों को दे दिया जाएगास जिसमें मुख्य रूप से श्याम इंटरप्राइजेज, एसडीएल एंटरप्राइजेज, आर.के. ऑटोमोबाइल है। परिवहन मंत्री ने बताया कि प्रारंभिक तौर पर इस निविदा कार्रवाई के सफ्लतापूर्वक कराए जाने के उपरांत अन्य 100 डिपो का भी मेंटीनेंस का कार्य निजी कंपनियों को सौप जाएगास उन्होंने कहा कि कार्यशालाओं में तकनीकी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की कमी के कारण परिवहन निगम में बसों के मेंटीनेंस की समस्या का सामना करना पड़ रहा है स इस निविदा प्रक्रिया से निजी कंपनियों को मेंटीनेंस करने का अवसर प्रदान किया जाएगा, जिससे कि अच्छी गुणवत्ता की बसों की मेंटीनेंस हो सकेगी। उन्होंने कहा कि नई तकनीक की बसों के मेंटीनेंस के लिए दक्ष एवं क्वालिफाइड मैकेनिक होने चाहिएस इस संविदा प्रक्रिया के पश्चात दक्ष मैकेनिक उपलब्ध हो सकेंगे।

छुट्टा गोवंश के भरण-पोषण हेतु 02 अरब 50 करोड़ 02 लाख रूपये स्वीकृत

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रदेश के छुट्टा गोवंश के भरण-पोषण हेतु 02 अरब 50 करोड़ 02 लाख रूपये की धनराशि वर्तमान वित्तीय वर्ष में स्वीकृत की है। पंचम किश्त के रूप में स्वीकृत धनराशि का व्यय अस्थाई गोवंश आश्रय की स्थापना, संचालन व संरक्षित गोवंश के भरण-पोषण हेतु किया जायेगा। आवंटित धनराशि का उपयोग अधिकतम 50/-रूपये प्रतिदिन प्रति गोवंश की दर से किया जायेगा। इस संबंध में पशुधन विभाग द्वारा शासनादेश जारी करते हुए निदेशक, प्रशासन विकास पशुपालन विभाग को अस्थाई गोवंश आश्रय के सुचारू संचालन के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दे दिए गए हैं। उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार द्वारा निराश्रितध्बेसहारा गोवंश के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिये उत्तर प्रदेश के समस्त ग्रामीण व शहरी स्थानीय निकायों यथा ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत, नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निकायों में अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की स्थापना व संचालन नीति प्रख्यापित की गयी है, जिसके तहत संरक्षित छुट्टा गोवंश की देखभाल का निरन्तर कार्य किया जा रहा है।

पुणे से वाराणसी की फ्लाइट की लखनऊ में इमरजेंसी लैंडिंग, कोहरे के कारण 5 घंटे तक रनवे पर खड़ी रही

संवाददाता, लखनऊ। कोहरे का असर फ्लाइट पर पड़ने लगा है। सोमवार को पुणे से बनारस आ रही फ्लाइट की लखनऊ में इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। करीब पांच घंटे तक फ्लाइट रनवे पर खड़ी रही। यात्रियों को विमान से उतार कर लाउंज में बैठाया गया। इसके बाद परेशान यात्रियों ने जमकर हंगामा किया। फ्लाइट को रात दो बजे लखनऊ में उतारा गया। अजय केसरी नाम के यात्री ने इसकी जानकारी सोशल मीडिया प्लेटफार्म ग् पर शेयर की है। उन्होंने बताया कि वाराणसी में फ्लाइट को लैंड करना था लेकिन उसको लखनऊ लाया गया। उसके बाद यहां यात्रियों को कोई सूचना भी नहीं दी गई। कई बार पूछने पर बताया गया कि फ्लाइट को सुबह 7 बजे भेजा जाएगा। हालांकि कोहरे की वजह तब भी लेट हो गया। सूचना सही तरीके से नहीं मिलने पर यात्रियों ने हंगामा करना शुरू कर दिया। आखिरी में इंडिगो का स्टाफ लाउंज में पहुंचा। यात्रियों से बात की गई। बताया कि मौसम की वजह से लैंड कराना मुश्किल है। दरअसल, इस सत्र में यह पहला मामला है जब कोहरे की वजह से फ्लाइट को लैंड नहीं कराया गया। खराब मौसम की वजह से लखनऊ आने-जाने वाले कई विमानों पर असर पड़ा है।

पूर्व एमएलसी के बेटे की जमीन पर कब्जा, बोर्ड हटाने पर सपा नेता के बेटे ने बनाया बंधक

संवाददाता, लखनऊ। राजधानी लखनऊ के गोमतीनगर इलाके में पूर्व एमएलसी के बेटे की जमीन पर सपा नेता ने कब्जा कर लिया। पीड़ित ने कोर्ट के आदेश पर गोमतीनगर थाने में चार लोगों के खिलाफ एफ्आईआर दर्ज कराई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। प्रतापगढ़ के जेठवारा के रहने वाले वकील ललित कुमार पाल ने पुलिस को बताया कि उनके पिता बैजनाथ पाल एमएलसी रह चुके हैं। विधायक आवास समिति के आदेश पर उनके पिता को गोमतीनगर में एलडीए ने वर्ष 1987 जमीन आवंटित की गई थी। पिता और मां की मृत्यु के बाद एलडीए ने जमीन 2005 में उनके नाम कर दी। प्रतापगढ़ में रहने के चलते जमीन की बाउंड्री करा दी थी। भाइयों में बंटवारे को लेकर कोर्ट केस के चलते जमीन पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। कोर्ट केस जीतने के बाद 30 जुलाई 2014 को जमीन पर निर्माण के लिए आया तो देखा बाउंड्री में लगे गेट का ताला टूटा हुआ था। यहां पर लालाराम यादव, अनुराग यादव और मैकूलाल यादव नाम के लोगों ने कब्जा कर रखा था। जांच की तो पता चला कि जमीन पर सपा के पूर्व नेता राजा राम पांडेय के बेटे संजय ने कब्जा कर लिया है। ललित ने यह भी आरोप लगाया है कि बाउंड्री से सपा नेता संजय का बोर्ड हटाने पर वहां मौजूद लोगों ने मारपीट की। बंधक बनाकर सादे कागजों पर हस्ताक्षर करने का दबाव बनाया। आसपास के लोगों के जुटने पर छूटकर गोमतीनगर थाने पहुंचा। कुछ देर बाद थाने पहुंचे संजय ने ललित के भाई से जमीन खरीदने की बात कही। उसने अनुबंध पत्र भी दिखया।

लिव-इन में रह रहे युवक ने लगाई फांसी,पिता बोले, हत्या की गई

संवाददाता, लखनऊ। राजधानी लखनऊ में सोमवार सुबह एक युवक का शव फांसी के फंदे पर लटकता मिला। महिला मित्र ने फोन पर इसकी जानकारी युवक के पिता को दी। युवक के पिता का आरोप है कि महिला मित्र के बहकावे में आकर ही युवक घर छोड़कर लखनऊ में रह रहा था। उन्होंने घटना के पीछे महिला का हाथ होने की आशंका जाहिर की है। परिजनों का कहना है कि पुलिस से बातचीत के बाद आगे की कार्रवाई करेंगे। सुशांत गोल्फसिटी के सरयू एंक्लेव में सोमवार सुबह स्पर्श गुप्ता (25) का शव चादर के बने फंदे से लटकता मिला। फैजाबाद फतेहगंज के रहने वाले स्पर्श के पिता ओम गुप्ता ने बताया कि सुबह आठ बजे के करीब उसके साथ रहने वाली एक युवती ने बेटे के सुसाइड करने की सूचना दी। घर आकर देखा तो उसका शव कमरे में फांसी के फंदे पर लटक रहा था और दरवाजा खुला था। पिता ने बताया, स्पर्श यहां सिक्योरिटी एजेंसी में काम करता था। इसी दौरान उसकी एक युवती से दोस्ती हुई। जिसके साथ करीब डेढ़ साल से रह रहा था। उनका आरोप है कि उनके बेटे ने युवती से ही परेशान होकर यह कदम उठाया है।

जम्मू कश्मीर में लगातार खौफनाक आतंकी घटना मोदी सरकार की सुरक्षा नीति जिम्मेदार: प्रमोद तिवारी

संवाददाता, लखनऊ । राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने जम्मू कश्मीर में लगातार खौफनाक आतंकी घटनाओं को लेकर मोदी सरकार की सुरक्षा नीति को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होने कहा कि केन्द्र के हाथों में जम्मू कश्मीर की सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा उठी है। श्री तिवारी ने राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में इस विफ्लता के लिए पीएम मोदी की नीतियों को जिम्मेदार ठहराते हुए उन्हे एक कमजोर तथा असफ्ल प्रधानमंत्री भी करार दिया है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने कहा था कि नोटबंदी से बाहर का पैसा नहीं आ सकेगा और इससे आतंकवाद पर लगाम लगेगा। यही नहीं धारा तीन सौ सत्तर को लेकर भी प्रधानमंत्री ने इसके हटने पर आतंकवाद के खात्मे का दावा किया था। उन्होनें सवाल उठाया कि आखिर मोदी सरकार बताये कि जो आतंकवाद वहां सिर्फकुछ जिलों व अंचलों में सीमित था वह बढकर घाटी तक कैसे आ पहुंचा। उन्होने कहा कि आतंकवाद की चपेट में उत्तर प्रदेश तथा बिहार समेत कई राज्यों के मजदूर कीमत चुका रहे है। श्री तिवारी ने कडे अंदाज में कहा कि आतंकवाद का दुस्साहस अब तो भारत की सेना के वाहनों तक पर हमले के जरिए निशाना बनाया जा रहा है। उन्होने जम्मू कश्मीर की राजधानी श्रीनगर के संडे बाजार में ताजा आतंकी विस्फोट को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बेहद चिंताजनक करार दिया। वहीं उन्होने कनाडा में दीपावली के त्यौहार पर वहां की बैंम्पटन शहर में हिन्दू मंदिरों पर हुए हमले की भी कडी निन्दा की। उन्होने कहा कि कनाडा की इस दिल दहला देने वाली घटना से यह तस्वीर भी साफहो गयी है कि मोदी सरकार ने अर्थव्यवस्था की नीति चौपट करते हुए अब विदेश नीति को भी बर्बाद कर दिया है।

जन समस्याओं के समाधान हेतु तय की जाय, जवाबदेही

हर व्यक्ति की हर समस्या का हर सम्भव किया जायेगा निदान: केशव प्रसाद मौर्य

संवाददाता

लखनऊ । उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने अपने कैम्प कार्यालय 7- कालिदास मार्ग पर आयोजित जनता दर्शन में आये फरियादियों को विश्वास दिलाते हुए कहा कि हर व्यक्ति को हर समस्या का हर सम्भव निदान किया जायेगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक फरियादी की समस्या का त्वरित व संतुष्टिपरक समाधान किया जाय। निर्देश दिए कि समस्याओं का सम्पूर्ण समाधान किया जाय और समस्याओं के समाधान हेतु सम्बन्धित की जवाबदेही तय होनी चाहिये। निर्देश दिए कि जन समस्याओं का समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। किसी भी स्तर पर लापरवाही नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उत्पीड़न, भूमि पर अवैध कब्जों के मामलों को बेहद गंभीरता व संवेदनशीलता के साथ हल किया जाय और जहां जरूरत हो, कठोर कार्यवाही की जाय। उन्होने जनसुनवाई के दौरान एक-एक व्यक्ति की समस्या को पूरी गम्भीरता से सुना तथा समस्याओं के निराकरण हेतु सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने सम्बंधित अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए हैं कि समस्याओं का निराकरण इस प्रकार किया जाय कि समस्याग्रस्त व्यक्ति पूरी तरह से संतुष्ट रहें और उन्हें दुबारा कहीं भटकना न पड़े और बार -बार चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने महिलाओं, दिव्यांग जनो, बुजुर्गों आदि की समस्याओं व शिकायतों को सुना और उन्हें प्राथमिकता के आधार पर संबंधित अधिकारियों को त्वरित गति से निदान करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जनता दर्शन में भूमि विवाद ,दुर्घटनाओं से संबंधित, अवैध कब्जे, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास आवंटन, भूमि पर कब्जा दिलाने, अतिक्रमण हटाने,

सड़क बनवाने, विद्युत, अभियुक्तों की गिरफ्तारी कराने, उत्पीड़न आदि से संबंधित विभिन्न समस्याएं प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए लोगों ने रखी। उप मुख्यमंत्री फरियादियों के पास खुद चलकर गये और एक-एक व्यक्ति की समस्या को उनसे सीधे संवाद करते हुए सुना। जनता दर्शन मे कौशाम्बी, आगरा, लखनऊ, लखीमपुर, गोण्डा, जौनपुर, एटा, सोनभद्र, मथुरा, फिरोजाबाद, रायबरेली, कानपुर नगर, शामली, बलिया, फ्तेहपुर, कन्नौज, मुरादाबाद बलरामपुर सहित लगभग 2 दर्जन से अधिक जिलों से कई सैकड़ा लोगों ने आकर अपनी समस्याएं रखी। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने समस्याओं के निस्तारण के बावत जालौन , बांदा व चित्रकूट के जिला अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक फिरोजाबाद, पुलिस कमिश्नर प्रयागराज, पुलिस अधीक्षक भदोही, व शासन के उच्चाधिकारियों से दूरभाष पर वार्ता करते हुए यथोचित दिशा निर्देश दिए। जमीन सम्बन्धी अधिकांश प्रकरणों में उन्होंने सम्बन्धित जिलाधिकारियों को निर्देश दिए कि वह राजस्व व पुलिस विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों की संयुक्त टीम बनाकर मौके पर भेजा जाय और सार्थक समाधान कराया जाय।

उच्च शिक्षा क्षेत्र को नई दिशा देते हुए मंत्रिपरिषद ने दिए अहम निर्णय

❑ अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के लखनऊ परिसर के लिए नि:शुल्क भूमि आवंटित

संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार ने शिक्षा क्षेत्र में सुधारों की दिशा में एक और बड़ा कदम बढ़ाते हुए सोमवार को मंत्रिपरिषद की बैठक में उच्च शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णयों को मंजूरी दी। इनमें सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों के लिए नई स्थानांतरण नियमावली का प्रख्यापन, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के लखनऊ परिसर के लिए नि:शुल्क भूमि का प्रावधान और उत्तर प्रदेश निजी विश्वविद्यालय अधिनियम, 2019 में संशोधन का प्रस्ताव शामिल है। सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों के लिए नई स्थानांतरण नियमावली शिक्षकों के हितों को ध्यान में रखते हुए, योगी सरकार ने उत्तर प्रदेश सहायता प्राप्त महाविद्यालय अध्यापक स्थानांतरण नियमावली, 2024 को मंजूरी दी। इससे प्रदेश के सहायता प्राप्त डिग्री कॉलेजों में कार्यरत शिक्षकों को अब अपने संपूर्ण सेवा काल में केवल एक बार स्थानांतरण का अवसर मिलेगा और वह भी तीन वर्षों की सेवा के उपरांत। इससे पूर्व, यह सीमा पांच वर्ष थी। यह निर्णय विशेष रूप से उन महिला और दिव्यांग शिक्षकों के लिए राहत लेकर आया है जो अपने परिवार से दूर विभिन्न जिलों में सेवाएं दे रहे थे और स्थानांतरण की कठिनाइयों का सामना कर रहे थे ।उच्च शिक्षा मंत्री योगेन्द्र उपाध्याय ने कहा कि इस नियमावली के तहत स्थानांतरण प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाने के लिए शिक्षकों को अपने महाविद्यालय के प्रबंधतंत्र और संबंधित विश्वविद्यालय से अनुमोदन लेना अनिवार्य होगा। अनुमोदित आवेदन को निदेशक, उच्च शिक्षा के पास प्रस्तुत करना होगा। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करेगी कि शिक्षकों को बिना अनावश्यक देरी के पारदर्शी और निष्पक्ष तरीके से स्थानांतरण का लाभ मिल सके। नई स्थानांतरण नियमावली से महिला और दिव्यांग शिक्षकों को विशेष लाभ मिलेगा जो अपने परिवारों से दूर रहकर सेवा करने को विवश थे। इस निर्णय से उन्हें अपने परिवार के नजदीक कार्य करने का अवसर मिलेगा, जिससे उनके कार्यस्थल पर संतोष और शिक्षण में समर्पण बढ़ेगा। योगी सरकार का यह कदम महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ परिसर के लिए भूमि आवंटन योगी सरकार ने लखनऊ में अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) के परिसर की स्थापना के लिए कुल 2.3239 हेक्टेयर भूमि को नि:शुल्क प्रदान करने का प्रस्ताव पास किया। यह भूमि ग्राम चकौली, परगना बिजनौर, तहसील सरोजनी नगर, लखनऊ में स्थित है। जिलाधिकारी द्वारा इस भूमि का सर्किल रेट के आधार पर मूल्यांकन 9.29 करोड़ रुपये किया गया है। यह विश्वविद्यालय प्रतिवर्ष 2000 से 2500 छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करेगा और उन्हें अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाओं में दक्ष बनाएगा।

वेतन की मांग को लेकर संविदा बिजली कर्मचारियों का प्रदर्शन

संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में संविदा बिजली कर्मचारियों ने चौक डिवीजन के बिजली उपकेंद्र पर प्रदर्शन किया। घंटाघर, नादान महल, मेहताब बाग, विक्टोरिया पावर हाउस और मेडिकल कॉलेज समेत 5 उपकेंद्रों पर काम करने वाले कर्मचारियों ने वेतन न मिलने पर नाराजगी जताई। प्रदर्शन कर रहे बिजली कर्मचारी मनोज विश्वकर्मा ने कहा कि यह बहुत दुखद है कि दीपावली जैसे पर्व पर भी हमें वेतन नहीं मिला। हम तमाम बिजलीकर्मचारी दिवाली के मौके पर लोगों के घरों को रोशन कर रहे थे। मगर वेतन न मिलने से हमारे घर में अंधेरा था। पिछले दो महीने से वेतन की मांग को लेकर अधिकारियों के सामने गुहार लगा रहे हैं। मगर कोई सुनवाई नहीं हो रही है। दिवाली से पहले हमें आश्वासन मिला था कि सबको वेतन मिल जाएगा मगर नहीं मिला। वेतन न मिलने के कारण डेढ़ सौ कर्मचारी दिवाली का पर्व अपने परिवार के साथ नहीं मना पाए। कर्मचारियों ने बताया अधिकारी और सरकार में बैठे हुए लोग बार-बार आश्वासन देते हैं की सैलरी आ जाएगी। अवनी परिधि कंपनी के माध्यम से हम लोग नौकरी कर रहे थे। अब अधिकारी कह रहे हैं कि वह कंपनी भाग गई। नई कंपनी आई है उसे सब कर्मचारी अपने कागजात जमा कर दें उसके बाद सैलरी को लेकर चर्चा होगी। नई कंपनी के द्वारा यह कहा गया है कि सभी बिजली उपकेंद्र से 7 कर्मचारी हटाए जाएंगे।

लखनऊ के आयन ने अपोलो टायर्स के यूनाइटेड वी प्ले का ग्रैंड फिनाले जीता, प्रतिष्ठित मैनचेस्टर यूनाइटेड क्लब का दौरा करेंगे

संवाददाता

लखनऊ । लखनऊ के मोहम्मद अयान के लिए जीवन चुनौतियों से भरा रहा है, लेकिन वे फुटबॉल खिलाड़ी बनने के उसके सपने को नहीं डिगा पाए और अब वह प्रतिष्ठित फुटबॉल क्लब मैनचेस्टर यूनाइटेड के घरेलू मैदान, ओल्ड ट्रैफर्ड का दौरा करेंगे। महान फुटबॉल खिलाड़ी गैरी नेविल की उपस्थिति में चंडीगढ़ में मैनचेस्टर यूनाइटेड के सहयोग से अग्रणी टायर निर्माता अपोलो टायर्स द्वारा आयोजित श्यूनाइटेड वी प्ले के चौथे सीजन के ट्रायल के अंतिम दौर में जीत हासिल करने के बाद उन्हें यह मौका मिला है। यूनाइटेड वी प्ले (यूडब्ल्यूपी) के अब तक के सबसे बड़े सीजन में 18 शहरों के 15000 से अधिक उभरते भारतीय फुटबॉल खिलाड़ियों ने भाग लिया और चंडीगढ़ में एक भव्य समारोह में इसका समापन हुआ। अयान और चार अन्य फुटबॉल खिलाड़ी पीसी लालछुआनावमा (मिजोरम), श्रीजल किस्कू (ओडिशा), भक्त बहादुर परियार (नेपाल) और

चानसोन चौयथम (बैंकॉक) को अब जीवन में एक बार मैच डे जैसी रोमांचक गतिविधियों में भाग लेने के लिए ओल्ड ट्रैफर्ड जाने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा वे मैनचेस्टर यूनाइटेड सॉकर स्कूल के कोचों के साथ प्रशिक्षण सत्र में हिस्सा लेंगे और दिग्गजों से बातचीत करेंगे जोकि इस वर्ष के अंत में होगा। यूडब्ल्यूपी कार्यक्रम विभिन्न क्षेत्रों की युवा फुटबॉल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए जमीनी स्तर की फुटबॉल पहल है, जो उन्हें अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच प्रदान करती है, इसका उद्देश्य महत्वाकांक्षी फुटबॉलरों को खेलना जारी रखने के लिए प्रेरित करना और उन्हें वैश्विक प्रशिक्षण पद्धतियों से परिचित कराना है। अपोलो टायर्स लिमिटेड के कमर्सिअल, इंडिया और सार्क के उपाध्यक्ष, राजेश दहिया ने कहा, मैं आयन को उनकी उपलब्धि के लिए बधाई देता हूं क्योंकि वह अब प्रतिष्ठित ओल्ड ट्रैफर्ड स्टेडियम जाएंगे। यूनाइटेड वी प्ले कार्यक्रम को साल-दर-साल बड़ा और बेहतर होते देखना हमें बेहद खुशी देता है और खेल के दिग्गज गैरी नेविल की उपस्थिति के कारण यह समापन समारोह अतिरिक्त विशेष था। इस पहल के माध्यम से, जो अपने चौथे वर्ष में है, अपोलो टायर्स फुटबॉल के खेल को विकसित करने और युवा उभरती प्रतिभाओं को खुद को अभिव्यक्त करने में मदद करने के लिए प्रतिबद्ध है। अपोलो टायर्स इस कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए मैनचेस्टर यूनाइटेड को भी धन्यवाद देना चाहता है और योग्य विजेताओं को बधाई देता है। अयान मैनचेस्टर यूनाइटेड के दिग्गज क्रिस्टियानो रोनाल्डो का बहुत बड़ा प्रशंसक हैं और मिडफील्ड पोजीशन में खेलते हैं और उनका लक्ष्य अपने आदर्श की तरह फुटबॉल के ऊंचे स्तर तक पहुंचना है। उन्होंने कहा, मैंने हमेशा मैनचेस्टर जाने और ओल्ड ट्रैफर्ड और मैनचेस्टर यूनाइटेड का अनुभव करने का सपना देखा है। यह मेरा पसंदीदा क्लब है और मैं बचपन में रोनाल्डो को देखकर बड़ा हुआ हूं। वह हम सभी के लिए प्रेरणा हैं और यूनाइटेड एक दिग्गज क्लब है। 15,000 बच्चों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के बाद चयनित होना कठिन था लेकिन मैंने अपने खेल को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए हमेशा कड़ी मेहनत की है और भविष्य में भी ऐसा करना जारी रखूंगा। वह एलेजांद्रो गार्नाचो की ऊर्जा और कौशल की भी प्रशंसा करते हैं और ओल्ड ट्रैफर्ड में उनके सामने वंडरकिड को खेलते हुए देखने के लिए उत्साहित हैं। यूनाइटेड वी प्ले के चौथे संस्करण का शुभारंभ पिछले साल दिसंबर में कोलकाता में हुआ था, जहां पूर्व मैनचेस्टर यूनाइटेड और फ्रांसीसी फुटबॉलर लुइस साहा ने कार्यक्रम की शुरुआत की थी। वर्चुअल मैनचेस्टर यूनाइटेड सॉकर स्कूल प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से 100 से अधिक प्रशिक्षकों को शामिल किया गया, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षण और प्रशिक्षण विधियां कार्यक्रम में शामिल प्रत्येक फुटबॉलर तक पहुंचें। इसके अलावा, इस पहल का विस्तार एशिया प्रशांत और मध्य पूर्व क्षेत्रों जैसे काठमांडू, बैंकॉक, ढाका और दुबई जैसे शहरों में भी किया गया।